टे	पृष्ट
गुरू के न्मु न खड़ा	४०८
गुरू के सन्मु आन खड़ी	२८०
गुरू पै वार रही तन मन	३७६
गुरू मेरे प्रगटे जग में आय	८२
गुरू मोहिँ लेओ आज अपनाई	१२१
गुरू से मेरी प्रीत लगी री	२४१
चरन उर धारो राधाप्यारी	२७१
चरन गुरु घट धार रही	२९८
चरन गुरु जागी नई परतीत	२८६
चरन गुरु दिन २ उमंग	२५४
चरन गुरु दीन हुआ मन मोर	२८४
चरन गुरु निज हियरे धारे	२६९
चरन गुरु नित्त ा लाग	३८६
चरन गुरु निश्चय धारा री	३२५
चरन गुरु परसे हुई निहाल	२४१
चरन गुरु प्रीत बढ़ाय रही	३०७
चरन गुरु प्रेम बढ़ा भारी	२३१
चरन गुरु बढ़त हिये अनुराग	२३७
चरन गुरु बसे हिये में आय	२६५

टे	पृष्ठ
चरन गुरु मनुआँ लागा री	२६७
चरन गुरु हिये में भक्ति जगाय	४०६
चरन गुरु हुआ हिये बिस्वास	३४९
चरन में राधास्वामी जब आई	३७८
चरन राधास्वामी ध्याय रही	३६६
चेतरी पिया प्यारी सहेली	४
छिन २ मैं तुम्हरे आधारी	१२५
जगत का मेला देखा रंग	३६१
जगत तज गुरु चरनन में भाज	४०४
जगत में खोज किया बहु भाँत	४१०
जगत में बहु दिन बीत सिराने	१९३
जगत में भूल भरम भारी	७०
जगत सँग मत भूलो भाई	३२
जगत सँग मनुआँ रहत उदास	२९९
जग में पड़ा घोर ँधियारा	५३
जगा मेरा चरज भाग पार	२४८
जीव कुमत बस हुये बावरे	४१
जीव सब मोहे माया रंग	४१४
टेक गुरु बाँधो मी प्यारी	३०३

टे	पृष्ट

सूची पत्र बचनों का

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

॥ मंगलाचरण ॥

परम पुर्ष पूरन धनी
राधास्वामी नाम ॥
तिन के चरन पदम पर ।
कोट कोट परनाम ॥ १ ॥
जग जीवन को अति दुखी ।
देख दया उमगाय ॥
संत रूप औतार धर ।
जग में प्रगटे आय ॥ २ ॥
कुल मालिक दातार ।
कृपा सिंध गुरु रूप धर ॥
सुरत शब्द मत गाय ।
भेद दिया निज अधर घर ॥ ३ ॥
बड़ भागी वे जीव ।
चरन सरन जिन दृढ़ करी ॥

कर्म भर्म को छोड़ ।
प्रीत प्रतीत हिरदे धरी ॥ ४ ॥
उमँग सहित गुरु सेव ।
सत सँग कर तिरपत भए ॥
तन मन भेंट चढ़ाय ।
प्रेम दान गुरु से लिए ॥ ५ ॥
गुरु मूरत हिरदे बसी ।
देखें नित्त बिलास ॥
जगत बासना जार कर ।
पावें चरन निवास ॥ ६ ॥
प्रेम सहित नित गावहूँ ।
राधास्वामी नाम ॥
सुरत डोर चरनन लगी ।
बिसर गए सब काम ॥ ७ ॥
गुरु आरत कर मगन होय ।
छिन छिन प्रीत बढ़ाय ॥
मन को मोड़ा जगत से ।
सूरत शब्द लगाय ॥ ८ ॥
राधास्वामी दयाल दया करी ।
सब को लिया अपनाय ॥

...ब्द जहाज़ चढ़ाय कर।
दीना पार लगाय ॥ ९॥
भौजल गहिर गँभीर है।
खेवट संतगुरु पूर ॥
राधास्वामी चरनन ध्यान धर।
पहुँचे निज घर सूर ॥१०॥
बार बार बिनती करूँ।
बँदगी करूँ अनंत ॥
छिन छिन जाऊँ बलिहारियाँ।
राधास्वामी पूरे संत ॥११॥

चितावनी बचन पहिला

॥ शब्द १ ॥

सुरत क्यौं भूल रही।
अब चेत चलो स्वामी पास ॥१॥
हे मनुआ तुम सदा के संगी।
त्यागो जगत की आस ॥२॥
हे इन्द्रियन तुम भोग दिवानी।
क्यौं फँसो काल की फाँस ॥३।

जल्दी से ब सुख ा मोड़ो।
अंतर जब बिलास ॥ ४ ॥
जैसी बने तैसी करो ाई।
धर चरनन बिसवास ॥ ५ ॥
राधास्वामी दीन दयाला।
दे हैं अगम निवास ॥ ६ ॥
तब सुख साथ रहो घर अपने।
फिर होय न तन में बास ॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥

चेत री पिया प्यारी सहेली।
गुरु चरनन चित लाओ री ॥ १ ॥
उमँग सहित दरशन कर उनका।
फिर न मिले ऐसा दाओ री ॥ २ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़ाओ दिन दिन।
छिन छिन महिमा गाओ री ॥ ३ ॥
सोच बिचार कहा करे मन में।
लाओ पूरन भाओ री ॥ ४ ॥
गुरु का रूप बसे नैनन में।
राधास्वामी ध्याओ री ॥ ५ ॥

निर्मल नि चित होय तेरा ।
मन और सुरत चढ़ाओ री ॥ ६ ॥
को फोड़ धसो त्रिकुटी में ।
ानसरोवर न्हाओ री ॥ ७ ॥
भँवर गुफा की खिड़की खोलो ।
सत्तलोक धस जाओ री ॥ ८ ॥
लख गम दर्शन रके ।
राधास्वामी रन मावो री ॥ ९ ॥

॥ शब्द ३ ॥

निज रूप जो तू प्रेमी है ।
र जुगत जगत से हो न्यारा ॥
बिन मेहर गुरू नहीं काज सरे ।
सतगुरु हो जा निज प्यारा ॥ १ ॥
गुरू पल पल तेरी सार करें ।
करमों का काटें सिर भारा ॥
ौर दि दि तु पर दया करें ।
तेरी सुरत भौ पारा ॥ २ ॥
तब घट में दे बहार नई ।
जहाँ पचरंगी फुलवार खिली ॥

और जगमग जगमग जोत बली।
घंटा और शंख बजे न्यारा॥ ॥३॥
सुखमन में होय नल बंक धसी।
त्रिकुटी गुरु पद में जाय बसी॥
और ओंकार धुन संग रसी।
जहाँ गर्ज मेघ होय अति भारा॥४॥
वहाँ से भी आगे चटक चली।
धुन ररंकार में जाय पिली॥
हंसन सँग रलियाँ करत मिली।
जहाँ अमृत बरसे चौधारा॥५॥
महासुन्न गई चढ़ भँवर रही।
धुन सोहँग मुरली अधर लई॥
फिर सत्तलोक सत शब्द रली।
जहाँ बीन बजे धुन निज सारा॥ ६॥
वहाँ से भी आगे सुरत चली।
घर अलख अगम को निहार रही॥
फिर राधास्वामी चरन मिली।
और पाय गई प्रीतम प्यारा॥७॥

॥ शब्द ४ ॥

सखीरी तोहि लाज न आवे ।
मन सँग रही गठियाय ॥ १ ॥
परम पुर्ष राधास्वामी प्यारे ।
तिनको दिया बिसराय ॥ २ ॥
पुर्ष अंस तू धुर से आई ।
तिरलोकी में रही फँसाय ॥ ३ ॥
सुरत शब्द मारग ले गुरु से ।
उलट चलो घर धाय ॥ ४ ॥
शब्द शब्द पौढ़ी पर चढ़ कर ।
राधास्वामी चरन समाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

सखीरी क्यों देर लगाई ।
चटक चढ़ो नभ द्वार ॥ १ ॥
इस नगरी में तिमिर समाना ।
भूल भरम हर बार ॥ २ ॥
खोज री अंतर उजियारी ।
छोड़ चलो नौ द्वार ॥ ३ ॥

सहस ँवल चढ़ त्रिकुटी धाम्रो ।
भँवर गुफा सतलो निहार ॥ ४ ॥
लख गम के पार ि धारो ।
राधास्वामी चरन म्हार ॥ ५ ॥

॥ ब्द ६ ॥

क्या ोवे जग ँ नींद भरी ।
उठ जागो जल्दी भोर भई ॥ १ ॥
पंथी सब उठके राह लई ।
तू मंज़िल पनी बिसर गई ॥ २ ॥
सतगुरु खोज करो प्यारी ।
सँग उनके बाट चलो न्यारी ॥ ३ ॥
भौ सागर है गहिरा भारी ।
गुरु बिन को जाय सके पारी ॥ ४ ॥
भक्ती ी रीत सुनो प्यारी ।
गुरु चरनन प्रीत करो सारी ॥ ५ ॥
तज शय भरम रम जारी ।
तब सुरत अधर घर पग धारी ॥ ६ ॥
चढ़ गगन सिखर तन मन वारी ।
धुन बीन सुनी सत पद न्यारी ॥ ७ ॥

फिर अलख अगम जा परसा री।
राधास्वामी चरन पर बलिहारी ॥ ८ ॥

॥ शब्द ७ ॥

मेरी प्यारी सोहागिन नार।
पिया रस चाखो री ॥ १ ॥
चढ़ आओ अटारी माँहिं।
कोई नहिं रोके री ॥ २ ॥
तेरे घट में पुकारे यार।
क्यों तू सोवे री ॥ ३ ॥
मिल सतगुरु कर सिंगार।
पिया को भावे री ॥ ४ ॥
धुन बाजे पिया दरबार।
चुन चुन लाओ री ॥ ५ ॥
शब्दों की खिली फुलवार।
सेज सँवारो री ॥ ६ ॥
वहाँ पौढ़ो पिया सँग जाय।
तब सुख पावो री ॥ ७ ॥
राधास्वामी दिया सब साज।
उन गुन गावो री ॥ ८ ॥

॥ शब्द ८ ॥

हे मेरे प्यारे सज्जन ।
जग भूल निकारो ॥ १ ॥
सतगुरु को खोजो जल्दी ।
सतनाम सम्हारो ॥ २ ॥
कुल कुटुम्ब कोइ संगी नाहीं ।
धन सम्पत जारो ॥ ३ ॥
सुत अंस अकेली जावे ।
सब से होय न्यारो ॥ ४ ॥
यह देस तुम्हारा नाहीं ।
सुध घर की धारो ॥ ५ ॥
अब प्रीत करो सतगुरु से ।
तन मन धन वारो ॥ ६ ॥
चरनौं में सुरत लगावो ।
मद मोह काम सब टारो ॥ ७ ॥
गुरु समरथ दीन दयाला ।
तब देहैं दान कर प्यारो ॥ ८ ॥
तेरी सुरत अधर चढ़ जावे ।
और पियो अमी रस सारो ॥ ९ ॥

राधास्वामी गुन नित गावो ।
तन मन से होकर न्यारो ॥ १० ॥

॥ शब्द ९ ॥

सतगुरु आय दिया जग हेला ।
जागो रे मेरे प्यारे जागो ॥ १ ॥
काल शिकारी सग में ठाढ़ा ।
भागो रे मेरे प्यारे भागो ॥ २ ॥
गुरु स्वरूप तेरे घट में बसता ।
झाँको रे मेरे प्यारे झाँको ॥ ३ ॥
मान मनी तज गुरु चरनन में ।
लागो रे मेरे प्यारे लागो ॥ ४ ॥
जगत भाव भोगन ी आसा ।
त्यागो रे मेरे प्यारे त्यागो ॥ ५ ॥
नैन ँवल गुरु डगर पिया की ।
ताको रे मेरे प्यारे ताको ॥ ६ ॥
दृढ़ परतीत भरोस पिया ा ।
राखो रे मेरे प्यारे राखो ॥ ७ ॥
राधास्वामी २ दि न २ हिये से
भाखो रे मेरे प्यारे भाखो ॥ ८ ॥

॥ शब्द १० ॥

सखीरी मेरे मन बिच अचरज होय ।
अचरज चरज अचरज होय ॥१॥
साँचा मारग सुरत शब्द का ।
ो नहिँ माने कोय ॥२॥
मरथ तगुरु दीन दयाला ।
राधास्वामी प्रगटे सोय ॥३॥
प्रीत प्रतीत चरन नहिँ धारें ।
भरम रहे सब लोय ॥४॥
नम मरन चौरासी फेरा ।
भुगत रहे सब ोय ॥ ५ ॥
करम भरम सँग हुए बावरे ।
जनम अकारथ खोय ॥६॥
राधास्वामी चरन धार हिये अंतर ।
तब तेरा कारज होय ॥७॥

॥ शब्द ११ ॥

मेरे गुरु दयाल उदार की ।
गत मत नहीँ कोइ जानता ॥
कासे हूँ यह भेद मैं ।
चित से नहीँ कोइ मानता ॥१॥

जग में अँधेरा घोर है ।
माया का भारी शोर है ॥
काल और करम भर ज़ोर है ।
भरमों में जीव भरमावता ॥२॥
तीरथ बरत में भरमते ।
मंदिर में मूरत पूजते ।
पोथी किताबें ढूँढ़ते ।
निज भेद नहिं कोइ पावता ॥३॥
कोइ मौन साधें जप करें ।
कोइ पंच अगिन धूनी तपें
कोइ पाठ होम और जग करें ।
कोइ ब्रम्ह ज्ञान सुनावता ॥४॥
कोइ देवी देवा गावते ।
कोइ राम कृष्ण धियावते ॥
कोइ प्रेत भूत मनावते ।
कोइ गंगा जमना न्हावता ॥ ५ ॥
कोइ दान पुन्न करावते ।
ब्राह्मन भेख खिलावते ॥
कोइ भजन गाय सुनावते ।
कोइ ध्यान मन में लावता ॥ ६ ॥

यह सब जो पर्ा ली चाल हैं ।
काल और करम के जाल हैं ॥
इन में पड़े बेहाल हैं ।
सब जीव धोखा खावता ॥ ७ ॥
जो चाहे तू उद्धार को ।
सच्चे गुरू को खोज लो ॥
कर प्रीत और परतीत तू ।
फिर चरन सरन समावता ॥ ८ ॥
राधास्वामी नाम सम्हार ले ।
गुरु रूप हिरदे धार ले ॥
सुत शब्द मारग सार ले ।
गुरु महिमा निस दिन गावता ॥ ९ ॥
सतसंग कर चित चेत कर ।
गुरु प्रीत कर हिये हेत र ॥
मन काल मारो रेत कर ।
सुत शब्द माहिँ लगावता ॥ १० ।
गुरु तुझ पै मेहर दया रें ।
पल पल तेरी रक्षा रें ॥
मन उलट कर सीधा करें ।
फिर गगन माहीं धावता ॥ ११ ॥

नभ माहिँ दर्शन जोत कर ।
त्रिकुटी चरन गुरु परस कर ॥
सुन माँहि सारँग साज कर ।
बेनी मैं जाय अन्हावता ॥ १२ ॥
वहाँ से सुरत आगे चली ।
सोहंग मुरली धुन सुनी ॥
सतपुर्ष के चरनन रली ।
धुन सार शब्द सुनावता ॥ १३ ॥
मन थाल लीन सजाय कर ।
और सुरत बाती बनाय कर ॥
फिर शब्द जोत जगाय कर ।
भर प्रेम आरत गावता ॥ १४ ॥
दृढ़ प्रीत बस्तर साज कर ।
और भाव भक्ती भोग धर ॥
मन चित से अज्ञा मान कर ।
प्यारे सतगुरू को रिझावता ॥ १५ ॥
फिर अलख अगम को धाइया ।
घर आदि अंत जो पाइया ॥
राधास्वामी चरन समाइया ।
धुर धाम संत कहावता ॥ १६ ॥

गुरु महिमा ांकर गाइया ।
राधास्वामी मेहर कराइया ॥
निज देस अपना पाइया ।
धन धन्य भाग सरावता ॥ १७ ॥

॥ शब्द १२ ॥

जनी चेतो री ।
तेरे घट में पुकारे यार ॥ १ ॥
तू तो भूल रही जग माहिँ ।
कर सतगुरु से प्यार ॥ २ ॥
क्यों जग ँ दिन बाद गँवावे ।
घट में कर दीदार ॥ ३ ॥
धर्म में क्यों तू पचती ।
था उठावत भार ॥ ४ ॥
सच्चे यार से प्यार न कीना ।
ुल ुटुँब सँग रहती ख़्वार ॥ ५ ॥
मान मनी तज घट में बैठो ।
सुनो शब्द धुन सार ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन पकड़ के ।
पहुँचो निज घर बार ॥ ७ ॥

॥ शब्द १३ ॥

त्याग रे मन जग की आसा ।
छोड़ रे मन भोग बिलासा ॥ १ ॥
क्यौं फँसे काल ी फाँसा ।
क्यौं सहे रोग जम त्रासा ॥ २ ॥
फिर पावे जोनी बासा ।
माया का रहे नित दासा ॥ ३ ॥
अब जग से होय उदासा ।
कर सतगुरु चरन निवासा ॥ ४ ॥
सतगुरु की महिमा भारी ।
छिन में तोहि लेहिँ उबारी ॥ ५ ॥
सतसँग नित उनका करना ।
मन चित से नाम सुमिरना ॥ ६ ॥
गुरु सहज जोग बतलावें ।
तेरे घट में शब्द सुनावें ॥ ७ ॥
यह मारग है निज घर का ।
कोइ सुरत सनेही परखा ॥ ८ ॥
मैं भाग सराहूँ अपना ।
गुरु किया मोहिँ निज अपना ॥ ९ ॥

कर दया सार बतलाया ।
मन सूरत शब्द लगाया ॥१०॥
अब आरत उनकी गाऊँ ।
चरनन में प्रेम बढ़ाऊँ ॥११॥
गुरु मेहर प्रसादी पाऊँ ।
राधास्वामी नाम धियाऊँ ॥ १२ ॥

॥ शब्द १४ ॥

सुरत भरम रही औघट घाट ।
सतगुरु मिलें तौ पावे बाट ॥ १॥
निर्मल होय चढ़े आकाशा ।
देखे जाय बिमल परकाशा ॥ २ ॥
भाग जगे मैं सतगुरु पाये ।
मेहर करी मोहिं लिया अपनाये ॥३॥
प्रीत प्रतीत हिये में जागी ।
सुरत हुई चरनन अनुरागी ॥ ४ ॥
भूल भरम सब मन से भागा ।
भोग बिलास सभी हम त्यागा ॥ ५ ॥
रसक रसक सतसंग रस लेना ।
गुरु सेवा मैं तन मन देना ॥ ६ ॥

प्रीत सहित गुरु दर्शन करना ।
रूप अनूप हिये में धरना ॥ ७ ॥
प्रेम अंग ले आरत करना ।
राधास्वामी नाम सुमिरना ॥ ८ ॥

॥ शब्द १५ ॥

अरे मन सोच समझ गुरु बैन ।
जगत में नहिं पावे सुख चैन ॥ १ ॥
फिरे मद माता इंद्रियन साथ ।
चाह में भोगन के दिन रात ॥ २ ॥
दुक्ख सुख भोगत बारम्बार ।
समझ अब मान कहन गुरु सार ॥३॥
करो अब सतसँग धर कर प्यार ।
मान मद करम भरम को जार ॥ ४ ॥
नाम का सुमिरन करो बनाय ।
रूप गुरु हर दम हिये बसाय ॥५॥
मेहर गुरु करिहै तेरा काज ।
सुरत मन पावें अद्भुत साज ॥६॥
गगन चढ़ सुने शब्द की गाज ।
तिरकुटी जावे पावे राज ॥ ७ ॥

वहाँ से पहुँचे सतगुरु देस ।
धरे जहाँ सूरत हंसा भेस ॥ ८ ॥
प्रेम ँग आरत रे बनाय ।
चरन में राधास्वामी जाय समाय ॥ ६ ॥

॥ शब्द १६ ॥

तन नगरी में खेले मनुआँ ।
गुरु मिलें चढ़ै गढ़ धुनुआँ ॥ १ ॥
या नगरी में ुख नहिं चैना ।
गुरु चरन निर हिये नैना ॥ २ ॥
मन इंद्री नित भरमाई ।
बिन शब्द राह नहिं पाई ॥ ३ ॥
काल और रम दुख दाई ।
गुरु मेहर बिना सुख नाहीं ॥ ४ ॥
मेरा बल पेश न जाई ।
गुरु किरपा लेहिं बचाई ॥ ५ ॥
माया ने फंदे डाले ।
गुरु बिन मोहि ौन सम्हाले ॥ ६ ॥
यह जगत महा दुखदाई ।
मन बुध चित गये हेराई ॥ ७ ॥

गुरु चरनन ओट निबेड़ा ।
गह नाम बाँध अब बेड़ा ॥ ८ ॥
भौ सागर उतरै पारा ।
होय जन्म मरन से न्यारा ॥ ९ ॥
गुरु दया री ब भारी ।
सतसँग में लीन लगारी ॥ १० ॥
कर किरपा बचन सुनावैं ।
मेरे घट का तिमिर हटावैं ॥ ११ ॥
नित प्रीत प्रतीत बढ़ावैं ।
मन सूरत अधर चढ़ावैं ॥ १२ ॥
मेरे मन में निश्चय भारी ।
एक दिन मोहिं लेहैं उबारी ॥ १३ ॥
बिन राधास्वामी ौर न जानूँ ।
बिन शब्द जुगत नहिं मानूँ ॥ १४ ॥
स्वामी चरनन पूजा धारूँ ।
तन मन धन उन पर वारूँ ॥ १५ ॥
आरत की उमँग उठाई ।
सामाँ सब ले कर आई ॥ १६ ॥
गुरु सन्मुख आन धराई ।
हंसन मिल आरत गाई ॥ १७ ॥

राधास्वामी मेहर कराई ।
मोहि अधम लीन अपनाई ॥ १८ ॥

———:*o*:———

॥ शब्द १७ ॥

भूल भरम जग में अति भारी ।
सतसँग महिमा कोइ न बिचारी ॥ १ ॥
मन चंचल जिव नाच नचाई ।
फिर फिर भोगन में भरमाई ॥ २ ॥
आस भरोस धरे माया में ।
फूले बिगसे इस काया में ॥ ३ ॥
अँत समय की सुध सब भूला ।
माया रँग देख बहु फूला ॥ ४ ॥
सतगुरु की परतीत न माने ।
उनकी गत मत नेक न जाने ॥ ५ ॥
मैं अति दीन अधीन अजाना ।
माया सँग रहा लिपटाना ॥ ६ ॥
संतन की गत अगम अपारा ।
सुरत शब्द मत सार का सारा ॥ ७ ॥
राधास्वामी दया दृष्ट से देखा ।
ज्यों त्यों मोहिं चरनन में खैंचा ॥ ८ ॥

सत सँग मैं मोहिं लीन लगाई ।
दर्शन दे घट प्रीत बढ़ाई ॥ ९ ॥
हुई प्रतीत उमँग हिये जागी ।
सुरत हुई चरनन अनुरागी ॥ १० ॥
भक्ति पौद जो गुरू ने लगाई ।
मन माली सींचत नित आई ॥ ११ ॥
रंग बरंग फूल चुन लावत ।
हार बना सतगुरु पहिनावत ॥१२॥
उमँग सहित गुरु आरत साजी ।
घंटा शंख शब्द धुन गाजी ॥ १३ ॥
कँवल कियारी घट मैं खिलानी ।
गगन शिखर चढ़ चन्द्र दिखानी ॥१४॥
सोहंग मुरली गुफा सुनाई ।
सत्तलोक धुन बीन बजाई ॥ १५ ॥
अलख अगम का देख पसारा ।
राधास्वामी धाम निहारा ॥ १६ ॥
चरन सरन राधास्वामी की पाई ।
भाग अपना लिया जगाई ॥ १७ ॥
जगत आस अब सभी बिसारूँ ।
राधास्वामी नाम हिये बिच धारूँ ॥१८॥

॥ शब्द १८ ॥

सतगुरु सँत महा उपकारी ।
जगत उबारन दया बिचारी ॥ १ ॥
सत्तलोक से चल कर आये ।
निज घर का उन भेद सुनाये ॥ २ ॥
मानो रे मानो जीव अभागी ।
राधास्वामी करिहैं सभागी ॥ ३ ॥
माया जाल बिछाया भारी ।
सिर पर बैठा काल शिकारी ॥ ४ ॥
कोइ नहिँ बाचे सब को मारी ।
याते मैं अब कहूँ पुकारी ॥ ५ ॥
धाओ रे दौड़ो पकड़ो चरना ।
जैसे बने तैसे आओ रे सरना ॥ ६ ॥
चल चल आओ सतगुरु सरना ।
चेत चलो त्यागो जग सुपना ॥ ७ ॥
संशय भरम न मन मैं करना ।
प्रीत प्रतीत चरन मैं धरना ॥ ८ ॥
फिर औसर नहिँ पाओ रे ऐसा ।
अब कारज करो जैसा रे तैसा ॥ ९ ॥

तीरथ मूरत अधिक भुलावैं ।
जप तप संजम बहु भरमावैं ॥ १० ॥
सतगुरु मिलैं तो भेद जनावैं ।
घट अंतर घर गैल लखावैं ॥ ११ ॥
छोड़ो करम भरम पाखंडा ।
सुरत चढ़ा फोड़ो ब्रह्मंडा ॥ १२ ॥
सतसँग कर गुरु सेवा धारो ।
दृष्टि जोड़ उन नैन निहारो १३ ॥
राधास्वामी नाम उचारो ।
मन और सुरत चरन पर वारो ॥ १४ ॥
सहस कँवल चढ़ घंट बजाओ ।
जोत निरंजन दर्शन पाओ ॥ १५ ॥
बँक नाल होय त्रिकुटी धाओ ।
लाल रंग सूरज दरसाओ ॥ १६ ॥
गुरुपद परस मगन हो जाओ ।
धुन मिरदँग और गरज सुनाओ ॥ १७ ॥
सुन्न सरोवर कर अशनाना ।
हंसन साथ मिलाप बढ़ाना ॥ १८ ॥
महासुन्न पर करो चढ़ाई ।
भँवर गुफा मुरली धुन पाई ॥ १९ ॥

सेत सूर नूर दिखाई ।
तिस ागे तपुर दरसाई ॥ २० ॥
सत्त नाम तपुरुष पारा ।
बीन बजे जहाँ धुन निज सारा ॥ २१ ॥
अलख म के पार सिधारी ।
राधास्वामी धाम निहारी ॥ २२ ॥
प्रेम बिला जहाँ ति भारी ।
ारत राधास्वामी निस दिन धारी ॥२३॥
धूम धाम ि होत सवाई ।
आनँद मंगल दिन प्रति गाई ॥ २४ ॥
महिमा धाम हाँ लग गाऊँ ।
अचरज चरज चरज ठाऊँ ॥२५॥
सोभा वहाँ की कह सुनाऊँ ।
राधास्वामी बि पर बल २ जाऊँ ॥२६॥
ऐसा देश रचा राधा ामी ।
निज भक्तन को रैं बिसरामी ॥ २७ ॥

—:o:—

॥ शब्द १८ ॥

यह जग बीता जाय री ।
सोचो समझो सयानी ॥ १ ॥

दिना चार का खेल यह ।
क्या मान गुमानी ॥ २ ॥
बड़े बड़े यहाँ हो गए ।
नहिँ नाम निशानी ॥ ३ ॥
यह माया सँग ना चले ।
क्या भूल भुलानी ॥ ४ ॥
जल्दी से अब चेत र ।
गुरु खोज सुजानी ॥ ५ ॥
जगत भोग की आस तज ।
सत संग समानी ॥ ६ ॥
शब्द भेद ले प्रीत से ।
धुन माँहि लगानी ॥ ७ ॥
बिना शब्द उद्धार नहिँ ।
यह निश्चय जानी ॥ ८ ॥
चरन शरन गुरु दृढ़ करो ।
तो लगे ठिकानी ॥ ९ ॥
राधास्वामी नाम भज ।
तेरी होय न हानी ॥ १० ॥

॥ शब्द २० ॥

कोई मझै न गुरु ी बात को ।
ऐसा जगत नाड़ी ॥१॥
भोगन में जिव फँस रहे ।
सँग म ँ खिलाड़ी ॥२॥
सतगुरु बचन न मानते ।
भय भाव बिसारी ॥३॥
सतसँग में नहिं चेतते ।
माया लागी प्यारी ॥४॥
राधास्वामी किरपा धार के ।
जीव लेहैं म्हारी ॥५॥
र्म जाल को काट कर ।
भौ पार उतारी ॥६॥
सुरत शब्द ी राह से ।
सत लोक सिधारी ॥७॥
मर जर घर पहुँच कर ।
सुख भोगे भारी ॥८॥
राधास्वामी भाग जगाइया ।
तन मन धन वारी ॥९॥

बार बार परनाम कर ।
छिन छिन बलिहारी ॥ १० ॥

॥ शब्द २१ ॥

भूल हुई या जग में भारी ।
सुद्ध निज घर की तज डारी ॥ १ ॥
कुटँब सँग पचत रहे दिन रात ।
सँत की सुने न चित दे बात ॥ २ ॥
लोक त्रिय डाला घेरा काल ।
कोई नहिँ खोजै संत दयाल ॥ ३ ॥
परम पुर्ष राधास्वामी जग आए ।
दया कर जीवन चेताए ॥ ४ ॥
रहा मैं नीच अधम नाकार ।
मेहर कर लीन्हा मोहिँ सम्हार ॥ ५ ॥
दिया मोहिँ निज घर का संदेश ।
किया मोहिँ सुरत शब्द उपदेश ॥ ६ ॥
सुरत मन जोड़ूँ धुन के संग ।
हिये मैं चटके सतसँग रंग ॥ ७ ॥
धरो मन गुरु चरनन परतीत ।
सत्त कर धारो भगती रीत ॥ ८ ॥

काल का लो झकझोल बचाय ।
चरन में जिस दिन सुरत समाय ॥९॥
कहूँ क्या मन मेरा नाकार ।
चेत कर नहिं चलता गुरु लार ॥१०॥
भोग में जाता नित्त भुलाय ।
पदारथ माया संग लुभाय ॥ ११ ॥
करूँ मैं बिनती दोउ कर जोर ।
माफ़ करो भूल चूक अब मोर ॥ १२ ॥
चरन में लीजे मोहिं लगाय ।
नाम राधास्वामी नित्त जपाय ॥१३॥
हिये में बख़्शो दृढ़ परतीत ।
चरन में दीजे गहिरी प्रीत ॥ १४॥
नित्त गुरु आरत करूँ सम्हार ।
चरन राधास्वामी हिरदे धार ॥ १५ ॥
दया राधास्वामी कीजे पूर ।
रहूँ मैं चरन सरन की धूर ॥ १६ ॥
भजन और सुमिरन नित बनि आय।
रूप राधास्वामी नित्त धियाय ॥१७॥

इष्ट बहु देवी देव बँधाय।
नहीं फल पाया रहे पछताय ॥ ४ ॥
प्रीत जिन सतगुरु की धारी।
वही जन उतरे भौ पारी ॥ ५ ॥
लिया मैं तासे यही बिचार।
करूँ गुरु भक्ती जाऊँ पार ॥ ६ ॥
चरन में नित्त बढ़ाऊँ प्रीत।
हिये में धारूँ भक्ती रीत ॥ ७ ॥
चेत कर नित सतसँग करता।
समझ कर बचन चित्त धरता ॥ ८ ॥
सेव गुरु प्रेम सहित धारूँ।
गुरु बल काल करम जारूँ ॥ ९ ॥
ध्यान गुरु चरनन हिये बसाय।
रूप गुरु निरखूँ दृष्ट जमाय ॥ १० ॥
भजन कर सुनूँ शब्द झनकार।
झाँक गुरु दर्शन जाऊँ पार ॥ ११ ॥
हुई मोपै गुरु की दया बिशेष।
भेद मोहिं दीन्हा सतगुरु देश ॥ १२ ॥
रहूँ मैं नित नित नाम सम्हार।
अमीं रस पीती रहुँ हुशियार ॥ १३ ॥

॥ शब्द २२ ॥

राधास्वामी गुरु समरत्थ ।
चरन लागो री ॥ १ ॥
यह झूँठा है संसार ।
जल्दी त्यागो री ॥ २ ॥
गुरु शोभा बरनी न जाय ।
दर्शन ताको री ॥ ३ ॥
तू सोय रही बेहोश ।
अब ही जागो री ॥ ४ ॥
तेरे घट में बाजे शब्द ।
धुन रस पागो री ॥ ५ ॥
राधास्वामी टेरत तोहि ।
सुन धुन भागो री ॥ ६ ॥

॥ शब्द २३ ॥

जगत सँग मत भूलो भाई ।
संग नहिँ तुम्हरे कुछ जाई ॥ १ ॥
खोल कर दृष्टी दे बिचार ।
फिरत जग थोथी और सार ॥ २ ॥
करम कर कर जिव बहु हारे ।
गए नहिँ पार रहे वारे ॥ ३ ॥

॥ शब्द २२ ॥

राधास्वामी गुरु समरत्थ ।
　　चरनन लागो री ॥ १ ॥

यह झूँठा है संसार ।
　　जल्दी त्यागो री ॥ २ ॥

गुरु शोभा बरनी न जाय ।
　　दर्शन ता ो री ॥ ३ ॥

तू ोय रही बे हो ।
　　अब ही जागो री ॥ ४ ॥

तेरे घट में बाजे शब्द ।
　　धुन रस पागो री ॥ ५ ॥

राधास्वामी टेरत तोहि ।
　　न धुन भागो री ॥ ६ ॥

॥ शब्द २३ ॥

जगत सँग मत भूलो भाई ।
संग नहिँ तुम्हरे कुछ जाई ॥ १ ॥

ोल कर दृष्टी देख विचार ।
ि रत जग थोथी ौर ार ॥ २ ॥

रम कर कर जिव बहु हारे ।
गए नहिँ पार रहे वारे ॥ ३ ॥

इष्ट बहु देवी देव बँधाय ।
नहीँ फल पाया रहे प ताय ॥ ४ ॥

प्रीत जिन सतगुरु की धारी ।
वही जन उतरे भौ पारी ॥ ५ ॥

लिया मैं तासे यही बिचार ।
करूँ गुरु भक्ती जाऊँ पार ॥ ६ ॥

चरन मैं नित्त बढ़ाऊँ प्रीत ।
हिये मैं धारूँ भ ी रीत ॥ ७ ॥

चेत कर नित सतसँग करता ।
समझ कर बचन चित्त धरता ॥ ८ ॥
सेव गुरु प्रेम सहित धारूँ ।
गुरू बल काल करम जारूँ ॥ ९ ॥
ध्यान गुरु चरनन हिये बसाय ।
रूप गुरु निरखूँ दृष्टि जमाय ॥ १० ॥
भजन कर सुनूँ शब्द झनकार ।
झाँक गुरु दर्शन जाऊँ धार ॥ ११ ॥
हुई मोपै गुरु की दया बिशेष ।
भेद मोहिं दीन्हा सतगुरु देश ॥ १२ ॥
रहूँ मैं नित नित नाम सम्हार ।
अमीरस पीती रहुँ हुशियार ॥ १३ ॥
करूँ मैं आरत उमँग उमंग ।
धार कर हिय में राधास्वामी रंग ॥ १४ ॥
किया राधास्वामी कारज पूर ।
दिखाया राधास्वामी अपना नूर ॥ १५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

रो जुगत ारी घर के लन. ी ॥टे ॥
जगत भाव तज शब्द म्हालो ।
यह मारग है स्वामी ि न की ॥ १ ॥
जोड़ दृष्टि और मोड़ सुर ो ।
यही जुगत न ा दलन की ॥ २ ॥
जो तन मन धन ाि राते ।
सो लई मत चौरासी ी ॥ ३ ॥
हाँ त भट ो मूल भ ँ ।
जतन रो भौसागर तर की ॥ ४ ॥
चरन त ो ौर ब न म्हा ो ।
धार धारना ामी र ी ॥ ५ ॥
प्रेम जगाऊँ उमँग बढ़ाऊँ ।
ारत धारूँ जि प्यारे ी ॥ ६ ॥

इष्ट बहु देवी देव बँधाय।
नहीं फल पाया रहे पछताय ॥ ४ ॥
प्रीत जिन सतगुरू की धारी।
वही जन उतरे भौ पारी ॥ ५ ॥
लिया मैं तासे यही बिचार ।
करूँ गुरु भक्ती जाऊँ पार ॥ ६ ॥
चरन में नित्त बढ़ाऊँ प्रीत।
हिये में धारूँ भक्ती रीत ॥ ७ ॥
चेत कर नित सतसँग करता ।
समझ कर बचन चित्त धरता ॥ ८ ॥
सेव गुरु प्रेम सहित धारूँ ।
गुरू बल काल करम जारूँ ॥ ९ ॥
ध्यान गुरु चरनन हिये बसाय ।
रूप गुरु निरखूँ दृष्टि जमाय ॥ १० ॥
भजन कर सुनूँ शब्द झनकार ।
झाँक गुरु दर्शन जाऊँ पार ॥ ११ ॥
हुई मोपे गुरु की दया बिशेष ।
भेद मोहिं दीन्हा सतगुरु देश ॥ १२ ॥
रहूँ मैं नित नित नाम सम्हार ।
अमीं रस पीती रहुँ हुशियार ॥ १३ ॥

करूँ मैं आरत उमंग उमंग ।
धार कर हिय में राधास्वामी रंग ॥१४॥
किया राधास्वामी कारज पूर ।
दिखाया राधास्वामी अपना नूर ॥१५॥

॥ शब्द २४ ॥

करो जुगत प्यारी घर के चलनकी ॥ टेक॥
जगत भाव तज शब्द सम्हालो ।
यह मारग है स्वामी मिलन की ॥ १ ॥
जोड़ दृष्टि और मोड़ सुरत को ।
यही जुगत मन माया दलन की ॥ २ ॥
जो तन मन धन कामिन राते ।
सो लई मत चौरासी चलन की ॥ ३ ॥
कहाँ तक भटको भूल भर्म में ।
जतन करो भौ सागर तरन की ॥ ४ ॥
चरन तको और बचन सम्हालो ।
धार धारना स्वामी सरन की ॥ ५ ॥
प्रेम जगाऊँ उमँग बढ़ाऊँ ।
आरत धारूँ जिय प्यारे सजन की ॥६॥

नित गुन गाऊँ भाग सराहूँ ।
मैं हुई दासी राधास्वामी चरन री॥७॥

॥ शब्द २५ ॥

आज ही लो नर जन्म सम्हार ।
खोज गुरु धर चरनन में प्यार ॥ १ ॥
सोच मन उमर जाय बीती ।
सीख गुरु से सत सँग रीती ॥ २ ॥
समझ पिछली को दे तू त्याग ।
चेत कर गुरु सतसँग में जाग ॥ ३ ॥
खोय मत बृथा वक्त अपना ।
नाम राधास्वामी छिन २ जपना ॥ ४ ॥
मान मन का सब तोड़ो ।
सुरत मन चरनन में जोड़ो ॥ ५ ॥
जगत जीवों से दिन छिन भाग ।
पिरेमी जन सँग गाओ राग ॥ ६ ॥
चरन गुरु धारो दृढ़ परतीत ।
हिये में पालो छिन छिन प्रीत ॥ ७ ॥
सहज तब होवे जिव निस्तार ।
निरख ले घट में मोक्ष दुवार ॥ ८ ॥

शब्द धुन सुनता चल घट माँहि ।
जोत उजियारा लख नभ माँहि ॥ ९ ॥
गगन चढ़ करो गुरू का संग ।
बाज रही जहँ नित धुन मिरदंग ॥१०॥
सुन्न में जाय करो बिसराम ।
करो तुम अब के इतना काम ॥ ११ ॥
मेहर राधास्वामी ले कर संग ।
गाओ गुरु आरत उमँग उमंग ॥ १२ ॥

॥ शब्द २६ ॥

सजनी चेतो री ।
क्यों खोये जनम बरबाद ॥ १ ॥
इस नगरी में काल बसेरा ।
खोज दयाल पद आदि ॥ २ ॥
बिन सतगुरु तेरा काज न सरिहै ।
नित उन चरन अराध ॥ ३ ॥
दया मेहर से भेद बतावें ।
काटें काल उपाध ॥ ४ ॥
डोरी शब्द पकड़ घट जाओ ।
मन और सूरत साध ॥ ५ ॥

ेम अंग ले चढ़ो गगनपुर ।
सुन ले अनहद नाद ॥ ६ ॥
ुन्न शिखर चढ़ भँवरगुफा तक ।
सत्त शब्द धुन साध ॥ ७ ॥
राधास्वामी धाम अजब गत ।
वोही सब का निज आदि ॥ ८ ॥

॥ शब्द २७ ॥

अरे मन भूल रहा जग माँहि ।
पकड़ता क्यों नहिं सतगुरु बाँह ॥ १ ॥
भरमता निस दिन भोगन लार ।
मान धन इस्त्री संग पियार ॥ २ ॥
मोह में जग के रहा भरमाय ।
लोभ और काम संग लिपटाय ॥ ३ ॥
सार नर देही नहिं जानी ।
पशू सम बरते अज्ञानी ॥ ४ ॥
ख़ौफ़ मालिक का हिय नहिं लाय ।
गया अब जम के हाथ बिकाय ॥ ५ ॥
मौत की याद बिसार रहा ।
जगत को सत कर मान रहा ॥ ६ ॥

न सुनता मूरख गुरू की बात।
बुद्धि मैली सँग गोते खात ॥ ७ ॥
न छोड़े मन की कुटलाई ।
गुरू सँग करता चतुराई ॥ ८ ॥
गुरू समझावैं बारम्बार ।
शब्द गुरू धारो हिय पियार ॥ ९ ॥
होत तेरे घट मैं धुन हरदम।
सुरत से सुनो चित्त कर सम ॥ १० ॥
धार यह सुन घर से आती ।
अमीँरस बरषत दिन राती ॥ ११ ॥
पकड़ कर चढ़ो सुन्न दस द्वार ।
वहाँ से सत पद धरो पियार ॥ १२ ॥
निरख सतपुर मैं सतपुर्ष रूप ।
अलख और अगम लखो कुलभूप ॥ १३ ॥
परे लख राधास्वामी पुरुष अनाम।
वहाँ है संतन का निज धाम ॥ १४ ॥
होय तब कारज तेरा पूर ।
काल और महा काल रहैं झूर ॥ १५ ॥
भेद यह गावैं गुरू दयाल ।
मेहर से तुझ को करैं निहाल ॥ १६ ॥

न माने भाग हीन उन बात।
भरम और संसय सँग भरमात॥ १७ ॥
फँसा मन माया की फाँसी।
कुमत ने डाली हिय गाँसी॥ १८ ॥
रहा फिर हौं मैं संग बँधाय।
प्रीत गुरु प्रेमी सँग नहिं लाय॥ १९ ॥
नीच मन होय न साँचा दीन।
मान मद हिरदे में भर लीन॥ २० ॥
कहो कस छूटैं ऐसे जीव।
प्रेम बन कस पावैं सच पीव॥ २२ ॥
काल की खावैं निस दिन मार।
रोग और सोग संग बीमार॥ २१ ॥
करैं जो राधास्वामी अपनी मेहर।
हटावैं काल कर्म का क़हर॥ २३ ॥
सरन में ज्यौं त्यौं कर लावैं।
सुरत मन तब धुन रस पावैं॥ २४ ॥
बने कोइ दिन में तब इन काज।
प्रेम का पावैं अद्भुत साज॥ २५ ॥
मेहर राधास्वामी बिन कुछ नहिं होय।
चरन में उनके सुरत समोय॥ २६ ॥

भजो नित राधास्वामी नाम दयाल ।
हौंय तब नरबल मन और काल ॥२७॥
धीर गह भक्त भजन करना ।
रूप राधास्वामी हिय धरना ॥ २८ ॥
बढ़ाना नत चरनन में प्रीत ।
पकाना घट में गुरु परतीत ॥ २९ ॥
बने जब डौल करो सतसंग ।
रो तन मन से सेव उमंग ॥ ३० ॥
लगे तब तुम्हरा थल बेड़ा ।
चरन राधास्वामी हुय हेरा ॥ ३१ ॥
होश कर चेतो अब तन में ।
सरन गहो राधास्वामी अब मन में ॥३२॥
नहीं तो भरमो चौरासी ।
हो तुम फर फिर जम फाँसी ॥३३॥
भूल और ग़फ़लत अब छोड़ो ।
चरन में राधास्वामी मन जोड़ो ॥३४॥
समझ यह दीन्ही खोल सुनाय ।
कोई बड़ भागी माने आय ॥ ३५ ॥
मेहर राधास्वामी की पावे ।
जतन कर निज घर को जावे ॥ ३६ ॥

हुआ यह निज उपदे तमाम ।
गाऊँ मैं दि न दि राधास्वामी न ॥३७॥

॥ शब्द २८ ॥

जीव कुमत हुए बावरे ।
परमारथ नहिँ जान ॥
करम धरम सँग भरमत डोलैं ।
लगे न ठौर ठिकान ॥
हुआ अति परबल कराल ।
बिछाया जग मैं माया ाल ॥ १ ॥
कोइ तीरथ कोइ बरत में ।
मैं धरैं गुमान ॥
कोइ जप तप संजम अटकें ।
मिला न नाम नि ान ।
हुए सब माया के ीन ।
खोज निज घर ाेइ नहिँ ीन ॥२॥
कोइ वि मानी होते ।
थोथा करैं बिचार ॥
कोइ कोइ ध्यान मानसी लावैं ।
मिला न घट दीदार ॥

उमर सब बिरथाही खोते ।
मैल मन का नहिं धोते ॥ ३ ॥
जो कोइ संत चरन चित लावे ।
रे गुरूसँग प्यार ॥
सुरत शब्द की करनी करके ।
पहुँचे निज घर बार ॥
दरस राधास्वामी का पावे ।
उलट फिर जग में नहिं आवे ॥ ४ ॥

बचन दूसरा

बरनन हाल मन और इंद्रियों के बिकारों ा ौर प्रार्थना और हुक्म

॥ शब्द १ ॥

सखी री मैं कैसी रूँ ।
मेरा मन नहिं ावे हाथ ॥ १ ॥
सतसँग करे बचन नहिं धारे ।
संशय भरम रहे साथ ॥ २ ॥

भजन करूँ तो चित नहिं ठहरे।
तन मन अति अकुलात ॥ ३ ॥
सुमिरन करूँ तो धिक घुमावे।
अनेक ख़्याल भरमात ॥ ४ ॥
ध्यान करूँ तो रूप न ठहरे।
भी रस नहिं पात ॥ ५ ॥
सेवा करूँ तो होय भिमानी।
गुरु पै ज़ोर चलात ॥ ६ ॥
तसँगियन से मान ईर्षा।
सब को दु पहुँचात ॥ ७ ॥
जब जब बचन ने तसँग के।
तब पछतात ॥ ८ ॥
फिर फिर भूले समझ न लावे।
भरमन में भरमात ॥ ९ ॥
काम ोध ी धारा भारी।
उन सँग सदा बहात ॥ १० ॥
रोग सोग पमान दसा में।
गुरु से भरमा जात ॥ ११ ॥
हा हूँ कुछ पे न जावे।
मैं तो हारा जात ॥१२॥

राधस्वामी बिन अब कौन सम्हारे।
वे धरें मेहर का हाथ ॥ १३ ॥
दया दृष्टि कर मोको हेरें।
देहें प्रेम की दात ॥ १४ ॥
तब सब कारज होवें पूरे।
छूटें सब उतपात ॥ १५ ॥

॥ शब्द २ ॥

सखी री क्यों सोच करे।
तोहि राधास्वामी मिल गए आय ॥१॥
उमँग सहित सतसँग कर उनका।
बचन सार रस पीओ आय ॥ २ ॥
दृष्ट जमाय नैन नित निरखो।
दरशन रस ले रहो अघाय ॥ ३ ॥
जब जब सेव मिले भागन से।
प्रेम अंग ले ताहि कमाय ॥ ४ ॥
सुमिरन भजन ध्यान रस माती।
अमी धार में नित्त अन्हाय ॥ ५ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़ावत दिन दिन।
चरन कँवल में रहे लौ लाय ॥ ६ ॥

गुरु चरनन बिन आस न कोई ।
गुरु प्रसन्नता नित्त कमाय ॥ ७ ॥
ऐसी रहनि रहो जो प्यारी ।
तब सुत निर्मल चरन समाय ॥ ८ ॥
दिन दिन आनँद बढ़ता दीखे ।
नित प्रति प्रेम उमँग अधिकाय ॥ ९ ॥
मन मूरख की पेश न जावे ।
काल रहे मुरझाय ॥ १० ॥
राधास्वामी परम दयाला ।
सब कारज किये पूरन आय ॥ ११ ॥
मैं तो नीच निकाम अनाड़ी ।
अपनी दया से लिया चरन लगाय ॥१२॥

॥ शब्द ३ ॥

सखीरी मेरा मनुआँ निपट अनाड़ी ।
गुरु बचन चित्त नहिँ धारी ॥ १ ॥
सोचत समझत फिर फिर भूलत ।
भगती रीत बिसारी ॥ २ ॥
क़ौल क़रार किये मैं बहुतक ।
लज्जित नहिँ निज बचन तुड़ारी ॥३॥

ऐसा ढीठ निलज्ज भोग बस ।
गुरु का नहिं भय भाव रखारी ॥ ४ ॥
कैसी करूँ कु बस नहिं चाले ।
गुरु दयाल बिन कौन सम्हारी ॥ ५ ॥
परस चरन अब रूँ बेनती ।
हे राधास्वामी मोहिं लेउ सुधारी ॥६॥
मेरा बल कु पेश न जावे ।
हार हार इस मन से हारी ॥ ७ ॥
तुम बिन और न कोई समरथ ।
तुम राखो राखन हारी ॥ ८ ॥
चरन सरन ले आरत धारूँ ।
थाली प्रीत सजारी ॥ ९ ॥
दीन अधीन होय चरनन में ।
माँगूँ मेहर दया री ॥ १० ॥
प्रीत प्रतीत देव अब पूरी ।
टो मन के बंधन भारी ॥ ११ ॥
राधास्वामी दीन दयाला ।
सुनिये अरज़ हमारी ॥ १२ ॥

॥ शब्द ४ ॥

क्यौं घबराओ प्रान पियारी ।
राधास्वामी जल्दी लेहैं सुधारी ॥१॥
चरन सरन चित में दृढ़ करना ।
सुरत डोर लागे गुरु चरना ॥ २ ॥
काल रम की पेश न जावे ।
मन माया फिर नहिं भरमावे ॥ ३ ॥
तगुरु दया रहे तुम संगा ।
निस दिन बाढ़ै प्रेम उमँगा ॥ ४ ॥
मन और सुरत उलट नभ धावैं ।
मेहर दया की बरखा पावैं ॥ ५ ॥
राधास्वामी पिता रैं ति प्यारा
दि न मैं तुम को लेहैं उबारा ॥ ६ ॥
यह कहना मेरा साँचा मानो ।
राधास्वामी को निज प्री जानो॥७॥
जीव दया निज हिरदे धारैं ।
बल अपना दे सुरत उबारैं ॥ ८ ॥
अब चिंता मन मैं मत राखो ।
राधास्वामी २ छिन २ भाखो ॥९॥

संशय भरम न लाओ जिय ॥
आस भरोस धरो दृढ़ हिय ॥ १० ॥
राधास्वामी काज रैं सब पूरे ।
सुरत होय उन चरनन धूरे ॥ ११ ॥

॥ ब्द ५ ॥

मनुआ ाड़ी पीछे पड़ा ।
कस पिय घर जाऊँरी । सखीरी ० ॥१॥
बार बार मोहिं भरम भुलावे ।
गैल न पाऊँ री । खी री घर ० ॥ २॥
संशय गिन जब तब भड़ ावे ।
प्रीत न लाऊँ री । खी री दृढ़ ० ॥३॥
भय और भाव जगत नहिँ छोड़े ।
प्रेम जगाऊँरी । खीरी कस ० ॥ ४ ॥
दुखी रहूँ चित मैं नित पने ।
दाव न पाऊँरी । सखी री कोई ० ॥ ५ ॥
ोइ नहिँ बूझै बिपता मेरी ।
किसे जनाऊँरी । सखीरी दुख ० ॥ ६ ॥
बिन राधास्वामी ब ौन बचावे ।
चरन धियाऊँरी । सखीरी उन० ॥ ७ ॥

दीन अधीन दोऊ कर जोड़ी ।
बिथा सुनाऊँरी। सखीरी यह ० ॥ ८ ॥
मेहर करें निज रूप दिखावें ।
सुत गगन चढ़ाऊँरी। सखीरी ० ॥ ९ ॥
तब मन काल रहें मुरझाई ।
धुन शब्द सुनाऊँरी। सखीरी ० ॥ १० ॥
राधास्वामी होउ सहाई ।
तुमहिं मनाऊँरी। पिताजी मैं तो ०॥११॥
आरत कर राधास्वामी रिझाऊँ ।
सरन समाऊँरी। सखीरी उन ०॥ १२ ॥

॥ शब्द ६ ॥

मनुआ खिलाड़ी खेल खिलावे ।
रोक रहा नौद्वार । सखीरी मोहि॥१॥
इंद्रिन सँग नित भरमत डोले ।
कर भोगन से प्यार। सखीरी वह तो०॥२॥
दुख पावत फिर फिर पछतावत ।
फिर भरमैं संसार। सखीरी वह तो ०॥३॥
कुटिल कुमत सँग छोड़त नाहीं ।
कैसे उतरे पार । सखीरी वह तो ०॥४॥

जगत जाल मैं रहा फँसाई ।
बहुत उठावत भार । सखीरी वह तो० ॥५॥
बिन सतगुरु कहो कौन सहाई ।
वही बचावन हार । सखीरी मेरे० ॥६॥
परम पुरुष समरथ राधास्वामी ।
चरन सरन उन धार । सखीरी अब० ॥७॥

——:o:——

॥ शब्द ७ ॥

अनाड़ी मनुआ कहा न माने [खिलाड़ी]।
जगत भाव सँग रहा भुलान ॥ १ ॥
गुरु की सीख न माने कबही ।
काल जाल मैं रहा फँसान ॥ २ ॥
जगत भोग की चाह बढ़ावत ।
सुरत शब्द मैं नहीं लगान ॥ ३ ॥
सतसंगत मैं हेत न लावे ।
जग जीवन सँग रहा मिलान ॥ ४ ॥
हितकारी की परख न करता ।
नित धोखन मैं रहे भरमान ॥ ५ ॥
बुध चतुराई छोड़े नाहीँ ।
गुरु की मेहर लेत नहिँ आन ॥ ६ ॥

राधास्वामी दया करैं जब पनी ।
तब यह पावे ठौर ठिकान।
अनाड़ी मनुआँ बने सुजान ॥ ७ ॥
प्रेम उमंग दीनता बाढ़े।
निर्मल होय गुरु चरन समान ।
अनाड़ी मनुआँ हुआ सुजान ॥ ८ ॥

बचन तीसरा

भेद राधास्वामी मत

॥ शब्द १ ॥

बुंद सिंध तज पिंड मैं या ।
पाँच तत्त गुन तीन बँधाया ॥ १ ॥
जोत निरंजन जाल बिछाया।
भोगन माहिँ अधि लिपटाया ॥२॥
पाँच दूत सँग लाग या
दस इंद्री रस रसन रसाया ॥ ३ ॥
जगत आस बिस्वास बँधाया ।
मन तरंग सँग अति भरमाया ॥ ४ ॥

कैसे छूटे जतन न कोई ।
बिन सतसंग उपाव न होई ॥ ५ ॥
सतगुरु मिलैं तो भेद बतावैं ।
दया मेहर से जाल कटावैं ॥ ६ ॥
मारग घर का देहैं लखाई ।
सुरत इधर से उधर लगाई ॥ ७ ॥
पर यह बात कठिन अति भारी ।
जीव बिसर गया घर सुध सारी ॥ ८ ॥
सतगुरु की परतीत न लावे ।
चरनन माँहिं प्रीत नहिँ आवे ॥ ९ ॥
माया बस निज घर नहिँ चीन्हा ।
सुक्ख दुक्ख मैं रहैं अधीना ॥ १० ॥
काल मते को चित से धारा ।
करम धरम और भरम सम्हारा ॥ ११ ॥
कोइ तीरथ कोइ बरत दिवाना ।
कोइ मूरत कोइ तप अभिमाना ॥ १२ ॥
कोइ जप कोइ ध्यान लगावे ।
कोइ बाचक ज्ञान सुनावे ॥ १३ ॥
यह सब भूल भरम मैं भटके ।
काल करम के जाल मैं अटके ॥ १४ ॥

जनम मरन से कोइ न बाचे ।
सतगुरु बिन चौरासी नाचे ॥ १५ ॥
मेरा भाग जगा क्या कहना ।
सतगुरु मिले भेद उन दीना ॥ १६ ॥
सुरत शब्द की राह बताई ।
मारग घर का दीन लखाई ॥ १७ ॥
नित सतसंग करूँ चरनन में ।
गुन गाऊँ और रहूँ मगन में ॥ १८ ॥
आरत करूँ और प्रेम बढ़ाऊँ ।
मन और सुरत गगन चढ़वाऊँ ॥१९॥
सुन्न में जाय ररँग धुन पाऊँ ।
भँवर गुफा मुरली बजवाऊँ ॥ २० ॥
सत्तपुरुष का दरशन करके ।
राधास्वामी के चरन समाऊँ ॥ २१ ॥

॥ शब्द २ ॥

जग में पड़ा घोर अँधियारा ।
करम भरम का बड़ा पसारा ॥ १ ॥
भरमों में सब जीव भुलाने ।
विद्या पढ़ पढ़ हुये सयाने ॥ २ ॥

कृत्रिम पूजा उन सब धारी ।
निज घर की सब सुद्ध बिसारी ॥ ३ ॥
निज पद है राधास्वामी धामा ।
सत्तपुरुष सतलोक ठिकाना ॥ ४ ॥
संत आय यह भेद जनावैं ।
करमी जीव प्रतीत न लावैं ॥ ५ ॥
जब नहिँ हते ब्रह्म और माया ।
बेद पुरान नहीँ प्रगटाया ॥ ६ ॥
पाँचौं तत्त न तिरगुन माया ।
मन इच्छा नहिँ तिरविधि काया ॥ ७ ॥
तब थे अकह अपार अनामी ।
परम पुरुष समरथ राधास्वामी ॥ ८ ॥
मौज उठी रचना हुइ भारी ।
अलख अगम सतलोक सँवारी ॥ ९ ॥
राधास्वामी अगम रूप धर आए ।
सत्तलोक सतपुरुष कहाये ॥ १० ॥
अंस दोय यहाँ से उतपाने ।
ब्रह्म और माया नाम कहाने ॥ ११ ॥
यह दोउ अंस उतर कर आये ।
पाँच तत्त गुन तीन मिलाये ॥ १२ ॥

सत्तपुरुष की अज्ञा लीन्ही ।
तीन लोक रचना इन कीन्ही ॥ १३ ॥
जीव अंस सतपुर से आई ।
माया ब्रह्म माँग कर लाई ॥ १४ ॥
तन मन इंद्री संग बंधाया ।
इच्छा भोगन माँहिँ फंसाया ॥ १५ ॥
परम पुरुष का भेद न पाया ।
करम धरम मेँ बहु भटकाया ॥ १६ ॥
सब जिव योँ भोगेँ चौरासी ।
जोत निरंजन डाली फाँसी ॥ १७ ॥
संत बचन माने जो कोई ।
फाँस काट जावे घर सोई ॥ १८ ॥
सुरत शब्द की कार कमावो ।
सत्तलोक की आसा लावो ॥ १९ ॥
सतसंग कर धारो परतीती ।
संत चरन की पालो प्रीती ॥ २० ॥
सतगुरु रूप निरख हिय अंतर ।
राधास्वामी नाम सुमिर जिय अंतर ॥ २१ ॥
मन और सुरत होँय तब निरमल ।
शब्द शब्द पौड़ी चढ़ चल चल ॥ २२ ॥

चढ़ चढ़ पहुँचे सतगुरु देसा ।
काल करम का छूटे लेसा ॥२३॥
मन माया सब वार रहाई ।
तीन लोक के पार न जाई ॥२४॥
परले महा परले गत नाहीं ।
काल और महा काल रहे ठाईं ॥२५॥
सत्तलो वह देस अनूपा ।
सुरत धरेजहाँ हंस सरूपा ॥ २६ ॥
दर्श पुर्ष ौर असीं अहारा।
मलय सुगंध शब्द झनकारा ॥ २७॥
अस अस सूरत देख विलासा ।
गई अधर किया निज पद बासा ॥२८॥
निज पद है वह राधास्वामी।
बार बार उन चरन नमामी ॥ २९ ॥
भाग ापना कहा सराहूँ।
राधास्वामी महिमाँ क्योंकर गाऊँ ॥ ३०॥
यह आरत पूरन कीनी ।
राधास्वामी चरनन रहूँ अधीनी ॥३१॥

॥ शब्द ३ ॥

सुरत सिरोमन हेला लाई ।
सतगुरु पूरा खोजो भाई ॥ १ ॥
जोत निरंजन फाँसी डारा ।
जीव बहे चौरासी धारा ॥ २ ॥
करम धरम में सब भरमाए ।
निज घर का कोइ भेद न पाए ॥३॥
मैं अब कहूँ पुकार पुकारा ।
बिन गुरु सरन नहीं निरवारा ॥ ४ ॥
पूरन धनी अपार अनामी ।
परम पुरुष सतगुरु राधास्वामी ॥ ५॥
जग में संत रूप धर आए ।
काल जाल से जीव बचाए ॥ ६ ॥
हुकम दिया जीवन को ऐसा ।
शब्द पकड़ जाओ निज देसा ॥ ७ ॥
प्रेम भक्ति हिरदे में धारो ।
दया मेहर ले उतरो पारो ॥ ८ ॥
सुरत शब्द बिन जो मत होई ।
काल जाल जानो तुम सोई ॥ ९ ॥

हर मुख जो पूजा लाते ।
अंतर जो ध्यान लगाते ॥ १० ॥
बाच लक्ष निरनै करते ।
व्यापक चेतन बिरती धरते ॥ ११ ॥
कर बिचार जो मन को साधैं ।
न साध जो धरैं समाधैं ॥ १२ ॥
जप तप संजम बहु बिध धारैं ।
दृष्टि साध कर रूप निहारैं ॥ १३ ॥
और .नेक प्रकाश दिखाई ।
तम दरशन चित में लाई ॥ १४ ॥
ऐसा खेल लखैं घट माहीं ।
खट चक्कर अंतर भरमाई ॥ १५ ॥
यह सब मते काल के जानो ।
अंतर गत माया के मानो ॥ १६ ॥
कोइ दिन सुख आनंद बिलासा ।
फिर फिर पड़े काल की फाँसा ॥ १७ ॥
कोई जीव बचे नहिँ भाई ।
काल हद्द से परे न जाई ॥ १८ ॥
तिरलोकी मैं काल पसारा ।
पाँच तत्त तिरगुन बिस्तारा ॥ १९ ॥

दयाल देस तिरलोकी पारा ।
काल कर्म का वहाँ न गुज़ारा ॥ २०॥
जो कोइ संत बचन को मानैं ।
दयाल देस की सो गत जानैं॥ २१ ॥
याते बार बार समझाऊँ ।
संतन की गत अगम सुनाऊँ ॥ २२ ॥
सतगुरु चरन प्रीत करो गाढ़ी।
तन मन अरपो सूरत वारी ॥ २३ ॥
चरन सरन सतगुरु दृढ़ करना ।
रूप अनूप हिये बिच धरना ॥ २४ ॥
तब कुछ भेद समझ में आवे ।
सुरत शब्द का कुछ रस पावे ॥ २५॥
जीव काज अस होवे पूरा ।
काल कर्म हट जावैं दूरा॥ २६ ॥
पंचम चक्र जीव का बासा ।
छठवैं में है सुरत निवासा ॥ २७॥
यहाँ से राह संत मत जारी ।
नैन नगर बिच मारग धारी ॥ २८ ॥
सुरत दृष्टि कर झाँको द्वारा ।
सहज चढ़ो खट चक्कर पारा ॥ २९॥

सप्तम कँवल सहसदल नामा ।
जोत निरंजन अस्थाना ॥ ३० ॥
घंटा शँख बजे तेहि द्वारे ।
सूरज चाँद अनेक निहारे ॥ ३१ ॥
व्यापक चेतन इसका भासा ।
तीन लोक और पिंड निवासा ॥ ३२॥
ताका ज्ञान पाय यह ज्ञानी ।
कर उनमान हुए अभिमानी ॥ ३३ ॥
पोथी पढ़ बहु बात बनावें ।
निज चेतन भेद न पावें ॥ ३४ ॥
निज चेतन है सिंध अपारा ।
दयाल देस में तासु पसारा ॥ ३५ ॥
बूँद एक वहाँ से चल आई ।
सोई निरगुन ब्रह्म कहाई ॥ ३६ ॥
इसका भास पिंड में आया ।
ताको व्यापक चेतन गाया ॥ ३७ ॥
जो कोइ व्यापक निश्चै धारे ।
मुक्ति न पावे भरमे वारे ॥ ३८ ॥
याते तजो निरंजन धामा ।
सतगुरु देस करो बिसरामा ॥ ३९ ॥

सतगुरु पद सतलोक कहावे ।
जोत निरंजन जहाँ न जावे ॥ ४० ॥
सहसकँवल परे तीन अस्थाना ।
त्रिकुटी सुन्न और गुफ़ा बखाना ॥४१॥
ताके परे धाम सतनामा ।
सत्तलोक सतगुरु पद जाना ॥ ४२ ॥
अलख लोक तिस ऊपर होई ।
ताके परे अगम है सोई ॥ ४३ ॥
तिसके आगे धुर पद जानो ।
राधास्वामी धाम पहिचानो ॥ ४४ ॥
राधास्वामी नाम हिये बिच धारो ।
और नाम सबही तज डारो ॥ ४५ ॥
राधास्वामी चरन बाँध मन आसा ।
तब पावे सतलोक निवासा ॥ ४६ ॥
तन मन इंद्री घट में घेरो ।
सुरत चढ़ाय करो घर फेरो ॥ ४७ ॥
हित चित से सतगुरु सँग कीजे ।
राधास्वामी दया मेहर तब लीजे ॥४८॥
या बिधि जो कोइ कार कमावे ।
काल देस तज निज घर जावे ॥ ४९ ॥

दयाल देस में बासा पावे।
राधास्वामी चरनन माहिं समावे ॥५०॥
आरत हुई दास की पूरी।
रहुँ गुरु अंग संग तज दूरी ॥ ५१ ॥

॥ शब्द ४ ॥

भूल भटक में बहु दिन भरमा।
कहीं न पाया घर का मरमा ॥ १ ॥
जग में बहु मत फैले भाई।
निज घर का कोइ भेद न पाई ॥२॥
कृत्रिम पूजा में सब अटके।
करम धरम में सब मिल भटके ॥ ३॥
यह सब मते उपाए काला।
त्रिगुनी माया घेरा डाला ॥ ४ ॥
जाल बिछाया भारी जग में।
जीव भटक गए सब या मग में ॥ ५॥
सतगुरु की परतीत न लावें।
फिर फिर चौरासी भरमावें ॥ ६ ॥
घट का खोज न काहू कीन्हा।
धोखे में रहे काल अधीना ॥ ७ ॥

मेरा भाग उदय होय आया ।
राधास्वामी सन्मुख ज्यों त्यों आया ॥८॥
दरशन कर मन सूरत हरखे ।
सतगुरु मेहर दया निज परखे ॥ ९ ॥
सतसँग करत भरम सब भागे ।
संशय रोग सोग सब त्यागे ॥ १० ॥
प्रेम प्रीत चरनन में लागी ।
उमँग नवीन हिये में जागी ॥ ११ ॥
मन हुआ लीन चरन में भारी ।
बिषय बासना दूर निकारी ॥ १२ ॥
जगत भाव सब मन से टारा ।
करम धरम का कूड़ा झाड़ा ॥ १३ ॥
अचरज खेल गुरू दिखलाया ।
निज घर का मोहिं भेद सुनाया ॥ १४ ॥
सुरत शब्द मारग दरसाया ।
चरन सरन दे मोहिं अपनाया ॥ १५ ॥
मगन रहूँ हिय में दिन राती ।
उमँग उमँग सतगुरु गुन गाती ॥ १६ ॥
सुनूँ नित्त चित से गुरु बैना ।
अचरज रूप लखूँ हिये नैना ॥ १७ ॥

बुद्धिवान करमी अभिमानी ।
यह सब पिल रहे की घानी ॥ १८ ॥
जो कोइ इनको कहे समझाई ।
सतगुरु कुछ भेद जनाई ॥ १९ ॥
तौ नहिँ मानें करें लड़ाई ।
निँ कर बहु पाप बढ़ाई ॥ २० ॥
भाग हीन भोगन में बंधे ।
यह पड़े काल के फंदे ॥ २१ ॥
सतगुरु ी महिमा नहिँ जानें ।
सुरत शब्द की न पहिचाने ॥ २२ ॥
मैं भाग सराहूँ ना ।
सतगुरु ि या मोहिँ निज अपना ॥ २३ ॥
रहूँ निस दिन गुन गाऊँ ।
सुरत शब्द निज्ञ लगाऊँ ॥ २४ ॥
सुन सुन पहुँचूँ नभ पुर में ।
चरन गुरू परसूँ त्रिकुटी में ॥ २५ ॥
सुन्न महल धुन सारँग बाजी ।
भँवर गुफा मुरली धुन गाजी ॥ २६ ॥
सत्त लोक सतगुरु दरबारा ।
अमी अहार बीन झनकारा ॥ २७ ॥

अलख अगम के पार ठिकाना ।
निज घर राधास्वामी धाम बखाना ॥ २८ ॥
आरत करूँ और प्रेम ँ ।
राधास्वामी २ छिन २ गाऊँ ॥ २९ ॥

॥ शब्द ५ ॥

प्रीत लगी सतगुरु चरना ।
मन और सुरत शब्द में धरना ॥ १ ॥
ँ उठी हिय में भारी ।
सतगुरु आरत लीन सँवारी ॥ २ ॥
दुरलभ सामाँ मिला नर धर ।
भक्ति भाव पाया औसर ॥ ३ ॥
सहजहि तगुरु दरशन पाया ।
निज घर मोहि भेद सुनाया ॥ ४ ॥
नि घर है वह राधास्वामी धामा ।
अकह अपार अनंत ॥ ५ ॥
अगम के पार रहाई ।
सत्तलोक तिस नीचे आई ॥ ६ ॥
सत्तलोक वह धाम अनूपा ।
सत्तपुरुष जहाँ धारा रूपा ॥ ७ ॥

अमर अजर यह लोक सुहाई ।
माया ब्रह्म जहाँ से आई ॥ ८ ॥
तिरलोकी का कारन सोई ।
संत बिना वहाँ जाय न कोई ॥ ९ ॥
माया ब्रह्म उतर कर आये ।
तीन लोक की रचन रचाये ॥ १० ॥
सहस कँवल में बैठक ठानी ।
पाँच तत्त गुन तीन मिलानी ॥ ११ ॥
तीनों गुन त्रय पुत्र कहाने ।
ब्रह्मा बिष्णु महेश बखाने ॥ १२ ॥
सुरत अंस सतपुर से आई ।
देही में ताहि लीन बँधाई ॥ १३ ॥
बेद कतेब पुरान बनाये ।
करम भरम के जाल बिछाये ॥ १४ ॥
सब जिव इन में आन फँसाने ।
फिर फिर चौरासी भरमाने ॥ १५ ॥
सत्तपुरुष राधास्वामी धामा ।
गुप्त रहा नहिं पाया मरमा ॥ १६ ॥
किरत्रिम देवा पूजा धारी ।
निज घर की सब सुद्ध बिसारी ॥ १७ ॥

याते सब जिव रहे दुखारी ।
सुक्ख न पाया पच पच हारी ॥१८॥
मैं बड़ भाग सराहूँ अपना ।
सतगुरु ने मोहिं किया निज अपना ॥१९॥
सुरत शब्द की राह बताई ।
यासे हंसा निज घर जाई ॥ २० ॥
और जतन सब थोथे जानो ।
घर जाने की राह न मानो ॥ २१ ॥
पंडित भेख मौलवी सारे ।
धन और मान मोह के मारे ॥ २२ ॥
करम भरम में भटका खावें ।
निज घर का यह भेद न पावें ॥ २३ ॥
इनका संग करो मत भाई ।
जो चौरासी छूटन चाही ॥ २४ ॥
खोजो सतगुरु दीन दयाला ।
तब काटो यह जम का जाला २५ ॥
भेद लेव निज घर का उन से ।
करनी शब्द करो तन मन से ॥ २६ ॥
सत संग उनका करो चेत कर ।
रूप निहारो हिया हेत कर ॥ २७ ॥

नर देही का फल तब पावो ।
अमर लोक को सीधे जावो ॥ २८ ॥
जीव दया कर समझ सुनाई ।
जो माने बड़ भाग सुहाई ॥ २९ ॥
सतगुरु महिमाँ क्या कहुँ किससे ।
सतगुरु सरन छुड़ावत जम से ॥ ३० ॥
राधास्वामी महिमाँ निस दिन गाऊँ ।
राधास्वामी मेहर प्रशादी पाऊँ ॥ ३१ ॥

॥ शब्द ६ ॥

सतसँग महिमाँ सुन कर आया ।
राधास्वामी दर पर माथ नवाया ॥१॥
अचरज संगत सुनी न देखी ।
भक्ती रीत अनोखी पेखी ॥ २ ॥
राधास्वामी गत मत अगम अपारा ।
सुरत शब्द मारग मैं धारा ॥ ३ ॥
कर सतसंग मिटा अँधियारा ।
घट में शब्द किया उजीयारा ॥ ४ ॥
देखा सब जग काल पसारा ।
जीव बहैं चौरासी धारा ॥ ५ ॥

कोइ मंदिर कोइ तीरथ भरमैं ।
कोइ   करैं   और घर   ॥ ६ ॥
कोई बरत और दान में अटके ।
कोई बि   और   में भटके ॥ ७ ॥
व्यापक चेतन निश्चै करते ।
व्यापक में वे बिरती धरते ॥ ८ ॥
आना जाना कुछ नहिं मानैं ।
ठौर ठिकाना   नहिं जानैं ॥ ९ ॥
यह व्यापक है काल   भासा ।
सहस कँवल में तास निवासा ॥ १० ॥
माया   उसी   नामा ।
सत्तम   तासु बिसरामा ॥ ११ ॥
बेद कतेब   उपजाये ।
करम भरम में जीव फँसाये ॥ १२ ॥
बाचक   कहें जो भाई ।
मन चेतन में रहे समाई ॥ १३ ॥
ताके आगे भेद न पावे ।
मुक्ति न होवे जोनी आवे ॥ १४ ॥
करम भोग उनका नहिं छूटे ।
फिर फिर चौरासी   लूटे ॥ १५ ॥

बिन सतगुरु कोइ राह न पावे ।
सुरत शब्द बिन घर नहिं जावे ॥ १६ ॥
तासे कहूँ पुकार पुकारी ।
शब्द गुरू को लेव सम्हारी ॥ १७ ॥
मेरा भाग जगा अब भारी ।
सतगुरु ने मोहि लिया सुधारी ॥ १८ ॥
निज घर का मोहि भेद जनाया ।
सात अस्थान परे बतलाया ॥ १९ ॥
निज घर है वह राधास्वामी धामा ।
बार बार उन चरन प्रनामा ॥ २० ॥
दीन अधीन होय आरत करता ।
सुरत चरन में छिन छिन धरता ॥ २१ ॥
बर माँगूँ सोइ देव मोहि दाता ।
मन रहे सुरत शब्द रंग राता ॥ २२ ॥
दृढ़ परतीत चरन में राखूँ ।
राधास्वामी २ निस दिन भाखूँ ॥ २३ ॥

॥ शब्द ७ ॥

जगत में भूल भरम भारी ।
धार माया की नित जारी ॥ १ ॥

भीज रहे सब जिव माया रंग।
उठावत मन नित नई तरंग॥ २॥
भोग जग सब के मन भावैं।
पदारथ नित्त नए चावैं॥ ३॥
बिना धन काज नहीं सरते।
त्रिशना धन की सब करते॥ ४॥
जतन मैं धन कारन पचते।
उमर भर मेहनत मैं खपते॥५॥
मिला धन मगन हुए मन मैं।
नहीं तो दुखी रहैं तन मैं॥ ६॥
क़दर नर देही नहिँ जानी।
दूध तज माँगत हैं पानी॥ ७॥
ख़बर नहिँ कहाँ से जिव आया।
जगत मैं क्योंकर भरमाया॥ ८॥
देह तज फिर कहाँ जावेगा।
कहाँ यह दुख सुख पावेगा॥ ९॥
देखते कुदरत की करतूत।
बुद्धि से करते उसकी कूत॥ १०॥
समझ नहिँ पाते को करतार।
थका उन बुधि बल करत बिचार॥११॥

ज़हूरा कारीगर का है ।
समझ नहिं आवे कैसा है ॥ १२ ॥
नहीं मन निश्चै लाता है ।
कोई रचना का करता है ॥ १३ ॥
इसी से संशय में रहते ।
भरम कर चौरासी बहते ॥ १४ ॥
खाने और पीने में भूले ।
पहिर और ओढ़न सँग फूले ॥ १५ ॥
काम और क्रोध सतावें नित्त ।
लोभ और मोह चुरावें चित्त ॥ १६ ॥
मान मद भरमावत दिन रात ।
ईरखा नित्त जरावत गात ॥ १७ ॥
रोग और सोग सतावें आय ।
कहाँ लग बिपत कहूँ इन गाय ॥ १८ ॥
बहुर फिर भोगें चौरासी ।
कटे नहिं कबही जम फाँसी ॥ १९ ॥
समझ जो कोइ सुनावे आय ।
भरम कर बचन न चित्त समाय ॥ २० ॥
बड़ा मेरा जागा अचरज भाग
चरन में राधास्वामी के मन लाग ॥ २१ ॥

करी मोपै धुर से दया पार ।
दिया मोहि भेद सार सार ॥२२॥
जगत का दिखलाया सब हाल ।
लखाया मन माया जाल ॥२३॥
सुरत मन मेरे निरमल कीन ।
प्रेम और भ दान मोहि दीन ॥२४॥
मेहर कर दीनी घट परतीत ।
चरन में बढ़ती नित नित प्रीत ॥२५॥
नाम ी महिमाँ नित्त बसाय ।
सरन दे मुझ को लिया अपनाय ॥२६॥
गाऊँ गुन राधास्वामी बारम्बार ।
रहूँ नित चरनन में हुशियार ॥२७॥
तजूँ मैं के सभी बिकार ।
नाम राधास्वामी हिये म्हार ॥२८॥
हे कोइ जिव संसारी ।
बचन उन में नहिं धारी ॥२९॥
भेद नहीं जानें ।
गुरू ी सी नहीं मानें ॥३०॥
नहीं कुछ ग उन कीया ।
मूढ़ और मूरख जग रहिया ॥३१॥

मेहर मोपै कीनी गुरु प्यारे ।
भरम और संसय सब टारे ॥३२॥
सकै नहिं कोई मोहि भरमाय ।
भरम सब दीने दूर बहाय ॥३३॥
उमँग मेरे हिये उठती हरबार ।
करूँ स्वामी आरत साज सँवार ॥३४॥
सुरत की थाली लेकर हाथ ।
शब्द धुन जोत जगाऊँ साथ ॥ ३५ ॥
सुरत को तान दृष्टि को जोड़ ।
सुनूँ मैं घट में अनहद घोर ॥३६॥
सहसदल घंट संख बाजे ।
गगन में धुन मृदंग गाजे ॥३७॥
सुन्न चढ़ सारंगी सुनती ।
गुफ़ा में मुरली धुन गुनती ॥३८॥
पुरुष का दरशन सतपुर पाय ।
अलख और अगम को परसा जाय ॥३९॥
मिला राधास्वामी का दीदार ।
हुआ मोहि अब उन चरन अधार ॥४०॥
दया राधास्वामी बरनि न जाय ।
लिया मोहि अपनी गोद बिठाय ॥४१॥

मेहर ी दृष्टि करी भारी ।
सुरत हुई राधास्वामी प्यारी ॥ ४२ ॥

॥ बचन चौथा ॥

महिमाँ और प्राप्ती सतगुरु की और बरनन प्रेम प्रीत का उन के चरनों में

॥ शब्द १ ॥

सखीरी मेरे भाग ।
मुझे राधास्वामी मिले हैं दयाल ॥ १ ॥
सखीरी मेरे भाग जगे ।
मोपै सतगुरु हुए हैं दयाल ॥ २ ॥
आलस नींद न मोहिं सतावें ।
दरशन रस लेउँ हाल ॥ ३ ॥
पा दृष्ट से सुरत चढ़ावें ।
सहजहि करत निहाल ॥ ४ ॥
मगन रहूँ हरदम हिय पने ।
गुरु के चरन सम्हाल ॥ ५ ॥
सेवा करूँ दरश पुन पाऊँ ।
हरखूँ निरख जमाल ॥ ६ ॥

सतसँग बचन रसीले लागे

मोहे मन और ल ॥ ७ ॥

दस इंद्री मैं उलटी लानूँ ।

पाऊँ ी रस हाल ॥ ८ ॥

संसारी से मेल न चाहूँ ।

भोग सभी जंजाल ॥ ९ ॥

राधास्वामी चरन बसे मेरे हिय में ।

यहि मेरी माँग और चाल ॥ १० ॥

राधास्वामी महिमा ोई न जाने ।

 ब फँसे ाल के जाल ॥ ११ ॥

 पा दृष्टि से मुझ को हेरा ।

मेटे सब दु साल ॥ १२ ॥

॥ शब्द २ ॥

सखीरी राधास्वामी पै जाऊँ बलिहार ।

लिया मोहि जग से तुरत उबार ॥ १ ॥

करूँ मैं छिन दि उन दीदार ।

लगा उन चरनन से ति प्यार ॥ २ ॥

सुरत शब्द मारग दरसाया ।

काटा जम का जार ॥ ३ ॥

सुरत डोर चरनन मैं लागी ।
निस दिन रहूँ हुशियार ॥ ४ ॥
राधास्वामी समरथ दाता ।
मुझ पर हुए हैं दयार ॥ ५ ॥

—·○·—

॥ शब्द ३ ॥

सखीरी मेरे प्यारे का कर दीदार ।
सखीरी उन चरनौं का कर आधार ॥ १ ॥
सखीरी मेरे प्यारे की देख बहार ।
सखीरी उन नैनौं को निरख निहार ॥२॥
सखीरी उस मुखड़े पै जाऊँ बलिहार ।
सखी री मैं तो तन मन देउँगी वार ॥ ३ ॥
सखीरी उन महिमाँ अपर अपार ।
सखीरी तोहि क्यौं नहिँ आवे प्यार ॥ ४ ॥
सखीरी अब छोड़ो जगत लबार ।
सखीरी सुन बचन सम्हार सम्हार ॥ ५ ॥
सखीरी तोहि वही उतारैं पार ।
गावो गुन उन का बारम्बार ॥ ६ ॥
वही हैं सब के सत करतार ।
रहो तुम दम दम शुकर गुज़ार ॥ ७ ॥

सखीरी तन मन से होजा न्यार ।
निरख तब हिये में अजब बहार ॥ ८ ॥
खिला तेरे घट में एक गुलज़ार ।
बजें जहाँ बाजे नेक प्रकार ॥ ९ ॥
मृदँग और घंटा सारँग सार ।
बीन और मुरली करत पुकार॥ १० ॥
पकड़ राधास्वामी चरन सम्हार ।
मेहर से पहुँचे धुर दरबार ॥ ११ ॥

॥ शब्द ४ ॥

देखोरी कोइ सुरत रँगीली ।
चिंता में रहे है चिंत री ॥ १ ॥
भीड़ भाड़ सँग नित उठ बरते ।
अंतर रहे ए तरी ॥ २ ॥
मन माया की घात बचाकर ।
चलत नित्त गुरुपंथ री ॥ ३ ॥
सुरत डोर लागी रहे निस दिन ।
चरन कँवल प्रिय कंतरी ॥४॥
ऐसी लगन लगी जिन गुरुमुख ।
सोइ पावे पद री ॥ ५ ॥

राधास्वामी हुए हैं सहाई

दीनी भक्ति पुखंत री ॥६॥

मैं तो नीच निकाम अनाड़ी ।

दान दिया निज मंतरी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥

ऐसा को है अनोखा दास ।

जापै सतगुरु हुए हैं दयाल री ॥ १ ॥

सुमिरन भजन ध्यान में तकड़ा ।

मारा मन और ाल री ॥ २ ॥

सेवा रत उमँग से भारी ।

ि न दि न चरन सम्हार री ॥ ३ ॥

प्रीत सतगुरु से लागी ।

नहिँ भावे धन माल री ॥ ४ ॥

भाव भक्ति नित प्रीत बढ़ावत ।

चले नोखी चाल री ॥ ५ ॥

नाम तेग़ गह जूझत मन से ।

धार चरन ी ढाल री ॥६ ॥

धर चढ़े गुरुदर्शन पावे ।

पिए अमीँ र हाल री ॥ ७ ।

राधास्वामी लगाया।
मोहिँ ीना आज निहाल री ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६ ॥

सखीरी मेरे दिन प्रति आनँद होय। टेक।
पाये दर राधास्वामी चरन के।
दिन प्रति आनँद हो ॥ १ ॥
राधास्वामी मेरे परम पियारे।
उन बिन और न दीखे कोय ॥ २ ॥
सह वल और गगन मानसर।
राधास्वामी अंस बिराजत दोय ॥३॥
भँवर गुफ़ा पर सत्त भवन में।
सत्त पुरुष की बै होय ॥ ४ ॥
राधास्वामी महल अनूप पारा।
अलख अगम परे सोय ॥ ५ ॥
राधास्वामी परम उदार दयाला।
जीव दया कर समरथ सोय ॥ ६ ॥
सतगुरु रूप धार जग ए।
काल करम दोउ बैठे रोय ॥ ७ ॥
निज मारग प्रगट कर गाया।
प्रेम सहित सुत शब्द समोय ॥ ८ ॥

अगनित जीव उबार लिए हैं ।
पाप पुन्य सब डारे धोय ॥ ९ ॥
दास निकास भरमता जग में ।
अपनी दया से दिया दरशन मोहि ॥ १० ॥
करम भरम के बंधन काटे ।
जन्म जन्म के पातक खोय ॥ ११ ॥
जैसी लीला राधास्वामी धारी ।
ऐसी जग में हुई है न होय ॥ १२ ॥
बारम्बार करूँ मैं बिनती ।
मागूँ दान सो दीजे मोहि ॥ १३ ॥
दरशन बचन मौं परशादी ।
चरना मुख अमृत दोय ॥ १४ ॥
प्रेम भक्ति और बिलास नवीना ।
दिन प्रति मोहि परापत होय ॥ १५ ॥
कभी न बिछड़ूँ चरन सरन से ।
यही दास को बख़्शिश होय ॥ १६ ॥
राधास्वामी प्यारे दुख हर मेरे ।
ब नहिँ बिछड़न होय ॥ १७ ॥

॥ शब्द ७ ॥

ीरी मेरे राधास्वामी परम पियारे ।टेक।

अपने गुरू पै मैं बल बल जाऊँ ।

आप मोहि तारे ॥१॥

अनजान भरम बस रहता ।

भेद दिया मोहि सारे ॥ २ ॥

करम को छिन में टारा ।

से किया मोहि न्यारे ॥ ३ ॥

सहज जोग की जुगत बताई ।

सूरत शब्द लगा रे ॥ ४ ॥

चढ़ी सुरत गगना पर धाई ।

रही दस द्वारे ॥५ ॥

वहाँ से चली अधर पद प्यारी ।

पहुँची दरबारे ॥ ६ ॥

राधास्वामी चरन सरन पर ।

मैं नि न बलिहारे ॥७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

गुरू मेरे प्रगटे जग में आय ।

आरती उनकी करूँ सजाय ॥ १ ॥

उमँग मेरे हिय में उठी अधिकाय ।
प्रेम अँग आरत करूँ बनाय ॥ २ ॥
निरख छबि अदभुत आनँद पाय ।
नैन और हिया जिया रहे लुभाय ॥ ३ ॥
प्रेम रँग चहुँ दिस रहा बरसाय ।
सुरत मन भींज रहे अधिकाय ॥ ४ ॥
उमँग कर चढ़ी गगन को धाय ।
चरन में राधास्वामी रही लिपटाय ॥ ५ ॥
निरंजन जोत रहे शरमाय ।
काल और करम रहे मुरझाय ॥ ६ ॥
कहूँ क्या आनँद बरना न जाय ।
प्रेम मेरे अँग अँग रहा समाय ॥ ७ ॥
मेहर जस राधास्वामी करी बनाय ।
नहीं बल क्यों कर कहूँ सुनाय ॥ ८ ॥

॥ शब्द ९ ॥

सखीरी मेरे राधास्वामी प्यारे री ।
वोही मेरी आँखों के तारे री ॥ १ ॥
वोही मेरे जग उजियारे री ।
वोही मेरे प्रान अधारे री ॥ २ ॥

आन कर जीव चितारे री।
किया मोहि जग से न्यारे री ॥ ३॥
दया कर लीन उबारे री।
गुरू मेरे परम उदारे री ॥ ४ ॥
देस उन अगम अपारे री।
निरख छबि तन मन वारे री ॥ ५ ॥
स्वामी मेरे दीन दयारे री।
लिया मोहि गोद बिठारे री ॥ ६ ॥

॥ शब्द १० ॥

संत रूप औतार।
राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥ १ ॥
जग आए कुल करतार।
राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥ २ ॥
भक्ति दान दिया सार।
राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥ ३ ॥
जग जीवन लिया है उबार।
राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥ ४ ॥
सुरत शब्द मत धार।
राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥ ५ ॥

काल कर्म दए जार ।
राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥ ६ ॥
मोहि चरनन लिया है लगाय ।
राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥ ७ ॥
मोहि गोद में लिया है बिठाय ।
राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥ ८ ॥
मैं तो तन मन देउँगी वार ।
राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥ ९ ॥
मैं तो छिन छिन जाउँ बलिहार ।
राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥ १० ॥
मेरे तन मन सुरत अधार ।
राधास्वामी मेरे प्यारे री ॥ ११ ॥

॥ शब्द ११ ॥

गुरु महिमा जब मैं सुन पाई ।
अधिक उमंग हिये बिच छाई ॥ १ ॥
रटना नाम करी उस दिन से ।
दरशन चाह बढ़ी हित चित से ॥ २ ॥
दीन अधीन गुरू मोहि चीन्हा ।
किरपा कर वहीं दरशन दीन्हा ॥ ३ ॥

अचरज भाग जगाए मेरे ।
मन और सुरत हुए गुरु चेरे ॥ ४ ॥
मेहर हुई चरनन में आया ।
अचरज दर्श नैन भर पाया ॥ ५ ॥
सतसँग बचन रसीले लागे ।
करम भरम संसय सब भागे ॥ ६ ॥
सेवा करूँ और रहुँ गुरु पासा ।
चरन कँवल की निस दिन आसा ॥ ७ ॥
नित नित प्रीत नवीन जगाऊँ ।
मन और सूरत शब्द लगाऊँ ॥ ८ ॥
बचन सुनूँ और चित में धारूँ ।
चरन सरन पर तन मन वारूँ ॥ ९ ॥
भेद अगाध गुरू मोहि दीन्हा ।
किरपा कर अपना कर लीन्हा ॥ १० ॥
बहु मत फैल रहे जग माहीं ।
सबही देखे काल की छाहीं ॥ ११ ॥
राधास्वामी दयाल मता दरसाया ।
देस आपना दूर लखाया ॥ १२ ॥
काल हद्द के परे ठिकाना ।
सत्त लोक ति ऊपर जाना ॥ १३ ॥

इनके परे धाम निज होई ।
आदि अनादि अनामी सोई ॥ १४ ॥
सुरत शब्द की जुगत बताई ।
और तरह कोइ राह न पाई ॥ १५ ॥
बिन सतगुरु कोइ भेद न पावे ।
सुरत शब्द बिन भटका खावे ॥ १६ ॥
मेरा भाग उदय हुआ भाई ।
राधास्वामी चरन शरन मैं पाई ॥ १७ ॥
काल मते से नाता तोड़ा ।
दयाल मते मैं चित को जोड़ा ॥ १८ ॥
जगत लाज और कुल मरजादा ।
दूर करी चित चरनन साधा ॥ १९ ॥
प्रेम प्रीत सतगुरु से लागी ।
मेहर हुई सुत धुन मैं पागी ॥ २० ॥
अब नित नित यह आरत गाऊँ ।
पल २ छिन २ राधास्वामी ध्याऊँ ॥ २१ ॥

॥ शब्द १२ ॥

कोई मोहि कुछ आखो ।
मैं तो गुरु चरनन की दास ॥ १ ॥

करम भरम में सब जिव भूले ।
फसे काल की फाँस ॥ २ ॥
सतगुरु महिमाँ नेक न जाने ।
मन माया के दास ॥ ३ ॥
भाग जगे सतगुरु मोहि भेटे ।
सुरत शब्द की धारी आस ॥ ४ ॥
दया करी मोहिं भेद सुनाया ।
करूँ चरन बिस्वास ॥ ५ ॥
सतगुरु मेरे प्रीतम प्यारे ।
उन सँग करूँ री बिलास ॥ ६ ॥
अधर चढ़ी दल सहस कवल में ।
लखा जोत परकाश ॥ ७ ॥
त्रिकुटी जाय लखी गुरु सूरत ।
अधर चँद्र में पाया बास ॥ ८ ॥
भँवर गुफा होय सतपुर पहुँची ।
सतगुरु चरन किया बिस्वास ॥ ९ ॥
लख अगम देख उजाला ।
पहुँची राधास्वामी पास ॥ १० ॥
आरत फेरूँ सन्मुख ठाड़ी ।
पाऊँ चरन निवास ॥ ११ ॥

राधास्वामी दीन दयाल हमारे।
करि हैं पूरन आस ॥ १२ ॥

॥ शब्द १३ ॥

नाम बिना उद्धार न होई।
याते भजन करो सब कोई ॥ १ ॥
नाम भेद है सतगुरु पासा।
खोजो सतगुरु हो उन दासा ॥ २ ॥
सतसँग उनका करो बनाई।
दिन दिन प्रीत प्रतीत बढ़ाई ॥ ३ ॥
भेद नाम का जब तुम पाओ।
सुरत शब्द अभ्यास कमाओ ॥ ४ ॥
जगत भोग की चाह हटाओ।
राधास्वामी चरनन प्रेम बढ़ाओ॥ ५॥
मन निरमल होय चढ़े अकाशा।
देखे घट में अजब बिलासा ॥ ६ ॥
शब्द शब्द सुन करे निबेड़ा।
सत्तलोक जा करे बसेरा ॥ ७ ॥
तब सतगुरु की महिमा जाने।
नर देही की सार पहिचाने ॥ ८ ॥

आवा गवन छूट सब जावे ।
भौ सागर में फेर न आवे ॥ ९ ॥
अपना भाग सराहूँ भाई ।
राधास्वामी संगत सहजहि पाई ॥१०॥
नित्त नवीन उमंग उठाऊँ ।
राधास्वामी चरन अब हिये बसाऊँ ॥११॥
प्रेम सहित आरत गुरु गाऊँ ।
राधास्वामी मेहर प्रसादी पाऊँ ॥१२॥

बचन पाँचवाँ

बिरह और खोज सतगुरु का

॥ शब्द ॥ १ ॥

सखी री मोहि क्यों रोको ।
मैं तो जाऊँगी सतगुरु पास ॥ १ ॥
सतगुरु मेरे अधर बिराजें ।
वहीं संतन का बास ॥ २ ॥
पिंड अंड ब्रह्मंड के पारा ।
सत्त अलख और अगम निवास ॥ ३ ॥

छबि प्रीतम की महा मोहनी ।
महलन अजब उजास ॥ ४ ॥
जगत जीव सब हुए हैं बावरे ।
नहिं करें चरन बिसवासं ॥ ५ ॥
धन और मान भोग रस चाहें ।
सब पड़े काल की फाँस ॥ ६ ॥
उनका संग करूँ नहिं हीं ।
जग से रहूँ री उदास ॥ ७ ॥
सतगुरु प्रीतम जिन के प्यारे ।
उन सँग करूँरी बिलास ॥ ८ ॥
चरन वल मेरे प्रान अधारे ।
करते हिये में बास ॥ ९ ॥
राधास्वामी धनी हमारे ।
करि हैं पूरन आस ॥ १० ॥

॥ शब्द २ ॥

बिन सतगुरु दीदार । प रही मन में॥
बेकल बिरह सताय । रही मेरे तन में ॥१॥
हर दम उठत हिलोर । याद प्रीतम की ॥
कासे कहूँ जनाय । बिथा दुख जिय की ।२॥

मेरे राधास्वामी दीन दयाल ।
चरन उर धारैं ॥
निज दर्शन देवें आय ।
मोह जग टारैं ॥ ३ ॥
क्या महिमाँ उनकी कहूँ ।
पुर्ष अबिनाशी ॥
तन मन करूँ कुरबान ।
हुई मैं दासी ॥ ४ ॥
भाव भक्ति हिय राख ।
गुरू के सन्मुख आती ॥
मन का कपट हटाय ।
जिये की बिपत जनाती ॥ ५ ॥
राधास्वामी हुए प्रसन्न ।
दया कर जुगत उपाई ॥
सतसँग में लिया मेल ।
भेद मोहि गुप्त जनाई ॥ ६ ॥
दिन दिन बढ़त हुलास ।
रूप गुरु बिसरत नाहीं ॥
सुमिरूँ राधास्वामी नाम ।
बसूँ गुरू चरनन छाहीं ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३ ॥

दरस गुरु उठत बिरह भारी ।
तजत मन करनी संसारी ॥ १ ॥
भोग जग दीखत रोग समान ।
जोग गुरु भक्ती चित्त बसान ॥ २ ॥
निरख माया रँग मैला ।
चित्त चाहत सत सँग सैला ॥ ३ ॥
चरन गुरु बढ़त नया अनुराग ।
दई सब सा जग की ाग ॥ ४ ॥
जिगर में तपन उठत दिन रात ।
रहूँ अब कैसे चरनन साथ ॥ ५ ॥
खान और पान नहीं भावे ।
चरन में मन ि न ि न धावे ॥ ६ ॥
संग जग जीव हावत नाँहि ।
दरस गुरु चाह बढ़त मन माँहि ॥ ७ ॥
जगत से रहता चित्त उदास ।
चरन में चाहत ि न छिन बा ॥ ८ ॥
परख मन इंद्री चाल चाल ।
काल ौर करम भरम जाल ॥ ९ ॥

करत रहूँ बिनती दिन और रात ।
बचाओ देकर अपना हाथ ॥ १० ॥
स्वामी मेरे प्यारे पितु और मात ।
जाय नहिं महिमाँ उनकी गात ॥११॥
करें मेरी छिन छिन आप सम्हार ।
सरन में राखें देकर प्यार ॥ १२ ॥
चरन मेरे हिरदे में धारें ।
दया कर दुरमति सब टारें ॥ १३ ॥
भजन और भक्ति नहीं बनि आय ।
ध्यानऔर सुमिरन दिया बिसराय ॥१४॥
किया मैं चरनन में बिस्वास ।
करें गुरु पूरन मेरी आस ॥ १५ ॥
जतन कोइ करे चाहे जितने ।
दया बिन काज नहीं सुपने ॥ १६ ॥
सुरत मन जूझत धुन के संग ।
मेहर बिन नहिं लागे गुरु रंग ॥ १७ ॥
प्रेम गुरु जब मन में आवे ।
सुरत मन तब धुन को पावे ॥ १८ ॥
मेहर से खैंचें जब सूरत ।
लखे तब हिय में गुरु मूरत ॥१९॥

गगन में घंटा शंख सुने ।
नाल चढ़ मिरदँग गरज गुने ॥ २० ॥
सुन्न चढ़ मानसरोवर न्हाय ।
गुफ़ा में बंसी लई बजाय ॥ २१ ॥
बहुर सतपुर में पावे बास ।
बीन धुन बाजत जहाँ निस बास ॥ २२ ॥
अलख और अगम का देखा रूप ।
परस कर चरन पुरुष कुल भूप ॥ २३ ॥
दरश राधास्वामी पाऊँ सार ।
जाऊँ राधास्वामी पर बलिहार ॥ २४ ॥
आरती गाऊँ हित चित लाय ।
चरन राधास्वामी हिये बसाय ॥ २५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

गुरू के चरन बसै मेरा चित्त ।
बिरह दरशन की साले नित्त ॥ १ ॥
कहूँ क्या हालत मन केरी ।
पड़ी मेरे पाओं में बेड़ी ॥ २ ॥
लाज जग घेरा डालारी ।
कौन यह काटै जाला री ॥ ३ ॥

तड़प रही तन में दिन और रात ।
कहो कस पाऊँ गुरू का साथ ॥ ४ ॥
सोग और दुख नित उठ सहती ।
बिकल होय चुप मन में रहती ॥ ५ ॥
दुःख कोई मेरा नहिँ जाने ।
दसा मन की नहिँ पहिचाने ॥ ६ ॥
कहूँ किस आगे हाल अपना ।
दरस बिन सहत रहूँ तपना ॥ ७ ॥
गुरू मोपै करते दया अपार ।
दरश मोहिँ देत रहे हर बार ॥ ८ ॥
दिलासा करत रहे दम दम ।
वही हैं रक्षक और हम दम ॥ ९ ॥
गुरू मोपै किरपा अब कीजे ।
बुला कर दरश मोहिँ दीजे ॥ १० ॥
दिखाओ मुझ को सतसँग सार ।
सुनाओ बचन अमीं रस धार ॥ ११ ॥
पाऊँ तब घट में पूरी शांत ।
रहे नहिँ मन में कोई भ्रांत ॥ १२ ॥
जगत के दुख सुख नहिँ ब्यापैं ।
दूर होयँ मन से त्रिय तापैं ॥ १३ ॥

निबल जिव हो रहे दुख के रूप ।
भरम कर पड़ते माया कूप ॥ १४ ॥
साध का संग नहीं करते ।
बचन गुरु चित्त नहीं धरते ॥ १५ ॥
समझ जो अपने मन धारी ।
न छोड़ें अब हुए दुखियारी ॥ १६ ॥
गुरू से बिनती करूँ पुकार ।
समझ उन दीजे किरपा धार ॥ १७ ॥
होयँ तब सब जिव सुखियारी ।
प्रीत उन घट जागे भारी ॥ १८ ॥
करें गुरु सेवा मन चित लाय ।
भजन और सुमिरन रहें लौ लाय ॥ १९ ॥
धरें निज मन में दृढ़ परतीत ।
सरन गुरु धारें अचरज रीत ॥ २० ॥
होय तब उनका पूरा काज ।
त्याग दें जग की भय और लाज ॥ २१ ॥
मेरे मन आसा है भारी ।
करें गुरु किरपा सम्हारी ॥ २२ ॥
दीनता जब जिव चित लावे ।
सरन में राधास्वामी के धावे ॥ २३ ॥

होयँ परशन गुरु दीन दयाल ।
प्रीत चरनन की देवैं हाल ॥ २४ ॥
मेहर प्यारे राधास्वामी अब कीजे ।
जीव को भाव भक्ति दीजे ॥ २५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

प्रीतम प्यारे से प्रीत लगी ।
मेरा दरशन को जियरा तरसे ॥ १ ॥
बेकल चित रहूँ बिरह दिवानी ।
नहिँ कहीँ मन सरसे ॥ २ ॥
नित्त उदास रहूँ घट अंतर ।
काँपत रहूँ काल डर से ॥ ३ ॥
उलट पलट कर चढ़ गगना पर ।
तब पिया प्यारे का पद परसे ॥ ४ ॥
दरशन रस लेउँ तब सुख पाऊँ ।
दिन दिन नया आनँद दरसे ॥ ५ ॥
राधास्वामी हुए हैं सहाई ।
काढ़ लिया मोहिँ जम घर से ॥ ६ ॥
दया मेहर के बादल छाये ।
प्रेम उमँग धारा बरसे ॥ ७ ॥

भींज रही अब सुरत रँगीली ।
पिया ख लेत अधर घर से ॥ ८ ॥
राधास्वामी चरन अधारी ।
काट दिये कल मल जड़ से ॥ ९ ॥

॥ शब्द ६ ॥

दरस दे आज बँधाओ धीर ।
सहत रहूँ निस दिन बिरहा पीर ॥१॥
बिकल मन तड़प रहा दिन रैन ।
दरश बिन नहिँ पावे ख चैन ॥ २ ॥
सुमिरता जब जब रूप दयार ।
झड़त मेरे नैनन से जल धार ॥ ३ ॥
ताप त्रिय नित्त सतावें मोहिँ ।
मौत डर छिन छिन ब्यापे मोहिँ ॥४॥
ोई बिध नहिँ पावे शाँत ।
कहो कस देखूँ गुरू करांत ॥ ५ ॥
बिनय मैं करत रहूँ हर बार ।
गुरू मोहिँ दीजे दरशन सार ॥ ६ ॥
दया बिन नहिँ पुजवे ।
चरन राधास्वामी पाऊँ बास ॥ ७ ॥

॥ बचन छठवाँ ॥

बिनती और प्रार्थना और पुकार सतगुरु के चरनों में

॥ १ शब्द ॥

आओ मेरे सतगुरु हे मेरी जान।
नैना दरश को तरस रहे ॥ टेक ॥
आओ प्यारे राधास्वामी हे मेरे प्रान।
जीव बिकल अब तड़प रहे ॥ १ ॥
आओ मेरे सतगुरु दाता दयाल।
दरशन देकर करो निहाल ॥ २ ॥
आओ मेरे सतगुरु हे बंदी छोड़।
काल करम का काटो ज़ोर ॥ ३ ॥
आओ मेरे सतगुरु परम उदार।
जीवन को अब लेव उबार ॥ ४ ॥
आओ मेरे सतगुरु क्यों एती देर।
काल लिया जीवन को घेर ॥ ५ ॥
अब बरसाओ प्रेम का रंग।
सुरत चढ़ाओ जैसे पतंग ॥ ६ ॥

सुनो मेरे सतगुरु बिनती मोर।
प्रेम रंग से करो सरबोर ॥ ७ ॥
आओ प्यारे राधास्वामी काटो जाल।
चरन सरन दे करो निहाल ॥ ८ ॥

॥ शब्द २ ॥

क्या मुख ले मैं करूँ आरती।
बचन गुरू नहिं हिये में धारती ॥ १ ॥
मन तरंग सँग बहु भरमाती।
जगत आस ौर चाह ाती ॥ २ ॥
पाँच दुष्ट ने जाल बिछाया।
मन ौर इंद्री संग बँधाया ॥ ३ ॥
कैसे छूटूँ जतन नहिं कोई।
बिन गुरु मेहर उपाव न होई ॥ ४ ॥
हे सतगुरु मेरि सुनो पुकारा।
मुझ नि म को लेव सुधारा ॥ ५ ॥
समरथ और अंतर जामी।
मेहर करो हे सतगुरु स्वामी ॥ ६ ॥
कहाँ लग सहूँ तपन हिये माँही।
मेरा बल पे न जाई ॥ ७ ॥

हार हार आया सरन तुम्हारी ।
तुम बिन मोहिँ कौन सम्हारी ॥८॥
लज्या डर तुम्हरा नहिँ माना ।
औ बहुत किये निदाना ॥ ९ ॥
ब शरमाय हूँ मैं बिनती ।
हे दयाल तुम समरथ संती ॥ १० ॥
ौगुन मेरे चित्त न लाओ ।
नो दया से पार लगाओ ॥ ११ ॥
बिन नहिँ कोइ और सहाई ।
जैसे बने तैसे लेव बचाई ॥ १२ ॥
न्यारा ीजे ।
प्रीत ीत चरन में दीजे ॥ १३ ॥
निरमल कर सुरत चढ़ाओ ।
अमीँ धार धुन शब्द सुनाओ ॥ १४ ॥
गगन दर्शन पावे ।
निज परतीत हिये में ावे ॥ १५ ॥
जगत भाव निज कर टे ।
काल करम माथा फूटे ॥ १६ ॥
जाय तिरबेनी न्हावे ।
सुरत ब्द रस पावे ॥ १७ ॥

वहाँ से चल पहुँचूँ सतपुर में ।
सतगुरु दरशन करूँ अधर में ॥ १८ ॥
प्रेम सिंध में आन मिलानी ।
अब कहूँ धन धन राधास्वामी ॥ १९ ॥
उमँग उमँग कर आरत गाऊँ ।
राधास्वामी सदा धियाऊँ ॥ २० ॥
अब मेरा काज हुआ सब पूरन ।
सीस धरा राधास्वामी चरनन ॥ २१ ॥

॥ शब्द ३ ॥

मेरे प्यारे रँगीले सतगुरु ।
मेरी सुरत चुनरिया रँग दो ॥ १ ॥
प्रेम सिंध तुम अगम अपारा ।
मोहिँ प्रेम दिवानी करदो । २ ॥
रंग भरे रँगही बरसावो ।
मेरे मन की कलसिया भर दो ॥ ३ ॥
मन मोहन निज रूप तुम्हारा ।
मेरे हिये मुकर में धर दो ॥ ४ ॥
मन माया से अलग बचा कर ।
मोहि अजर अमर धुर घर दो ॥ ५ ॥

बहु दिन बीते करत पुकारा।
मेरि आसा पूरन कर दो ॥ ६ ॥
काल करम मोहि बहु भरमावत।
पाँचों चोर पकड़ दो ॥ ७ ॥
जित जाऊँ तित काल भुलावत ।
चरनन में चित मोर जकड़ दो ॥ ८ ॥
तुम दाता क्यों देर लगावो ।
अब तो जल्दी करदो ॥ ९ ॥
कहाँ लग कहूँ कहन नहिं आवे ।
मागूँ सो मोहिं बर दो ॥ १० ॥
राधास्वामी प्रीतम प्यारे ।
मोहिं नित नित अपना सँग दो ॥ ११ ॥

॥ शब्द ४ ॥

मेरे दाता दयाल गुसाईं ।
मोहि नीच अधम को तारो ॥ १ ॥
मैं नख सिख भरा बिकारो ।
तुम अपनी ओर निहारो ॥ २ ॥
मैं औगुन कीने बहुतक ।
मन इंद्री से मैं हारो ॥ ३ ॥

ब बिधि ौती दीन्ही ।
चित में कोइ नेक न धारो ॥ ४ ॥
बारम्बार चेत पछतावत ।
फिर फिर भूल में डारो ॥ ५॥
निरभय होय भोगन बरते ।
सतगुरु भय न प्यारो ॥ ६ ॥
कभी मसलहती समझ सुनावे ।
कभी कभी गुरुकी मौज निहारो॥ ७ ॥
कर देवत धोखा ।
सँग बानी न बिचारो ॥ ८ ॥
कहूँ तो नेक न माने ।
हुकम रैं उसको भी टारो ॥ ९ ॥
अपनी घाट नहिँ बूझे ।
फिर फिर भरमैं भोगन लारो ॥ १० ॥
ऐसा नीच कुबुद्धी यह ।
रोस करे जो इस को ड़ो ॥ ११ ॥
साध गुरू में औगुन देखे ।
भजन सेव सतसंग बिसारो॥ १२ ॥
मेरा बल कु पेश न जावे ।
ि कौन करे निरवारो ॥ १३ ॥

याते बिनय करूँ चरनन में ।
जैसे बने तैसे मोहि उबारो ॥ १४ ॥
डरत रहूँ दुक्खन के डरसे ।
त्राहि त्राहि कर करूँ पुकारो ॥ १५ ॥
हे दयाल मेरे औगुन बख़्शो ।
चरन सरन में देव सहारो ॥ १६ ॥
तुम समान कोइ समरथ नाहीं ।
जीव निबल क्या करे बिचारो ॥ १७ ॥
काल करम दोउ बैरी भारी ।
खूँदत खूँदत जीव पछाड़ो ॥ १८ ॥
बिना मेहर सतगुरु पूरे के ।
कोई न जावे इनके पारो ॥ १९ ॥
याते फिर फिर करूँ बेनती ।
मैं पापी दोषी अति भारो ॥ २० ॥
छिमा करो और दया उँमगाओ ।
चरन ओट दे मोहिँ अब तारो ॥ २१ ॥
देरहि देर अकाज हुआ है ।
अब जल्दी से मोहि निस्तारो ॥ २२ ॥
राधास्वामी दयाल कृपाल हमारे ।
दया दृष्टि अब मोपर डारो ॥ २३ ॥

प्रेम दान दीजे मोहि दाता ।
पना कर मोहि अभी सुधारो ॥ २४ ॥
सुरत जगाय लेव चरनन में ।
ल करम को छिन में जारो ॥ २५ ॥
पिंड अंड के पार चढ़ाओ ।
सत्तलोक पाऊँ घर न्यारो ॥ २६ ॥
राधास्वामी चरनन जाय समाऊँ ।
अल के पारो ॥ २७ ॥

॥ शब्द ५ ॥

बिनती करूँ पुकार पुकारी ।
तीन ताप जीव दुखारी ॥ १ ॥
चल मोहि अति भरमावे ।
करम मोहि नित्त सतावे ॥ २ ॥
क्रोध सँग भरमत डोले ।
जड़ चेतन ी गाँठ न खोले ॥ ३ ॥
भोग बिलास जगत के माँगे ।
ट में शब्द द्वार नहिं झाँके ॥ ४ ॥
बहुतक ज किए मैं आई ।
मेरा बल कुछ पेश न जाई ॥ ५ ॥

यह मन दुष्ट काल का प्यादा ।
नित्त उठावत नई उपाधा ॥ ६॥
बहु दिन अब मोहि जूझत बीते ।
मन नहिँ बस नहिँ इंद्री जीते ॥ ७॥
तुम समरथ मेरे सतगुरु प्यारे ।
काल मार मोहि लेव बचारे ॥ ८ ॥
मैं बालक तुम पिता हमारे ।
जल्दी से मोहि लेव सुधारे ॥ ९ ॥
अधर धाम से तुम चल आए ।
जीव दया निज हृदे बसाए ॥ १० ॥
मैं अति नीच निकाम नकारा ।
गहे आय तुम चरन दयारा ॥ ११ ॥
अब क्यों देर लगाओ एती।
उमर जाय मेरी छिन छिन बीती ॥ १२
दीन अधीन करूँ मैं बिनती ।
तुम दाता मेरे सतगुरु संती ॥ १३ ॥
भूल चूक अब बख़्शो मेरी ।
दया मेहर अब करो घनेरी ॥ १४॥
निर्मल कर मन सुरत चढ़ाओ ।
प्रेम दान दे चरन लगाओ ॥ १५ ॥

घट में मोहिं निज दरशन दीजे ।
तब मन सुरत प्रेम रँग भींजे ॥ १६ ॥
मैं अजान कुछ माँग न जाना ।
अपनी दया से देव मोहि दाना ॥ १७ ॥
यह पुकार मेरी सुन लीजे ।
मेहर दया अब राधास्वामी कीजे ॥ १८ ॥

॥ शब्द ६ ॥

मेरे प्यारे गुरू दातार ।
मँगता द्वारे खड़ा ॥ १ ॥
मैं रहा पुकार पुकार ।
मेहर कर देखो ज़रा ॥ २ ॥
मोहि दीजे भक्ती दान ।
काल दुख बहुत दिया ॥ ३ ॥
मेरे तड़प उठी हिय माहिँ
दरस को तरस रहा ॥ ४ ॥
बरषावो घटा अपार ।
प्रेम रँग दीजे बहा ॥ ५ ॥
सुत भीजे अमीं रस धार ।
तन मन होवे हरा ॥ ६ ॥

मेरा जन्म सुफल हो जाय ।
तुम गुन गाऊँ सदा ॥ ७ ॥
मैं नीच अधम नाकार ।
म्हारे द्वारे पड़ा ॥ ८ ॥
मेरी बिनती सुनो धर प्यार ।
घट उमगावो दया ॥ ९ ॥
राधास्वामी पिता हमार ।
जल्दी पार किया ॥ १० ॥

॥ शब्द ७ ॥

बेनती राधास्वामी आगे ।
गहिरी प्रीत चरन में लागे ॥ १ ॥
चंचल को थिर कर लीजे ।
दृढ़ परतीत चरन में दीजे ॥ २ ॥
भोग बासना सब छुट जावे ।
करम भरम शय हट जावे॥ ३ ॥
होय दीन सुरत लौ लीना ।
गुरु चरनन में सदा अधीना ॥ ४ ॥
नित्त नवीन प्रीत हिये आवे
सेवा करत रस पावे ॥ ५॥

सतसँग की चाहत रहे निस दिन ।
हरख हरख नित गावें तुम गुन ॥ ७ ॥
काल करम से लेव बचाई ।
सुरत शब्द की करूँ कमाई ॥ ७ ॥
यह अरज़ी मेरी सुन लीजे ।
किरपा कर मोहिं बख़्शिश दीजे ॥ ८ ॥
राधास्वामी दाता दीन दयाला ।
अपनी दया से करो निहाला ॥ ९ ॥
मैं बल हीन नहीं गुन कोई ।
चरन तुम्हारे पकड़े सोई ॥ १० ॥
सरन अधार जीऊँ दिन राती ।
राधास्वामी २ हिये बिच गाती ॥ ११ ॥
राधास्वामी मात पिता पति मेरे ।
राधास्वामी चरनन सुक्ख घनेरे ॥ १२ ॥
राधास्वामी बिना कोई नहिं बाचे ।
राधास्वामी हैं गुरु सतगुरु साँचे ॥ १३ ॥
राधास्वामी दया करें जिस जन पर ।
सोई बचे शब्द धुन सुन कर ॥ १४ ॥
दीन दयाल जीव हितकारी ।
राधास्वामी पर छिन २ बलिहारी ॥ १५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

बिनती गावे दास अनोखा ।
चरन सरन में चित को पोखा ॥ १ ॥
दरद दुखी जब चित घबरावत ।
गुरु चरनन मिल अति सुख पावत ॥ २ ॥
बिरह अगिन मोहि नित्त सतावे ।
तड़प २ हिया जिया अकुलावे ॥ ३ ॥
दरशन राधास्वामी छिन २ चाहत ।
मेहर नज़र पर बल बल जावत ॥ ४ ॥
हठ कर गुरु से करूँ पुकारी ।
प्रेम दान दे करो सुखारी ॥ ५ ॥
भेद तुम्हारा अगम अपारा ।
किरपा कर मोहि दीन्हा सारा ॥ ६ ॥
पर अब मेहर करो गुरु सीला ।
सुरत चढ़े देखूँ घट लीला ॥ ७ ॥
बिन अंतर रस शांत न आवे ।
जस प्यासा ब्याकुल घबरावे ॥ ८ ॥
मेरे मन अस निश्चै आई ।
मेहर बिना कुछ बन नहिं आई ॥ ९ ॥

बार बार यह बिनय सुनाई ।
हे राधास्वामी तुम होहु सहाई ॥ १० ॥
काज बनै घर पाऊँ अपना ।
काल करम का मेटो तपना ॥ ११ ॥
कहाँ लग मन से करूँ लड़ाई ।
मेरा बल कुछ काम न आई ॥ १२ ॥
तुम्हरे दर का हुआ भिखारी ।
करम काट मोहि लेव उबारी ॥ १३ ॥
याते दया मेहर निज चाहूँ ।
राधास्वामी २ छिन २ गाऊँ ॥ १४ ॥
अस बिनती मैं करी बनाई ।
राधास्वामी प्यारे हुये सहाई १५ ॥

॥ शब्द ९ ॥

राधास्वामी मेरी सुनो पुकारा ।
घट प्रीत बढ़ाओ सारा ॥ १ ॥
दृढ़ परतीत चरन मैं दीजे ।
किरपा कर अपना करलीजे ॥ २ ॥
भजन भक्ति कुछ बन नहिँ आवत ।
लोभ मोह मोहि अति भरमावत ॥ ३ ॥

मेरा बल कुछ पेश न जावे ।
मान ईरखा नित्त सतावे ॥ ४ ॥
यह मन बैरी सदा भुलावे ।
समझ न लावे भटका खावे ॥ ५ ॥
छिन रूखा छिन फीका होवै ।
माया मोह नींद में सोवे ॥ ६ ॥
बहुत जगाऊँ कहन न माने ।
प्रेम भक्ति की सार न जाने ॥ ७ ॥
सेवा में नित आलस करता ।
फिर फिर भोग रोग में गिरता ॥ ८ ॥
नित नित भरमन में भरमाई ।
सतसँग बचन न चित्त समाई ॥ ९ ॥
कुमत अधीन हुआ अब यह मन ।
कौन सुधारे इसको गुरु बिन ॥ १० ॥
याते करूँ पुकार पुकारी ।
हे राधास्वामी मोहि लेव सम्हारी ॥ ११ ॥
दीन अधीन पड़ी तुम द्वारे ।
तुम बिन अब मोहि कौन सुधारे ॥ १२ ॥
चरन बिना नहिँ ठौर ठिकाना ।
जैसे काग जहाज़ निमाना ॥ १३ ॥

तुम बिन और न कोई आसर ।
राधास्वामी २ गाऊँ निस बासर ॥ १४ ॥
अब तो लाज तुम्हे है मेरी ।
सरन पड़ी होय चरनन चेरी ॥ १५ ॥
राधास्वामी पति और पिता दयाला ।
अपनी मेहर से करो निहाला ॥ १६ ॥

॥ शब्द १० ॥

कैसे करूँ चरन में बिनती ।
मेरे औगुन जायँ नहिं गिनती ॥ १ ॥
मैं भूला चूका भारी ।
गुरु बचन चित्त नहिं धारी ॥ २ ॥
माया के रंग-रँगीला ।
मन इंद्री भोग रसीला ॥ ३ ॥
तन मन धन सँग बहु फूला ।
गुरु चरनन मारग भूला ॥ ४ ॥
यों बीत गए दिन सारे ।
रहा भरमत जक्त उजाड़े ॥ ५ ॥
सुध संतगुरु देस न लीनी ।
रहा माया संग अधीनी ॥ ६ ॥

मद मोह मान भरमावत ।
नित काम ोध ँग धावत ॥ ७ ॥
नित लोभ लहर में बहता ।
जग जीवन सँग दुख सहता ॥ ८ ॥
गुरु भक्ती रीत न जानी ।
गुरु सतगुरु सीख न मानी ॥ ९ ॥
गुरु दाता भेद बतावें ।
नित तसँग बचन सुनावें ॥ १० ॥
यह ढीठ निडर नहिं चेते ।
धोखे सँग पा रेते ॥ ११ ॥
गुरु भाव न लावे ।
निज मान भोग र चावे ॥ १२ ॥
क्या कीजे नहिं ाले ।
काटूँ मन जाले ॥ १३ ॥
मेरे राधास्वामी दयाल गुसाईं ।
वे काटें परछाईं ॥ १४ ॥
दे चरन ओट किरपा र ।
मोहि लेहैं बचा ना कर ॥ १५ ॥
बिन राधास्वामी और न दीखे ।
जो लेवे छुड़ा मन जम से ॥ १६ ॥

फिर फिर मैं बिनती धारूँ ।
बिन राधास्वामी और न जानूँ ॥ १७॥
हे पिता मेहर करो पूरी ।
मोहि कर लो चरनन धूरी ॥ १८ ॥
मन भोग छुड़ाओ मुझ से ।
तुम चरन पकड़ रहूँ जिय से॥ १९ ॥
तन मन के बिकार निकारो ।
तुम दाता देर न धारो ॥ २० ॥
बहु दुख मैं अब तक पाए ।
नित मन में रहूँ मुरझाए ॥ २१ ॥
अब कहाँ लग कहूँ बनाई ।
तुम राधास्वामी करो सहाई ॥ २२॥
मन सूरत चरन लगाओ ।
अब के मोहि अधम निबाहो ॥ २३ ॥
मैं पाप किए बहु भारी ।
धर छिमा करो उद्धारी ॥ २४ ॥
मेरे औगुन चित्त न धारो ।
किरपा कर मोहि उबारो ॥ २५ ॥
मेरे राधास्वामी पिता दयाला ।
दरशन दे करो निहाला ॥ २६ ॥

तन मन से न्यारा खेलूँ ।
तुम चरनन सूरत मेलूँ ॥ २७ ॥
घट में मेरे प्रेम बढ़ाओ ।
निज रूप मोहि दिखलाओ ॥ २८ ॥
तब जनम सुफल होय मेरा ।
मैं राधास्वामी दर का चेरा ॥ २९ ॥
घट प्रेम की बरषा कीजे ।
मन सूरत गुरु रँग भीँजे ॥ ३० ॥
मैं नीच अजान अनाड़ी ।
तुम चरनन आन पड़ा री ॥ ३१ ॥
मेरी बिनती सुनो पुकारी ।
अब कीजे दया बिचारी ॥ ३२ ॥
मेरे राधास्वामी परम उदारा ।
करो मुझ पर मेहर अपारा ॥ ३३ ॥
यह जीव निबल और मूरख ।
गुरु को नहिँ जाने रक्षक ॥ ३४ ॥
तुम अपनी ओर निहारो ।
मोहि राधास्वामी पार उतारो ॥ ३५ ॥

———

॥ शब्द ११ ॥

बार बार करूँ बेनती ।
　राधास्वामी आगे ॥
दया करो दाता मेरे ।
　चित चरनन लागे ॥ १ ॥
जन्म जन्म रही भूल में ।
　नहीं पाया भेदा ॥
काल करम के जाल में ।
　रही भोगत खेदा ॥ २ ॥
जगत जीव भरमत फिरें ।
　नित चारों खानी ॥
ज्ञानी जोगी पिल रहे ।
　सब मन की घानी ॥ ३ ॥
भाग जगा मेरा आदि का ।
　मिले सतगुरु आई ॥
राधास्वामी धाम का ।
　मोहि भेद जनाई ॥ ४ ॥
ऊँच से ऊँचा देस है ।
　वह अधर ठिकानी ॥

बिना संत पावे नहीं ।
　सुत शब्द निशानी ॥ ५ ॥
राधास्वामी नाम की ।
　मोहि महिमा सुनाई ॥
बिरह अनुराग जगाय के ।
　घर पहुँचूँ भाई ॥ ६ ॥
साध संग कर सार रस ।
　मैंने पिया अघाई ॥
प्रेम लगा गुरु चरन में ।
　मन शाँत न आई ॥ ७ ॥
तड़प उठे बेकल रहूँ ।
　कस पिया घर जाई ॥
दरशन रस नित नित लहूँ ।
　गहे मन थिरताई ॥ ८ ॥
सुरत चढ़े आकाश में ।
　करे शब्द बिलासा ॥
धाम धाम निरखत चले ।
　पावे निज घर बासा ॥ ९ ॥
यह आसा मेरे मन बसे ।
　रहे चित्त उदासा ॥

बिनय सुनो किरपा करो ।
दीजे चरन निवासा ॥ १० ॥
तुम बिन कोइ समरथ नहीं ।
जासे माँगूँ दाना ॥
प्रेम धार बरखा करो ।
खोलो अमृत खाना ॥ ११ ॥
दीन दयाल दया करो ।
मेरे समरथ स्वामी ॥
शुकर करूँ गावत रहूँ ।
नित राधास्वामी ॥ १२ ॥

॥ शब्द १२ ॥

गुरू मोहि लेओ आज अपनाई ॥ टेक ॥
जब से तन मन संग बँधाना ।
निज घर गया भुलाई ॥ १ ॥
माया बहु बिध भोग रचाये ।
तामें रहा लुभाई ॥ २ ॥
मन मूरख जग सँग लिपटाना ।
गुरु बचन नहीं पतियाई ॥ ३ ॥
सुरत शब्द मारग जो पाया ।
तामें नहीं लगाई ॥ ४ ॥

बि मेहर ह ब नहीं आवे ।
व घट में उलटाई ॥ ५ ॥
दया करो हे गुरू दयाला ।
प्रेम की धार बहाई ॥ ६ ॥
काँपत रहूँ के डर से ।
निरभय कर मोहि अधर चढ़ाई ॥ ७ ॥
राधास्वामी दयाल जीव उपकारी ।
लदी काज बनाई ॥ ८ ॥

॥ शब्द १३ ॥

न प्यारे मैं कहूँ बुझाई ॥ टे ॥
सतसँग रो चित्त दे गुरु ।
हिरदे बचन समाई ॥ १ ॥
या जग ो परदेस समाना ।
समझ भाव बरताई ॥ २ ॥
मन चित ोड़ गुरू चरनन ।
दिन दिन प्रीत ई ॥ ३ ॥
राधा ामी चरनन धर बिस्वासा ।
निस दिन भक्ति कमाई ॥ ४ ॥

सुरत शब्द मारग ले गुरु से ।
नित अभ्यास कराई ॥ ५ ॥
तन मन धन से सेवा करके ।
गुरु को लेओ रिझाई ॥ ६ ॥
चरनामृत परशादी लेकर ।
हिरदा शुद्ध राई ॥ ७ ॥
भय ौर भाव ज का छोड़ो ।
लज्या दूर हटाई ॥ ८ ॥
अस गुरु भक्ति कमाय उमँग से ।
नइ नइ प्रीत जगाई ॥ ९ ॥
परम पुरुष राधास्वामी दयाला ।
तोहि लैं नाई ॥ १० ॥
करम काट तोहि अधर चढ़ावैं ।
काल को मार गिराई ॥ ११ ॥
काज करैं तेरा ब बिध पूरा ।
सूरत चरन समाई ॥ १२ ॥
राधास्वामी दया करैं अस ब पर ।
जो आवैं सरनाई ॥ १३ ॥
याते प्यारे कहना मानो ।
पकड़ो उन चरनाई ॥ १४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

दरस मोहि दीजे स्वामी महराज ।
करम से पाया औसर आज ॥ १ ॥
तड़प रहा छिन छिन मेरा मन ।
मिलूँ स्वामी लिपट रहूँ चरनन ॥ २ ॥
दुक्ख मेरे हिरदे भया भारी ।
कहूँ किस आगे रहा हारी ॥ ३ ॥
करे मेरी तुम बिन कौन सहाय ।
बिना तुम दर्शन दुख क्स जाय ॥ ४ ॥
रूप निज तुम्हरा अगम अपार ।
मगन होय झाँकत रहूँ हर बार ॥ ५ ॥
सुरत मन चढ़ें अधर डगरी ।
निरख नभ त्रिकुटी सुन नगरी ॥ ६ ॥
गुफ़ा की खिड़की दो फिर खोल ।
सुनावो सत्तपुरुष का बोल ॥ ७ ॥
बीन धुन सुन हुई मस्तानी ।
अलख गत अगम की पहिचानी ॥ ८ ॥
चरन में प्रीतम के धाऊँ ।
दरस प्यारे राधास्वामी का पाऊँ ॥ ९ ॥

निचिंत होय बैठूँ काज सँवार ।
चरन प्यारे राधास्वामी मोर अधार॥१०॥
पिता प्यारे अब करो मेहर बनाय ।
मगन रहूँ दर्शन छिन छिन पाय॥११॥

॥ शब्द १५॥

छिन छिन मैं तुम्हरे आधारी ।
पल पल तुम्हरी याद सम्हारी ।
चरन तुम्हार हिये में धारी ।
अंग अंग से करूँ पुकारी ।
हे राधास्वामी पिता दयार ।
लीजे मुझ को आज उबार ॥ १ ॥
भरमत रही जगत के माहिँ ।
तुम से मिल अब पाई ठायँ ।
दृढ़ कर पकड़ी तुम्हरी बाँह ।
राखो मोहिँ चरन की छाँह ।
हे राधास्वामी अगम अपार ।
मोहि दिखाओ निज दीदार ॥ २ ॥
अनेक बिकार धरे थे मन मैं ।
दुखित रही मैं निस दिन तन मैं ।

दया तुम्हारी परख अपन मैं ।
सुखी हुई और रहूँ मगन मैं ।
हे राधास्वामी परम उदार ।
तुम्हरी दया का वार न पार ॥ ३ ॥
मानत रही ब्रह्म और देवा ।
बहु दिन करत रही उन सेवा ।
जब तुम मिले परम सुख देवा ।
तब पाया धुर घर का भेवा ।
हे राधास्वामी किरपा धार ।
भेद दिया तुम निज घर बार ॥ ४ ॥
मैं अति नीच निकाम नकार ।
नख सिख औगुन भरे बिकार ।
तुम दरशन दे लिया सम्हार ।
तन मन के मेरे तुम रखवार ।
हे राधास्वामी कुल दातार ।
मोहि निरगुन को लिया सुधार ॥ ५ ॥
महिमाँ तुम्हरी क्यौं कर गाई ।
कहत कहत मैं कहत लजाई ।
मेहर करी मोहि लिया अपनाई ।
निज चरनन की दइ सरनाई ।

हे राधास्वामी कुल करतार ।
सब रचना तुम्हरे आधार ॥ ६ ॥
वाह वाह तुम सतगुरु पूरे ।
वाह वाह तुम समरथ सूरे ।
रूप तुम्हार सिंध सत नूरे ।
सदा रहूँ तुम चरन हज़ूरे ।
हे राधास्वामी दया बिचार ।
राखो मोहि निज चरनन लार ॥ ७ ॥

॥ शब्द १६ ॥

लाज मेरी राखो गुरु महाराज ।
काल अँग मन से काढ़ो आज ॥ १ ॥
भरम रहा जग में भोगन संग ।
हुआ मैं इस मूरख से तंग ॥ २ ॥
निडर होय लहरन में बहता ।
बचन नहिं माने दुख सहता ॥ ३ ॥
करत रहे इच्छा का नित संग ।
भीँज रहा छिन छिन माया रंग ॥ ४ ॥
बचन गुरु सुनत रहा दिन रात ।
भरम बस मानत नहिं कोइ बात ॥५॥

भोग में गिरता बारम्बार ।
न लावे याद बचन गुरु सार ॥ ६ ॥
रत पछतावा पीछे ।
समय पर चूः जाय ॥ ७ ॥
मेहर पूरी रो दयाल ।
काट देव जल्दी जम का जाल ॥ ८ ॥
बिना राधास्वामी हिँ कोइ और ।
मेहर से चर में दें ठौर ॥ ९ ॥
होंय मोपै दि दि सहाय ।
ग देवें तुरत हटाय ॥ १० ॥
दया कर हेरो मेरी ोर ।
मिटाओ काल करम का ोर ॥ ११ ॥
सरन में पिता प्यारे तुम्हरी ।
लजावत मोहिँ नाच ॥ १२ ॥
यही मेरे अचरज चि समाय ।
करें गुरु क्यों नहिँ मेरी हाय ॥ १३ ॥
तुम्हारी गति हिँ जा ।
रहा मन बुद्धी सँग भरमान ॥ १४ ॥
सुनो मेरी बिनती गुरु दातार ।
लेव मुझ को बेग उबार ॥ १५ ॥

दया निधि राधास्वामी गुरु पूरे ।
मेहर कर देव मोहिँ घर मूरे ॥ १६ ॥
मगन रहुँ निस दिन चरन समाय ।
देव भय चिंता दूर बहाय ॥ १७ ॥

॥ बचन सातवाँ ॥

आरत बानी भाग पहिला

॥ शब्द १ ॥

ारत गाऊँ राधास्वामी आज ।
तन मन लीजे कीजे काज ॥ १ ॥
जग में रहूँ अचिंत उदासा ।
चरनन में चित सहज निवासा ॥ २ ॥
प्रेम सहित प्रीतम रँग राचा ।
सेवा कर मन होत हुलासा ॥ ३ ॥
छबि सतगुरु की अति मन भाई ।
काल रम दोउ देख डराई ॥ ४ ॥
दया मेहर क्या बरनूँ भाई ।
सतगुरु ने मोहि लिया अपनाई ॥ ५ ॥

ऊँचा मत और देस रँगीला ।
सहज जोग सुत शब्द रसीला ॥ ६ ॥
सतसँग कर अंतर और बाहर ।
चरन परस पहुँचूँ मैं धुर घर ॥ ७ ॥
अचरज देस और अचरज बानी ।
राधास्वामी चरन सुरत लिपटानी ॥८॥

॥ शब्द २ ॥

आरत गावे दास दयाला ।
संशय भरम सब दूर निकाला ॥ १ ॥
सतगुरु चरनन प्रीत बढ़ाई ।
मन और काल रहे मुरझाई ॥ २ ॥
नित नित उमँग नवीन उठाई ।
सोभा गुरु देखत हरखाई ॥ ३ ॥
प्रेम प्रीत का थाल सजाई ।
सुरत शब्द की जोत जगाई ॥ ४ ॥
बहु बिधि सामाँ धरे बनाई ।
उमँग सहित गुरु आरत गाई ॥ ५ ॥
समा बँधा मन अति हरषाई ।
आनँद मंगल चहुँ दिसि छाई ॥ ६ ॥

सुरत उमंग चढ़ी दस द्वारे ।
तीन लोक के होगई पारे ॥ ७ ॥
आगे सतगुरु धाम दिखाई ।
राधास्वामी चरनन जाय समाई ॥ ८ ॥

———•———

॥ शब्द ३ ॥

आज मेरे आनँद आनँद भारी ।
मिले मोहि सतगुरु पुरुष अपारी ॥ १ ॥
दया कर दरशन सहज दिया री ।
निरख छबि छिन में मन मोहा री ॥ २ ॥
बचन सुन हिय में प्रेम बढ़ा री ।
शब्द धुन घट में कीन उजारी ॥ ३ ॥
जगत मोहि लागा अब सुपना री ।
दया गुरु मेट दिया तपना री ॥ ४ ॥
प्रेम मेरे हिय में उमँग रहा री ।
करूँ ऐसे गुरु की आरत भारी ॥ ५ ॥
थाल अब भक्ती लीन सजा री ।
शब्द धुन निरमल जोत जगा री ॥ ६ ॥
गुरू मेरे अचरज बस्तर धारी ।
प्रेम अँग शोभा देखूँ भारी ॥ ७ ॥

हंस सँग गाऊँ आरत न्यारी ।
दरस गुरु करूँ सम्हार सम्हारी ॥ ८ ॥
सुरत की अजब लगी है तारी ।
मेहर गुरु कीन्ही आज करारी ॥ ९ ॥
पिंड तज चढ़ गई गगन अटारी ।
मानसर अक्षर धुन धर धारी ॥ १० ॥
महासुन चढ़ सतलोक सिधारी ।
पुरुष का रूप अनूप निहारी ॥ ११ ॥
अलख और अगम जाय परसा री ।
हुई राधास्वामी चरन दुलारी ॥ १२ ॥

॥ शब्द ४ ॥

उमँगत धूमत मन अति भारी ।
राधास्वामी आरत करूँ सिँगारी ॥ १ ॥
घूमत झूमत अँगअँग सारी ।
फूलत चटकत रंग बहारी ॥ २ ॥
बड़े भाग अब औसर पाया ।
राधास्वामी आरत सामाँ लाया ॥ ३ ॥
देस देस से बस्तर लाया ।
चमक दमक सोभा अधिकाया ॥ ४ ॥

सरधा थाल प्रेम की बाती ।
अमीँ धार रस जोत जगाती ॥ ५ ॥
उमँग उमँग आरत धुन गाती ।
प्रेम धार रस अधिक बहाती ॥ ६ ॥
सतगुरु सन्मुख लटपट आती ।
प्रेम उमँग नहिँ छिपत छिपाती ॥ ७ ॥
मेहर दया सतगुरु की चाहूँ ।
द्वारा खोल गगन धस जाऊँ ॥ ८ ॥
गुरु दर्शन कर भाग बढ़ाऊँ ।
आगे को फिर सुरत चढ़ाऊँ ॥ ९ ॥
दसम द्वार का पाट खुलाऊँ ।
तिरबेनी तीरथ परसाऊँ ॥ १० ॥
सहस धार अमृत बरषाऊँ ।
हंसन साथ मिलाप बढ़ाऊँ ॥ ११ ॥
भँवर गुफा मुरली धुन गाऊँ ।
सेत सूर का नूर दिखाऊँ ॥ १२ ॥
सत्तलोक चढ़ सीस नवाऊँ ।
पुरुष मेहर परशादी पाऊँ ॥ १३ ॥
अलख अगम का दर्शन करके ।
राधास्वामी चरन निपट लिपटाऊँ ।१४।

ब आरत ने की ी पूरी ।
राधास्वामी चरनन रहूँ हजूरी ॥ १५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

मैं गुरु की करूँगी आरती ।
सब चरन वारती ॥ १ ॥
बिरह प्रेम की जोत जगाती ।
हिरदे थाली स लाती ॥ २ ॥
फूल फूल कर हार चढ़ाती ।
ँग ँ बस्तर पहिराती ॥३ ॥
घंटा दंग बजाती ।
रँग बंसी बीन सुनाती ॥ ४ ॥
राग रागनी नइ धु गाती ।
समाँ बँधा कहा न जाती ॥ ५ ॥
अचरज सामाँ भोग धराती ।
अमीं सरोवर जल भर ी ॥ ६ ॥
गुरु प्रेम बढ़ाती ।
से राधास्वामी रि ी ॥ ७ ॥
दृढ़ परतीत हिये बि लाती ।
राधास्वामी २ सदा धियाती ॥ ८ ॥

महिमाँ राधास्वामी कही न जाती ।
दया मेहर परशादी पाती ॥ ९ ॥
एक आस बिस्वास धराती ।
चरन सरन की रहुँ रस माती ॥ १० ॥
राधास्वामी सँग छोड़ा कुल ज़ाती ।
राधास्वामी चरन सुरत मेरी राती ॥ ११ ॥

॥ शब्द ६ ॥

सुरत पिरेमन आरत लाई ।
उमँग उमँग गुरु न्मुख आई ॥ १ ॥
प्रेम प्रीत का थाल जाई ।
सूरज सूरज जोत जगाई ॥ २ ॥
सोभा गुरु देखत हरखाई ।
चँद्र चँद्र कोटिन छबि छाई ॥ ३ ॥
गुरु चरनन पर मा नवाई ।
तन मन धन सब भेंट ई ॥ ४ ॥
गगन मँडल धस नाद ई ।
चँद्र मुखी अमृत बरषाई ॥ ५ ॥
सोहँग मुरली भँवर सुहाई ।
सत्तलोक धुन बीन जाई ॥ ७ ॥

अलख अगम के पार चढ़ाई ।
राधास्वामी दर्श दिखाई ॥ ७ ॥
वहाँ जाय कर आरत गाई
सतगुरु प्रीतम लीन रिझाई ॥ ८ ॥
चरन सरन अब दृढ़ कर पाई ।
दया मेहर कुछ बरनि न जाई ॥ ९ ॥
जगा भाग गुरु गोद बिठाई ।
राधास्वामी अचरज रूप दिखाई ॥१०॥
क्या कहूँ सोभा बरनि न जाई ।
अचरज अचरज अचरज भाई ॥ ११ ॥
अब कुछ आगे कहा न जाई ।
राधास्वामी चरन रही लिपटाई ॥१२॥

॥ शब्द ७ ॥

सुरत रँगीली आरत धारी ।
जग सुख तज सतगुरु आधारी ॥ १ ॥
हिया कँवल थाली कर लाई ।
धुन बिबेक घट जोत जगाई ॥ २॥
घंटा संख मृदँग बजाई ।
अमीं धार सुन से चल आई ॥ ३ ॥

भँवरगुफा मुरली धुन बाजी ।
सतपुर माँहि बीन धुन गाजी ॥ ४ ॥
लख अगम के पार निशानी ।
राधास्वामी दर दिखानी ॥ ५ ॥
ाल रम बहु बिघन लगाई ।
राधास्वामी दया खेप निभ ाई ॥ ६ ॥
प्रेम प्रीत चरनन में लागी ।
राधास्वामी दरशन सूरत पागी ॥ ७ ॥
क्या महिमाँ ब राध ामी गाऊँ ।
बार बार चरनन बल जाऊँ ॥ ८ ॥
जगत जाल से आप बचाया ।
चरन सरन दे मोहिँ अपनाया ॥ ९ ॥
सुरत शब्द मारग बतलाया ।
बल पना दे अधर चढ़ाया ॥ १० ॥
सुरत रँगी ` रंग से ।
राधास्वामी गुन गाऊँ मैं ँग से ॥ ११ ॥
नि दिन रहूँ चरन र माती ।
राधास्वामी गोद खेलूँ दिन राती ॥ १२ ॥

॥ शब्द ८ ॥

धन धन धन मेरे सतगुरु प्यारे ।
करूँ आरती नैन निहारे ॥ १ ॥
सूरज मंडल थाल धराया ।
जोत चँद्रमा दीप जगाया ॥ २ ॥
हुइ धनवन्त चरन गुरु पाए ।
मगन रहूँ नित गुरु गुन गाए ॥ ३ ॥
मन चित से सेवूँ दिन राती ।
सतगुरु प्रेम रहूँ मद माती ॥ ४ ॥
काम क्रोध मेरे पास न आवे ।
लोभ मोह अब नहिँ भरमावे ॥ ५ ॥
छिन छिन दरशन सतगुरु चाहूँ ।
करम पछाड़ गगन चढ़ जाऊँ ॥ ६ ॥
सहसकँवल दल जोत जगाऊँ ।
त्रिकुटी जाय मृदंग बजाऊँ ॥ ७ ॥
सुन्न मंडल चढ़ अमीं चुआऊँ ।
भँवर गुफ़ा सोहंग धुन गाऊँ ॥ ८ ॥
सत्तलोक चढ़ बीन सुनाऊँ ।
सतगुरु चरनन माथ नवाऊँ ॥ ९ ॥

अलख अगम के चरन परस के ।
राधास्वामी के बल बल जाऊँ ॥ १० ॥
क्या महिमाँ मैं उन की गाऊँ ।
उमँग उमँग चरनन लिपटाऊँ ॥ ११ ॥

॥ शब्द ८ ॥

आनँद हरख अधिक हिये छाया ।
दास प्रेम रँग आरत लाया ॥ १ ॥
प्रीत रीत का थाल सजाया ।
शब्द प्रतीत जोत जगवाया ॥ २ ॥
बाजे अनहद सरस बजाया ।
मन अपंग को अधर चढ़ाया ॥ ३ ॥
गुरु चरनन में माथ नवाया ।
काल करम का दाव चुकाया ॥ ४ ॥
सतगुरु सेवा अति मन भाई ।
अमी सरोवर जल भर लाई ॥ ५ ॥
भँवर गुफा चढ़ सतपुर धाई ।
सत्तपुरुष धुन बीन सुनाई ॥ ६ ॥
अलख अगम के पार सिधाई ।
राधास्वामी के दरशन पाई ॥ ७ ॥

उमँग उमँग कर आरत गाई ।
दया मेहर परशादी पाई ॥ ८ ॥
प्रेम प्रीत चरनन ँ लागी ।
जगत भाव भय लज्या त्यागी ॥ ९ ॥
रोग सोग शाय सब टारे ।
चरन ँवल मेरे प्रान अधारे ॥ १० ॥
नित नित हिमाँ राधा ामी गाऊँ ।
चरन कँवल पर बल बल जा ँ ॥ ११ ॥
ब ारत यह हो गई पूरी ।
राधास्वामी रनन रहूँ हजूरी ॥ १२ ॥

॥ शब्द १० ॥

उमँग उठी हिय मेँ ति भारी ।
सतगुरु आरत करूँ सम्हारी ॥ १ ॥
छोड़ा दे और मान बड़ाई ।
सतगुरु चरन सरन मेँ आई ॥ २ ॥
बचन सुनत मेँ ति हरखाई ।
भेद पाय सुल चरन लगाई ॥ ३ ॥
दिन दिन प्रीत प्रतीत धिकाई ।
सेवा कर निरमल हो आई ॥ ४ ॥

जगा भाग कुल कालख नासे ।
सतगुरु प्रेम सुरत मन राचे ॥ ५ ॥
क्या महिमाँ मैं राधास्वामी गाऊँ ।
तन मन धन सब भेंट चढ़ाऊँ ॥ ६ ॥
उमँग बढ़ाय प्रेम हिय लाऊँ ।
आरत उनकी बिबिध सजाऊँ ॥ ७ ॥
भाँत भाँत की सामाँ लाऊँ ।
भाव भक्ति का थाल सजाऊँ ॥ ८ ॥
बिरह अनुराग की जोत जगाऊँ ।
सतगुरु सन्मुख आरत लाऊँ ॥ ९ ॥
सुरत चढ़ाय गगन पर धाऊँ ।
गुरु पद परस सरोवर न्हाऊँ ॥ १० ॥
भँवरगुफ़ा मुरली धुन गाऊँ ।
सच्चखंड सतपुरुष मनाऊँ ॥ ११ ॥
अलख अगम के पार सिधाऊँ ।
राधास्वामी चरन समाऊँ ॥ १२ ॥

॥ शब्द ११ ॥

आज सखी सब जुड़ मिल आओ ।
राधास्वामी की आरत गाओ ॥ १ ॥

आनँद मंगल चहुँ दिसि छाई ।
प्रेम बदरिया बरखा लाई ॥ २ ॥
तन मन सुरत भींज रही सारी ।
फूल रही भक्ती फुलवारी ॥ ३ ॥
उमँग उठी हिय में अति भारी
सतगुरु चरनन आरत धारी ॥ ४ ॥
बिरह अनुराग थाल धर लाई ।
प्रेम लगन की जोत जगाई ॥ ५ ॥
गरजत गगन शब्द धुन आई ।
घंटा संख मृदंग बजाई ॥ ६ ॥
सुरत जगी लागी दस द्वारे ।
मगन हुई सुन धुन झनकारे ॥ ७ ॥
अमीं झड़त बरसत चौधारी ।
रूप अनूप चँद्र उजियारी ॥ ८ ॥
और बिलास अनेक दिखाई ।
हिय बिच प्रीत प्रतीत बढ़ाई ॥ ९ ॥
मेहर दया राधास्वामी की परखी ।
ऊपर चढ़ झाँकी सत खिड़की ॥ १० ॥
सत्तलोक का द्वारा सोई ।
मुरली धुन सुन सुरत समोई ॥ ११ ॥

ग गे चल पहुँची सतपुर में ।
मधुर बीन धुन सुनी अधर में ॥ १२॥
ल लख अगम ा दरशन करके ।
राधास्वामी चरन जाय कर परसे ॥ १३ ॥
प्रेम उमँग से आरत धारी ।
राधास्वामी मेहर करी ति भारी ॥१४॥
मैं अनजान मरम नहिं जाना ।
अपनी दया से गुरु दिया दाना ॥ १५ ॥
र और सुरत चरन में मेलूँ ।
बाल समान गोद गुरु खेलूँ ॥ १६ ॥
राधास्वामी ज किए ब पूरे ।
स ुरत हुई उन चरनन धूरे ॥ १७ ॥

॥ शब्द १२ ॥

सुरत सुहागिन करत आरती ।
तन मन धन गुरु चरन वारती ॥ १ ॥
ँवल कियारी थाल सजाती ।
धुन फुलवार जोत जगवाती ॥ २ ॥
फूल फूल कर न्सु ाती ।
ली कली बिगस धराती ॥ ३ ॥

गुरु दरशन कर अति हरषाती ।
भूषण बस्तर बहु पहिनाती ॥ ४ ॥
गुरु सोभा मन अधिक सुहाती ।
उमँग बढ़ाय गगन को जाती ॥ ५ ॥
सहसकँवल फुलवार खिलाती ।
त्रिकुटी चढ़ गुरु दरशन पाती ॥ ६ ॥
सुरत चमेली सुन में खिलाती ।
भँवरगुफा चढ़ बंस बजाती ॥ ७ ॥
सूरजमुखी सेत दरसाती ।
सत्तलोक धुन बीन सुनाती ॥ ८ ॥
अलख अगम के पार पराती ।
परम पुरुष का दरशन पाती ॥ ९ ॥
आरत कर गुरु बहुत रिझाती ।
दया मेहर परशादी पाती ॥ १० ॥
तन मन से नाता तुड़वाती ।
राधास्वामी चरनन माँहि समाती ॥११॥

॥ शब्द १३ ॥

प्रेमी दूर देस से आया ।
सतगुरु दरशन कर हरखाया ॥ १ ॥

बचन सुनत चित प्रेम बढ़ारी ।
भजन करत परतीत करारी ॥ २ ॥
शोभा गुरु देखत हुलसाना ।
उमँग उमँग कर सन्मुख आना ॥ ३ ॥
नित्त नवीन प्रीत उमगाई ।
मन चित से चरनन लौ लाई ॥ ४ ॥
अनहद बाजा घट में बाजे ।
रूप अनूप हिये बिच राजे ॥ ५ ॥
बड़े भाग जागे अब मेरे ।
मन और सुरत हुई गुरु चेरे ॥ ६ ॥
आरत करूँ राधास्वामी चरनन में ।
पाऊँ दया और रहूँ अमन में ॥ ७ ॥

॥ शब्द १४ ॥

मेरे प्यारे गुरू किरपाल ।
चरनन लागूँगी ॥ १ ॥
मैं तो मोह रही छबि देख ।
रूप निहारूँगी ॥ २ ॥
मोहि रूप अनूप दिखान ।
हिय बिच धारूँगी ॥ ३ ॥

मोपै सतगुरु कीनी मेहर ।
काल पछाड़ूँगी ॥ ४ ॥
तो परख रही गुरु बै ।
भरम सब टारूँगी ॥ ५ ॥
तो सतसँग धारूँ नित्त ।
को जारूँगी ॥ ६ ॥
मेरे उ ँग उठी हि ाँहि ।
आरत धारूँगी ॥ ७ ॥
भक्ती की जोत सुधार ।
हिये बिच बारूँगी ॥ ८ ॥
प्यारे सतगुरु सन्मु ाय ।
आरत वारूँगी ॥ ९ ॥
गगना में सुरत चढ़ा ।
दरश गुरु पाऊँगी ॥ १० ॥
राधास्वामी पद दर ान ।
सरन समाऊँगी ॥ ११ ॥

॥ शब्द १५ ॥

सतगुरु सँग आरत गाऊँ ।
तर ॥ १ ॥

मन चित   ा थाल   जा ँ ।
चरनन ध्यान जोत जगवाऊँ ॥ २ ॥
खिल खिल कर मैं सन्मुख आऊँ ।
सतगुरु प्रीतम खूब रिझाऊँ ॥३॥
दया दृष्टि सतगुरु की पाऊँ ।
मन और सुरत गगन चढ़वाऊँ ॥ ४ ॥
तिरबेनी   ान   रा ँ
भँवर गुफ़ा का शब्द सुनाऊँ ॥ ५ ॥
सत्त लोक सत शब्द जगाऊँ ।
अलख अगम के पार चढ़ाऊँ ॥६॥
राधास्वामी धाम ऊँच से ऊँचा ।
परम संत बिन ोइ न पहुँचा ॥ ७ ॥
ब्रह्मा बिष्णु महादेव थाके ।
दस ौतार काल घर झाँके ॥ ८ ॥
षट दरशन और देवी देवा ।
माया ब्रह्म ी करते सेवा ॥ ९ ॥
  देस उन भेद न जाना ।
काल जाल में रहे भुलाना ॥ १० ॥
मेरा भाग उदय होय आई ।
राधास्वामी चरन सरन मैं पाई ॥ ११ ॥

सेवा करूँ और भाग बढ़ाऊँ ।
गुरु दरशन पर बल जाऊँ ॥ १२ ॥
रूप अनूप हिये बि धारूँ ।
तन मन धन सबही तज डारूँ ॥ १३ ॥
राधास्वामी मेहर करी ब भारी ।
मुझ निकाम को लिया उबारी ॥ १४ ॥

॥ शब्द १६ ॥

गुरुमुख प्यारे उमँग उठाई ।
सतगुरु आरत करूँ बनाई ॥ १ ॥
प्रेम प्रीत से सामाँ लाया ।
सतगुरु सन्मु आन धराया ॥ २ ॥
चिंत दीप थाल बनाया ।
हुज दीप की जोत जगाया ॥ ३ ॥
प्रेम प्रीत से आरत साजी ।
भँवरगुफ़ा ढिंग सूरत गाजी ॥ ४ ॥
फेर फेर कर आरत लाया ।
गुन गावत चित अति हरखा ॥ ५ ॥
क्या महिमा सतगुरु गाऊँ ।
चरन सरन हिया उमगा ॥ ६ ॥

हुए प्रसन्न सतपुरु दयाला।
दिया दान मोहि किया निहाला ॥ ७ ॥
सत्तनाम की सुध पाई ।
रैन दिवस रहूँ सुरत लगाई ॥ ८ ॥
अलख अगम के पार निशाना ।
राधास्वामी पद दरसाना ॥ ९ ॥
गत वाकी कोइ न जाने ।
मेहर दया होय पहिचाने ॥ १० ॥
नाम अनाम पदारथ सारा
दान दिया किया सब से न्यारा ॥ ११ ॥
महिमा राधास्वामी बरनी न जाई ।
उमँग उमँग चित चरन लगाई ॥ १२ ॥
बड़े भाग जागे क्या कहना ।
नाम अमीरस निस दिन पीना ॥ १३ ॥
काल देस से तुरत हटाया ।
करम भरम सब दूर कराया ॥ १४ ॥
चरन सरन दे लिया पनाई ।
मन इच्छा सब दूर बहाई ॥ १५ ॥
गुरु परताप कहा नहिँ जाई ।
नित्त रहूँ चरनन लौ लाई ॥ १६ ॥

दीन दयाल जीव हितकारी ।
भौजल से मोहि पार उतारी ॥ १७ ॥
छिन छिन हिमाँ प्रीतम गाऊँ
राधास्वामी सदा धियाऊँ ॥ १८ ॥
नित नित मैं गुन गाऊँ तुम्हारे ।
धन धन धन धन राधास्वामी प्यारे ॥१९॥

॥ शब्द १७ ॥

रत रँगीली आरत लाई ।
धूम धाम धुन शब्द चाई ॥ १ ॥
घंटा लगे घट बजने ।
ताल दँग और मेघ गरजने ॥ २ ॥
चन्द्र चाँदनी सारँग बाजी ।
सूर मुरली गाजी ॥ ३ ॥
कोट र और चन्द्र प्रकाशा ।
इ रोम पुरुष के बासा ॥ ४ ॥
अमीँ धार र नि दिन पी ।।
नकारँ अद धुन बीना ॥ ५ ॥
बिरह अनुराग थाल कर लाई ।
प्रीत , ीत जोत जगवाई ॥ ६ ॥

आरत लेकर सन्मुख फेरी ।
सतगुरु दया दृष्टि कर हेरी ॥ ७ ॥
पाँचो चोर पकड़ कर लाई ।
सतगुर अज्ञा दीन बँधाई ॥ ८ ॥
मन और सुरत सरन में धाए ।
काल और करम रहे मुरझाए ॥ ९ ॥
नित नित प्रीत नवीन जगाती ।
उमँग उठत नहिँ छिपत छिपाती ॥ १० ॥
गुरु दरशन कर अति हरखाती ।
गुरु मूरत हिये माँहि धराती ॥ ११ ॥
भक्ति पौद सींचूँ दिन राती ।
प्रेम प्रीत फुलवार खिलाती ॥ १२ ॥
चुन चुन कलियाँ हार बनाती ।
उमँग सहित सतगुरु पहिनाती ॥ १३ ॥
हुए प्रसन्न गुरु दीन दयाला ।
दिया दान और किया निहाला ॥ १४ ॥
राधास्वामी मेहर भाग से पाई ।
आरत पूरन करी बनाई ॥ १५ ॥

॥ शब्द १८ ॥

बिरह अनुराग हिये भारी ।
सतगुरु दरशन करूँ सुधारी ॥ १ ॥
बाल अवस्था दरशन पाए ।
मेहर हुई गुरु रन लगाए ॥ २ ॥
नहिँ जानी ।
दया हुई पहिचानी ॥ ३ ॥
चरन कँवल गुरु हिय बि धारे ।
करम भरम सब टारे ॥ ४ ॥
दरशन कर हि ीत बढ़ाई ।
बचन सुनत परतीत सवाई ॥ ५ ॥
बिन सतगुरु वार रहाए ।
शब्द ि । कोइ पार ाए ॥ ६ ॥
मेरा अि रा ।
सतगुरु ने मोहिँ सँवारा ॥ ७ ॥
परम पुरुष राधास्वामी दयाला ।
सहज मिले और कि निहाला ॥ ८ ॥
गुरु परताप आई ।
हुआ मन पाई ॥ ९ ॥

आरत लेकर सन्मुख फेरी ।
सतगुरु दया दृष्टि कर हेरी ॥ ७ ॥
पाँचो चोर पकड़ कर लाई ।
सतगुरु अज्ञा दीन बँधाई ॥ ८ ॥
मन और सुरत सरन में धाए ।
काल और करम रहे मुरझाए ॥ ९ ॥
नित नित प्रीत नवीन जगाती ।
उमँग उठत नहिं छिपत छिपाती ॥१०॥
गुरु दरशन कर अति हरखाती ।
गुरु मूरत हिये माँहि धराती ॥ ११ ॥
भक्ति पौद सींचूँ दिन राती ।
प्रेम प्रीत फुलवार खिलाती ॥ १२ ॥
चुन चुन कलियाँ हार बनाती ।
उमँग सहित सतगुरु पहिनाती ॥ १३ ॥
हुए प्रसन्न गुरु दीन दयाला ।
दिया दान और किया निहाला ॥१४॥
राधास्वामी मेहर भाग से पाई ।
आरत पूरन करी बनाई ॥ १५ ॥

॥ शब्द १८ ॥

बिरह नुराग उठा हिये भारी ।
तगुरू दर न रूँ धारी ॥ १ ॥
बाल अवर । दर न पाए ।
मेहर हुई गुरू चरन लगाए ॥ २ ॥
जान गत मत नहिँ जानी ।
दया हुई तब पहिचानी ॥ ३ ॥
रन कँवल गुरू हिय बिच धारे ।
रम भरम शय ब टारे ॥ ४ ॥
दर न र हिय प्रीत बढ़ाई ।
बचन परतीत सवाई ॥ ५ ॥
बिन तगुरू ब वार रहाए ।
शब्द बिना कोइ पार जाए ॥ ६ ॥
मेरा भाग गा ति भारा ।
तगुरू ने मोहिँ आप वारा ॥ ७ ॥
परम पुरुष राधा ामी दयाला ।
सहज मिले ौर ि या निहाला ॥८ ॥
गुरू पर प रत ढ़ ाई ।
मगन हुआ मन धुन न पाई ॥ ९ ॥
जोत निरंजन रहे लगाई ।
त्रिकुटी महल गुरू गैल लखाई ॥ १० ॥

अक्षर पुरुष किया अति प्यारा ।
ररंकार धुन सुनी झनकारा ॥ ११ ॥
मानसरोवर निरमल धारा ।
कर अस्नान हु I न्यारा ॥ १२ ॥
भँवरगुफा चढ़ सतपुर धाया ।
सत्तनाम I दरशन पाया ॥ १३ ॥
हुए प्रसन्न सतपुरुष दयाला ।
अलख गम का लखा उजाला ॥ १४ ॥
राधास्वामी दरस मेहर से पाया ।
उमँग उमँग कर आरत गाया ॥ १५ ॥
शोभा राधा मी क्योंकर गाऊँ ।
बार बार चरनन बलि जाऊँ ॥ १६ ॥
यह निज धाम पायगा सोई ।
जापर दया राधास्वामी की होई ॥ १७ ॥

॥ शब्द १९ ॥

बिरह अनुराग दास घट आया ।
सतगुरु सन्मुख आरत लाया ॥ १ ॥
चुन चुन कलियन हार बनाया ।
शब्द गुरू के गल पहिनाया ॥ २ ॥

सहस ँवल का थाल बनाया ।
बंकनाल धुन जोत जगाया ॥ ३
उमँग उमँग कर आरत गाया ।
घंटा शंख मृदंग बजाया ॥ ४ ॥
सुरत जगी लागी दस द्वारे ।
तीन लोक के होगई पारे ॥ ५ ॥
चढ़ी महासुन खिड़की खोली ।
सोहँग मुरली धुन जहाँ बोली ॥ ६ ॥
वहाँ से चल पहुँची सतपुर में ।
सतगुरु दरशन पाए अधर में ॥ ७ ॥
मीँ हार बिलास नवीना ।
मलय सुगंध मधुर धुन बीना ॥ ८ ॥
देखा अचरज कहा न जाई ।
शोभा सतगुरु क्योंकर गाई ॥ ९ ॥
अलख पुरुष तिस आगे देखा ।
गम पुरुष तिस ऊपर पेखा ॥१०॥
राधास्वामी धाम अजब दरसाना ।
कह पार अनाम बखाना ॥ ११ ॥
राधास्वामी महिमाँ कस कह गाऊँ ।
चरन सरन में निस दिन धाऊँ ॥ १२ ॥

ज्ञान मते में दिवस गँवाए ।
सुक्ख न पाया रीते आए ॥ १३ ॥
महिमाँ राधास्वामी सुनी बनाई ।
खोजत खोजत सन्मुख आई ॥ १४ ॥
राधास्वामी मेहर दृष्ट से देखा ।
सुरत शब्द का दीना लेखा ॥ १५ ॥
सतसँग में मोहिं लीन लगाई ।
करम धरम सब दूर नसाई ॥ १६ ॥
दिन दिन प्रीत प्रतीत बढ़ाई ।
न्यारा कर मोहिं लिया अपनाई ॥ १७ ॥
मैं अजान उन गत नहिं जाना ।
अपनी दया से दिया मोहिं दाना ॥ १८ ॥
जगेभाग गुरु मूरत चीन्ही ।
राधास्वामी चरन सुरत हुई लीनी ॥ १९ ॥
पाई सरन मेहर हुई भारी ।
राधास्वामी पै मैं जाऊँ बलिहारी ॥ २० ॥
हुई आरती अब सम्पूरन ।
सुरत समाई राधास्वामी चरनन ॥ २१ ॥

॥ शब्द २० ॥

प्रीत प्रतीत हिये भई भारी ।
दास आरती करन बिचारी ॥ १ ॥
शब्द बिबेक थाल लिया हाथा ।
अमीं धार धुन जोत जगाता ॥ २ ॥
र सतसँग भरम सब नासा ।
सुरत चढ़ी पहुँची आकाशा ॥ ३ ॥
सहसकँवल घंटा धुन आई ।
जग मग जग मग जोत जगाई ॥ ४ ॥
बँकनाल धस त्रिकुटी आई ।
गुरु दरशन कर ति हरखाई ॥ ५ ॥
मान रोवर ा ए शनाना ।
हंस मंडली जाय समाना ॥ ६ ॥
भँवरगुफ़ा की धुन सुन पाई ।
सत्तलोक में पहुँची धाई ॥ ७ ॥
अलख अगम परसे पद दोई ।
राधास्वामी चरनन सुरत समोई ॥ ८ ॥
महिमाँ राधास्वामी ही न जाई ।
बेद कतेब रहे शरमाई ॥ ९ ॥

मेरा भाग उदय हो आया ।
राधास्वामी चरन धियाया ॥ १० ॥
मेहर दया परशादी पाऊँ ।
चरन सरन पर बल बल जाऊँ ॥ ११॥

॥ शब्द २१ ॥

सतगुरु की ब आरत गाऊँ ।
करम भरम तज चरन धियाऊँ ॥ १ ॥
थाल प्रीत का हिये सजाऊँ ।
दृढ़ परतीत जोत जगवाऊँ ॥ २ ॥
कुटँब देस तज सन्मुख आया ।
मेहर हुई घट प्रेम बढ़ाया ॥ ३ ॥
सेवा कर मन होत हुलासा ।
सतगुरु चरन बँधी मम आसा ॥ ४ ॥
संसय रोग हटाया दूरा ।
सुरत शब्द का पाया नूरा ॥ ५ ॥
नित नई प्रीत हिये उमगावत ।
चरन सरन मैं निस दिन धावत ॥ ६ ॥
दीन ग़रीबी चित्त समाई ।
आरत कर गुरु लीन रिझाई ॥ ७ ॥

मेहर हुई सुत नभ पर धाई।
त्रिकुटी चढ़ धुन गरज सुनाई ॥ ८ ॥
मानसरोवर जल भर लाता।
करमँडल ले गुरू पिलाता ॥ ९ ॥
भँवरगुफ़ा मुरली बजवाता।
सत्तलोक धुन बीन सुनाता ॥ १० ॥
अलख अगम के पार चढ़ाता।
राधास्वामी चरनन माहिँ समाता ॥ ११ ॥

॥ शब्द २२ ॥

दास सूर मन सरधा लाया।
सत ँग कर घट प्रेम बढ़ाया ॥ १ ॥
भइ परतीत उमँग उठी भारी।
राधास्वामी रत करन बिचारी ॥ २ ॥
बिरह ा थाल प्रेम ी जोती।
गावत गुन कल मल हिये धोती ॥ ३ ॥
प्रीत हित आरत नित गाता।
उमँग उमँग चरनन चित लाता ॥ ४ ॥
मेहर करी गुरु लिया पनाई।
शब्द घोर घट माँहि सुनाई ॥ ५ ॥

निरमल होय सुरत आगे चाली ।
सहसकँवल धुन घंट सम्हाली ॥ ६ ॥
त्रिकुटी चढ़ गुरु दर्शन पाया ।
सुन्न में जाय सरोवर न्हाया ॥ ७ ॥
भँवरगुफ़ा का द्वार खुलाया ।
सत्तलोक सतपुरुष जगाया ॥ ८ ॥
अलख अगम को निरखत वरसा ।
राधास्वामी चरन जाय फिर परसा ॥ ९ ॥
भाग जगे घट हुइ उजियारी ।
राधास्वामी चरन सरन हिये धारी ॥ १० ॥
नित नित महिमाँ राधास्वामी गाऊँ ।
गावत गावत कभी न अघाऊँ ॥ ११ ॥
बर माँगूँ मोहिं दीजे दाता ।
चरन तुम्हार मोर रहे माथा ॥ १२ ॥

॥ शब्द २३ ॥

बिरहन सुरत सोच मन भारी ।
कस जागे घट प्रीत करारी ॥ १ ॥
दृढ़ परतीत हिये बिच आवे ।
दर्शन कर गुरु चरन समावे ॥ २ ॥

चरनन माँहि रहे लौ लीना ।
शब्द अमी रस निस दिन पीना ॥ ३ ॥
सतसँग नित हित चित से करती ।
राधास्वामी २ हिये बिच धरती ॥ ४ ॥
जब तब सँसय रोग सतावे ।
तड़प तड़प ब्याकुल हो जावे ॥ ५ ॥
नित निज बिनती करूँ बनाई ।
हे राधास्वामी तुम होव सहाई ॥ ६ ॥
उमँग सहित तुम आरत धारूँ ।
करम भरम तज तन मन वारूँ ॥ ७ ॥
दया मेहर परशादी चाहूँ ।
चरन सरन में दृढ़ कर धाऊँ ॥ ८ ॥
हुए प्रसन्न राधास्वामी दयाला ।
दया करी काटा जंजाला ॥ ९ ॥
चरन सरन दे लिया अपनाई ।
मन और सूरत गगन चढ़ाई ॥ १० ॥
सहसकँवल होय त्रिकुटी आई ।
सुन्न के परे गुफ़ा दरसाई ॥ ११ ॥
सत्तपुरुष के चरन निहारे ।
अलख अगम के हो गई पारे ॥ १२ ॥

वहाँ से चली अधर को प्यारी ।
राधास्वामी दरश निहारी ॥ १३ ॥
अब क्या भाग सराहूँ अपना ।
राधास्वामी २ निस दिन जपना ॥ १४ ॥
अब आरत यह हो गई पूरी ।
सुरत हुई निज चरनन धूरी ॥ १५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

खेल रही सूरत मतवारी ।
गुरु चरनन में प्रीत करारी ॥ १ ॥
कँवल कियारी फूल सँवारी ।
भक्ति पौद सींचे बनवारी ॥ २ ॥
कली कली गुल शब्द खिलाई ।
धुन झनकार अमीं बरसाई ॥ ३ ॥
अष्ट कँवल दल थाल बनाई ।
शब्द प्रकाश जोत जगाई ॥ ४ ॥
सूरजमुखी खिला गुरु द्वारे ।
सेत चाँदनी सुन्न निहारे ॥ ५ ॥
चंपा खिला भँवर की कलियाँ ।
सेत पदम सतलोक दमनियाँ ॥ ६ ॥

हँ तहँ फूल रही फुलवारी ।
कँवल कँवल ी शोभा न्यारी ॥ ७ ॥
सरवर तरवर अनेक दिखाई ।
शोभा उनकी बरनी न जाई ॥ ८ ॥
कोटिन ूर चंद फल लागे ।
सुरत मगन हुई अचरज ताके ॥ ९ ॥
मीँ धार ी बरखा भारी ।
सत्तपुरुष ुत छबि धारी ॥ १० ॥
दर न करत सुरत हरखानी ।
तगुरु की गत अगम बखानी ॥ ११ ॥
वहाँ से चली अधर को धाई ।
अलख अगम का भेद सुनाई ॥ १२ ॥
तिसके परे नामी लेखा ।
रूप रंग नहिँ और नहिँ रेखा ॥ १३ ॥
यह निज देस संत का जाना ।
राधा ामी नाम बखाना ॥ १४ ॥
जोगी ज्ञानी सब थक बैठे ।
मान और अहंकार रहे ऐंठे ॥ १५ ॥
संत सरन महिमाँ नहिँ जानी ।
संत बचन नहिँ किये प्रमानी ॥ १६ ॥

संत दया कर बहु समझावैं ।
यह मन मुखो चित्त नहिँ लावैं ॥ १७॥
बाच्य लक्ष का निरने करते ।
लक्ष माहिँ वे बिरती धरते ॥ १८ ॥
लक्ष रूप को ब्यापक माना ।
सुरत चेतन्य का मरम न जाना ॥ १९॥
मम चेतन में जाय समाई ।
येही लक्ष रूप ठहराई ॥ २० ॥
काल देश में रहे भुलाने ।
दयाल देस की ख़बर न जाने ॥ २१ ॥
याते जन्म मरन नहिँ छूटा ।
फिर फिर चौरासी जम लूटा ॥ २२ ॥
अपना भाग सराहूँ भाई ।
राधास्वामी चरन सरन में पाई ॥ २३॥
किरपा कर मोहि लिया अपनाई ।
काल जाल से लिया बचाई ॥ २४ ॥
सतसँग कर हिये दृष्टि खुलानी ।
संत मते की महिमाँ जानी ॥ २५ ॥
उमँग सहित यह आरत गाऊँ ।
राधास्वामी मेहर परशादी पाऊँ ॥ २६॥

नित नित सूरत शब्द लगाऊँ ।
राधास्वामी चरनन सहज समाऊँ ॥ २७ ॥

॥ शब्द २५ ॥

मूल नाम को खोजो भाई ।
सतगुरु यों कहि कहि समझाई ॥ १ ॥
बिना शब्द नहिं होत उधारा ।
जगत जाल से होय न न्यारा ॥ २ ॥
ताते प्रीत गुरू की कीजे ।
तन मन शब्द माहिं अब दीजे ॥ ३ ॥
भाग जगे गुरु चरन निहारे ।
मेहर हुई घट प्रीत सम्हारे ॥ ४ ॥
सत सँग कर परतीत बढ़ाऊँ ।
सतगुरु दरशन नित नित चाहूँ ॥ ५ ॥
बंधन तोड़ हुई अब न्यारी ।
गुरु चरनन में प्रेम बढ़ारी ॥ ६ ॥
आरत कर घट देखूँ नूरा ।
चरन सरन फल पाऊँ पूरा ॥ ७ ॥
परम पुरुष राधास्वामी प्यारे ।
उन चरनन में रहूँ सदारे ॥ ८ ॥

॥ शब्द २६ ॥

बिरह अनुराग रहा घट छाई ।
उमँग उमँग गुरु सन्मुख आई ॥ १ ॥
दरशन करत देह सुध भूली ।
बचन सुनत पाया फल मूली ॥ २ ॥
भाव भक्ति की धारा उमँगी ।
फैल रही चहुँ दिस अँग अंगी ॥ ३ ॥
गुरु परतीत बढ़ी घट अंतर ।
प्रेम सहित सुनियाँ गुरु मंतर ॥ ४ ॥
कस कस भाग सराहूँ अपना ।
मेहर हुई जग लागा सुपना ॥ ५ ॥
भोग बिलास कछू नहिं भावें ।
मन तरंग अब नाहिं भरमावें ॥ ६ ॥
छिन छिन दरशन गुरु का चाहूँ ।
मन मोहन छबि पर बलि जाऊँ ॥ ७ ॥
काल करम बहु बिघन लगाये ।
सतसँग से मोहि दूर रखाये ॥ ८ ॥
तरसूँ और तड़पूँ दिन राती ।
जतन मोर कोइ पेश न जाती ॥ ९ ॥

बारम्बार बी ी धारी ।
हे सतगुरू मोहि लेउ सम्हारी ॥ १० ॥
दूर रहूँ ु चरन निहारूँ ।
रूप अनूप हिये बिच धारूँ ॥ ११ ॥
ौर सुरत शब्द र पावैं ।
चरन सरन में हज सम्मावैं ॥ १२ ॥
काल बिघन सब कीजे दूरी ।
तब पाऊँ दरश हजूरी ॥ ३ ॥
यह अरज़ी मेरी सुन लीजे ।
दृढ़ परतीत चरन ँ दीजे ॥ १४ ॥
हर हरख यह रत करता ।
राधा ी चरन हिये बिच धरता ॥१५॥

॥ शब्द २७ ॥

ारत गावे सेवक प्यारा ।
गुरू चरनन प्रीत सम्हारा ॥ १ ॥
प्रीत हित ि दर र ।
बँदगी र पर ादी लेता ॥ २ ॥
ँग ँग गुरू सेवा ।
राधास्वामी-२ दि २ ॥ ३ ॥

गुरु अज्ञा हित चित से माने ।
गुरु सम दूसर और न जाने ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरनन प्रीत बढ़ाता ।
आरत कर राधास्वामी रिझाता ॥ ५ ॥
निस दिन खेलत सतगुरु पासा ।
बिन गुरु चरन और नहिं आसा ॥ ६ ॥
दया मेहर गुरु कीनी भारी ।
मैं भी उन चरनन बलिहारी ॥ ७ ॥
प्रेम आनंद बिलास नवीना ।
निस दिन देखूँ रहूँ अधीना ॥ ८ ॥
गुरु परताप रहा घट छाई ।
छिन छिन चरन कँवल लौ लाई ॥ ९ ॥
नाम सुधा रस निस दिन पीना ।
घंटा संख बजे धुन बीना ॥ १० ॥
गरज गरज मिरदंग सुनाई ।
सारँग मुरली बजे सुहाई ॥ ११ ॥
अलख अगम की धुन सुन पाई ।
राधास्वामी चरन धिआई ॥ १२ ॥
भाग जगे सतगुरु सँग पाया ।
सहज सरूप अनूप दिखाया ॥ १३ ॥

दया मेहर कुछ बरनि न जाई।
चरन सरन मैं निज कर पाई ॥ १४ ॥
महिमा राधास्वामी कहाँ लग भाखूँ।
धन धन धन धन राधास्वामी आखूँ ॥१५॥

॥ शब्द २८ ॥

सतगुरु पूरे परम उदारा।
दया दृष्टि से मोहि निहारा ॥ १ ॥
दूर देश से चल कर आया।
दरशन कर मन अति हरखाया ॥ २ ॥
सुन सुन बचन प्रीत हिय जागी।
चरन सरन में सुरत पागी ॥ ३ ॥
करम भरम सँसय सब भागा।
राधास्वामी चरन बढ़ा अनुरागा ॥ ४ ॥
सुरत शब्द मारग दरसाया।
बिरह अंग ले ताहि कमाया ॥ ५ ॥
कुल कुटुँब का मोह छुड़ाना।
सत संगत में मन ठहराना ॥ ६ ॥
सुमिरन भजन रसीला लागा।
सोता मन धुन सुन कर जागा ॥ ७ ॥

मेहर हुई सुत नभ पर दौड़ी ।
त्रिकुटी जा गुरु चरनन जोड़ी ॥ ८ ॥
चरज लीला देखी सुन में ।
मुरली धुन अब पड़ी श्रवन में ॥ ९ ॥
पहुँची फिर सतगुरु दरबारा ।
अलख अगम को जाय निहारा ॥ १० ॥
वहाँ से भी फिर अधर सिधारी ।
मिल गए राधास्वामी पुरुष अपारी ॥ ११ ॥
वहाँ जाय कर आरत गाई ।
पूरन दया दास ने पाई ॥ १२ ॥

॥ शब्द २९ ॥

गुरु प्रेम बढ़ा मन में ।
सुत लगी जाय चरनन में ॥ १ ॥
निस दिन रहे यही गुनावन ।
सेवा कर गुरू रिझावन ॥ २ ॥
गुरु मेहर करूँ क्या बरनन ।
परतीत दई निज चरनन ॥ ३ ॥
मोहि जग से न्यारा कीन्हा ।
निज भेद चरन का दीन्हा ॥ ४ ॥

न सुरत रहैं लौ लीना ।
गुरु बिन कोइ और चीन्हा ॥ ५ ॥
मेरे सतगुरु परम उदारा ।
कर दया जीव निस्तारा ॥ ६ ॥
व वारूँ गुरु पर ई ।
धन तुच्छ दिखाई ॥ ७ ॥
तुम्हारी प्यारी ।
ब सरबस हुई तुम्हारी ॥ ८ ॥
जस ानो लेव म्हारी ।
चर ँ रहूँ सदा री ॥ ९ ॥
मेरे दाता दीन दयाला ।
दरशन दे करो निहाला ॥ १० ॥
दृष्टि खोलिए प्यारे ।
निज रूप अनूप निहारे ॥ ११ ॥
प्रेम रंग बरसावो भारी ।
रत भी रहे सारी ॥ १२ ॥
दर न र ानँद पाऊँ ।
गुन गाऊँ चरन धिया ँ ॥ १३ ॥
यह अरज़ी मेरी न ीजे ।
जल्दी से मोहि दरशन दीजे ॥ १४ ॥

राधास्वामी परम दयाल अपारा ।
चरन तुम्हार मोर आधारा ॥ १५ ॥
महिमाँ तुम नहिँ जात बखानी ।
मैं बल जाउँ चरन कुरबानी ॥ १६ ॥
अब आरत प्रेम सजाऊँ ।
गुरु मेहर प्रशादी पाऊँ ॥ १७ ॥
राधास्वामी पुरुष अपारा ।
उन चरन मोर निस्तारा ॥ १८ ॥

॥ शब्द ३० ॥

आरत करे पिरेमन नार ।
दीन दिल चित्त लगाई ॥ १ ॥
गुरु चरनन बलिहार ।
प्रीत हिय उमगत आई ॥ २ ॥
सुरत शब्द मत धार ।
नित्त घट झाँकत जाई ॥ ३ ॥
गुरु दरशन कर सार ।
मगन मन प्रेम बढ़ाई ॥ ४ ॥
जग भोग रोग तज डार ।
सुरत मन चरन लगाई ॥ ५ ॥

धुन अनहद ुन झनकार ।
हरख हिये गुरु गुन गाई ॥ ६॥
घट देखे बिमल बहार ।
शब्द फुलवारी छाई ॥७॥
राधास्वामी पै तन मन वार ।
रन ब पूरी पाई ॥८॥

॥ शब्द ३१ ॥

सखीरी मेरे भाग जगे ।
मैंने सतगुरु पाए री ॥ १ ॥
करम भरम सँसय सब काटे ।
मोहिं चरन लगाए री ॥ २ ॥
रूप प्यारे राधास्वामी मेरे ।
क्या हिमाँ गाए री ॥ ३ ॥
रन सरन दे पना कीन्हा ।
मेरा प्रेम बढ़ाए री ॥ ४ ॥
सब जग पड़ा काल के फंदे ।
नित करम चढ़ाएरी ॥ ५ ॥
धा धुँध धरम के मारग ।
सब जीव फँसाए री ॥ ६ ॥

क्योंकर भाग सराहूँ अपना ।
मोहिं सतगुरु लीन बचाए री ॥ ७ ॥
सच्चा मारग सुरत शब्द का ।
सो मोहिं दीन लखाए री ॥ ८ ॥
गुरु का रूप निरखती घट में ।
प्रीत प्रतीत बढ़ाए री ॥ ९ ॥
उमँग सहित धुन डोर पकड़ के
मन और सूरत धाए री ॥१०॥
चित का थाल ध्यान की जोती ।
आरत प्रेम सजाए री ॥ ११ ॥
उमँग उमँग कर सन्मुख आई ।
राधास्वामी लीन रिझाए री ॥१२॥
दया मेहर परशादी पाई ।
अब निज भाग जगाए री ॥१३॥
राधास्वामी महिमा कही न जावे ।
सब रचना थाक रहाए री ॥१४॥
मैं बल हीन नहीं गुन कोई ।
राधास्वामी लिया अपनाए री ॥१५॥

॥ शब्द ३२ ॥

सेवक प्यारा उमगत ाया ।
सतगुरु चरनन ारत लाया ॥ १ ॥
निरमल चित थाल जाया ।
कोमल बानी जोत जगाया ॥ २॥
गुरु दर न कर ति हरखाया ।
राधास्वामी चरनन प्रीत बढ़ाया ॥ ३॥
उमँग उमँग धुन नाम नाता ।
राधास्वामी २ हिय बिच गाता ॥ ४॥
करम भरम सब दूर राए ।
माया काल दोऊ ुलवाए ॥ ५ ॥
मेहर हुई निज भाग ाए ।
ीत प्रतीत हिये ँ ए ॥ ६ ॥
खे बिगसत गुरु के पासा ।
और सूरत चरन निवासा ॥ ७ ॥
सेवा में करने ोगा ।
सतगुरु दया मिटे सब रोगा ॥ ८ ॥
छिन २ महिं ँ राधास्वामी गा ँ ।
आरत कर हिये प्रेम बढ़ाऊँ ॥ ९ ॥

प्रेम नगर का खुला दुआरा।
दरशन पाऐ राधास्वामी प्यारा ॥१०॥
अब यह आरत कीनी पूरी।
राधास्वामी पास रहूँ तज दूरी ॥ ११ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

मेरे सतगुरु जग में आए।
भौसागर जीव चिताए।
मैं तो उमँग उमँग गुन गाता री ॥ १ ॥
सतसँग कर प्रीत जगाई।
सेवा कर प्रेम बढ़ाई।
मैं तो नित नित चरन धियाता री॥ २ ॥
मेरे करम भरम सब काटे।
गुरु चरन वहीं मैं चाटे।
अब काल न मोहि सताता री ॥ ३ ॥
घट में नित पूजा करता।
सुत चरन कँवल में धरता।
गगना में शब्द बजाता री ॥ ४ ॥
आरत की उमँग उठाई।
सामाँ सब ले कर आई।
गुरु सन्मुख आरत गाता री ॥ ५ ॥

गुरु दया दृष्टि अब कीनी ।
मेरी सुरत हुई लौ लीनी ।
मैं तो हुआ प्रेम रँग राता री ॥ ६ ॥
करमी जिव अंधे धुंधे ।
सब फँसे काल के फंदे ।
बिन सतगुरु कौन बचाता री ॥ ७॥
जो चाहो अपन उधारा ।
गुरु चरनन धरो पियारा ।
जग जीवन आख सुनाता री ॥ ८॥
गुरु प्रेमी जीव पियारे ।
गुरु चरन सरन आधारे ।
मैं तो उन सँग प्रीत बढ़ाता री ॥ ९॥
गुरु दरशन पर बल जाऊँ ।
सोभा मैं कस कस गाऊँ ।
मैं तो तन मन वार धराता री ॥ १०॥
गुरु दया करी अब भारी ।
सुत सहसकँवल पग धारी ।
घंटा और शंख बजाता री ॥११॥

सुत वहाँ से चली अगाड़ी ।
अब पहुँची गुरु दरबारी ।
धुन मिरदँग गरज सुनाता री ॥१२॥
सुन में जाय किये अशनाना ।
धुन मुरली गुफ़ा पहिचाना ।
सतपुर में बीन बजाता री ॥ १३ ॥
फिर अलख अगम को निरखा ।
घर आदि अनादी परखा ।
राधास्वामी चरन समाता री ॥ १४ ॥
राधास्वामी पुरुष अपारा ।
मुझ नीच अधम को तारा ।
मैं तो छिन छिन महिमाँ गातारी ॥१५॥
मेरे उमँग उठत दिन राती ।
निज चरन प्रेम सुत राती ।
मैं तो दासन दास कहाता री ॥ १६ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

सखीरी क्या भाग सराहे री ॥ टेक ॥
चरन कँवल गुरु दीन दयाला ।
घर मेरे आए री ॥ १ ॥

दया दृष्टि से मुझ को हेरा ।
　　मोहि चरन लगाए री ॥ २ ॥
सतगुरु मेरे परम उदारा ।
　　क्या महिमाँ गाए री ॥ ३ ॥
सेवा कर दरशन कर उनके ।
　　मेरे भाग जगाए री ॥ ४ ॥
सुरत शब्द मारग अति पूरा ।
　　मोहि भेद बताए री ॥ ५ ॥
प्रीत प्रतीत हिये मैं बाढ़ी ।
　　मैं चरन धियाए री ॥ ६ ॥
सतगुरु आरत करूँ सजाई ।
　　अब उमँग उठाए री ॥ ७ ॥
सुरत का थाल निरत की जोती ।
　　मैं ने लीन जगाए री ॥ ८ ॥
भाँति भाँति के सामाँ लाई ।
　　गुरु आगे आन धराए री ॥ ९ ॥
उमँग उमँग कर सन्मुख आई ।
　　उन आरत गाए री ॥ १० ॥
मेहर हुई धुन अनहद जागी ।
　　घंट बजाए री ॥ ११ ॥

गढ़ त्रिकुटी अब चढ़कर पहुँची ।
गुरु दरशन पाए री ॥ १२ ॥
सुन्न शिखर चढ़ भँवरगुफ़ा लख ।
सतपुर बीन बजाए री ॥ १३ ॥
अलख अगम को निरखत निरखत ।
राधास्वामी दरशन पाए री ॥१४ ॥
राधास्वामी मेहर करी अब भारी ।
मोहि लिया अपनाए री ॥ १५ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

सखीरी क्या महिमाँ गाऊँ री ॥ टेक ॥
सतगुरु मेरे परम सनेही ।
आए धर औतार ॥ १ ॥
चरन सरन दे भाग बढ़ाये ।
किया जीव उपकार ॥ २ ॥
दया करी मोहि निरमल कीन्हा ।
निज सेवा दइ कर प्यार ॥ ३ ॥
बिघन अनेकन दूर कराये ।
करम भरम सब टार ॥ ४ ॥

किरपा कर निज बचन सुनाये ।
प्रीत प्रतीत बढ़ाई सार ॥ ५ ॥
मैं अजान गत मत नहिं जानी ।
भेद दिया निज सार ॥ ६ ॥
ऐसे समरथ राधास्वामी पाए ।
तन मन देती वार ॥ ७ ॥
सुख आनंद कहाँ लग बरनूँ ।
भूल गई संसार ॥ ८ ॥
मेहर करी सुत गगन चढ़ाई ।
पहुँची गुरु दरबार ॥ ९ ॥
मान सरोवर मंजन करके ।
सत्तलोक गई सुरत सुधार ॥ १० ॥
अलख अगम के पार सिधारी ।
राधास्वामी चरन सम्हार ॥ ११ ॥
आरत कर निज भाग जगाऊँ ।
राधास्वामी प्यारे हुए दयार ॥ १२ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

गुरु दरशन सहजहि पाई ।
गगना मैं बजत बधाई ।
मैं तो हरख २ गा गो ॥ १ ॥

मेरे सतगुरु परम पियारे ।
मोहि छिन में लीन उबारे ।
मैं तो चरनन पर बल जाऊँगी ॥ २ ॥
क्या महिमा सतसँग भारी ।
गुरु बचन सुनत सुखियारी ।
मैं तो बिमल २ जस गाऊँगी ॥ ३ ॥
छबि सतगुरु लागी प्यारी ।
मैं देखूँ दृष्टि सम्हारी ।
मैं तो हिये बिच रूप बसाऊँगी ॥ ४ ॥
सोभा गुरु क्यों कर गाई ।
कोटिन ससि सूर लजाई ।
सुत चरनन ध्यान लगाऊँगी ॥ ५ ॥
गुरु अगम भेद मोहिं दीन्हा ।
सुत शब्द जुगत मैं चीन्हा ।
मन सूरत अधर चढ़ाऊँगी ॥ ६ ॥
दल सहस जोत उजियारी ।
त्रिकुटी गुरु रूप निहारी ।
सुन में जाय शब्द जगाऊँगी ॥ ७ ॥

सोहँग धुन गुफ़ा सुनाई ।
सतपुर में बीन बजाई ।
चढ़ अलख अगम को पाऊँगी ॥ ८ ॥
राधास्वामी सतगुरु प्यारे ।
कर दया कीन मोहिं न्यारे ।
मैं तो चरन सरन बिच धाऊँगी ॥ ९ ॥
जग जीव करम के मारे ।
भरमों में नर तन हारे ।
मैं तो उनसे भेद छिपाऊँगी ॥ १० ॥
मैं तो गुरु सँग प्रीत बढ़ाती ।
तन मन धन वार धराती ।
यह आरत नित नित गाऊँगी ॥ ११ ॥
घट प्रेम बढ़ा अब भारी ।
राधास्वामी की हुई दुलारी ।
हिये उमँग नवीन जगाऊँगी ॥ १२ ॥

—×०×—

॥ शब्द ३७ ॥

प्रेम रंग बरसत घट भारी ।
दास आरती नई सम्हारी ॥ १ ॥

हिरदा थाल प्रेम की बाती ।
शब्द धार नित जोत जगाती ॥ २ ॥
मगन होय गुरु सनमुख आती ।
प्रीत सहित मुख आरत गाती ॥ ३ ॥
दरशन कर हिये में हरखाती ।
सोभा गुरु देखत मुसकाती ॥ ४ ॥
मन बिच तरँग अनेक उठाती ।
सेवा गुरु धारूँ बहु भाँती ॥ ५ ॥
यह चिंता मन बीच रहाई ।
क्योंकर गुरु को लेउँ रिझाई ॥ ६ ॥
मेहर हुई निज भाग बढ़ाई ।
सतगुरु चरनन संग रहाई ॥ ७ ॥
राधास्वामी दया दृष्टि अब कीन्ही ।
चरन सरन मोहिँ दृढ़ कर दीन्ही ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

आरत गावे दास रँगीला ।
चरन सरन में खेलत लीला ॥ १ ॥
बचन गुरू हित चित से सुनता ।
धुन धुन धुन धुन मन को धुनता ॥ २ ॥

उमँगत हिया धुन शोर मचावत ।
सुरत निरत सँग नभ पर धावत ॥ ३ ॥
सहसकँवल धुन घंट सुनाई ।
जोत रूप का दरशन पाई ॥ ४ ॥
सेत श्याम के मध्य ठिकाना ।
तिल अंतर नल बंक दिखाना ॥ ५ ॥
संख सुना और धुन ओंकारा ।
त्रिकुटी चढ़ गुरु रूप निहारा ॥ ६ ॥
सूरज मंडल लाल दिखाई ।
गरज गरज मिरदंग बजाई ॥ ७ ॥
आगे चढ़ खोला दस द्वारा ।
चँद्र चाँदनी चौक निहारा ॥ ८ ॥
धार त्रिबेनी किए अशनाना
ररंकार धुन सुरत समाना ॥ ९ ॥
महा सुन्न होय ऊपर धाई ।
भँवरगुफ़ा मुरली सुन पाई ॥ १० ॥
सेत सूर परकाश दिखाई ।
हंस मंडली अधिक सुहाई ॥ ११ ॥
सत्तलोक का द्वारा खोला ।
सत्तपुरुष तब बानी बोला ॥ १२ ॥

दरशन कर सुत हुई मगनानी।
प्रेम सिंध में आन समानी ॥१३॥
अलख अगम ो निरखत धाई।
राधास्वामी चरन समाई ॥ १४ ॥
यहाँ आय कर ारत गाई।
मेहर दया में निज कर पाई ॥१५॥
यह पद सार सार का सारा।
आदि ंत अखंड अपारा ॥१६॥
जोगी ानी भेद न जाना।
तीन लोक में रहे भुलाना ॥१७॥
देवी देवा ौर ौतारा।
संत बिना कोइ जाय न पारा ॥ १८ ॥
भाग जगा अब धुर ा मेरा।
सतगुरु का मैं हुआ निज चेरा ॥ १९ ॥
चरन सरन में लिया लगाई।
करम भरम सब दूर हटाई ॥ २० ॥
महिमाँ राधास्वामी ति कर भारी।
सुरत हुई चरनन बलिहारी ॥ २१ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

सतगुरु प्यारा आरत लाया।
चरन सरन में धावत आया ॥ १ ॥
खेलत बिगसत सतगुरु चरना।
दरशन कर हिये आनँद भरना ॥ २ ॥
सत सँगियन सँग प्रीत बढ़ावत।
छिन छिन सतगुरु पुरुष रिझावत ॥ ३ ॥
बचन सुनत हिये प्रेम बढ़ाता।
सेवा कर निज भाग जगाता ॥ ४ ॥
राधास्वामी रूप हिये बिच धरता।
सुरत शब्द ले नभ पर चढ़ता ॥ ५ ॥
गगन मँडल धस दास कहाता।
सुन्न सरोवर अमीं चुवाता ॥ ६ ॥
भँवरगुफ़ा मुरली धुन गाता।
सत्तलोक चढ़ बीन बजाता ॥ ७ ॥
अलख अगम दोउ मेहर कराई।
राधास्वामी गोद बिठाई ॥ ८ ॥
नित्त बिलास देख हरखत मन।
कौन करे यह दया राधास्वामी बिन ॥ ९ ॥

राधास्वामी दया भाग से पाई।
मन और सूरत वार धराई ॥१०॥
राधास्वामी गत अति अगम बखानी।
बार बार उन चरन नमामी ॥११॥

॥ शब्द ४० ॥

सखीरी मेरा धुरका भाग जगा री।
जगत मोहि लागा ज्यौं सुपना री ॥१॥
मेहर से दूर हुआ तपना री।
नहीँ अब मोह जाल खपना री ॥ २ ॥
नाम राधास्वामी छिन २ ज़पना री।
चरन मैं सतगुरू के पकना री ॥ ३ ॥
दरश गुरू पल पल अब तकना री।
ध्यान गुरू नैन नहीँ झपना री ॥ ४ ॥
चेत कर सुनती गुरू बचना री।
करम और धरम नहीँ पचनारी ॥ ५ ॥
मान और मोह तुरत तजना री।
प्रीत मेरी लागी गुरू चरना री ॥ ६ ॥
गुरू मेरे पुरुषोत्तम सजंना री।
नाम उन हिय से नित भजना री ॥ ७ ॥

तिरशना अगिन नहीं जलना री ।
काम और क्रोध नित्त दलना री ॥ ८ ॥
पकड़ धुंन घट में नित चलना री ।
गोद में सतगुरु के पलना री ॥ ९ ॥
जीव जग फसे सुआ नलना री ।
भोगते नरक कुंड बलना री ॥ १० ॥
गुरू बिन कैसे जग तरना री ।
छुटे नहिँ कभी जनम मरना री ॥ ११ ॥
चरन गुरु हिरदे में धरना री ।
गहो अब दृढ़ कर गुर सरना री ॥ १२ ॥
प्रेम गुरु नित हिये में भरना री ।
तजो सब काम यही करना री ॥ १३ ॥
काल से फिर कुछ नहिँ डरना री ।
सहज में भौसागर तरना री ॥ १४ ॥
आरती गुरुचरनन करना री ।
सुरत सतगुरु पद में धरना री ॥ १५ ॥
चरन में राधास्वामी फिर पड़ना री ।
सदा फिर प्यारे सँग रहना री ॥ १६ ॥
नित्त गुरु महिमाँ मुख कहना री ।
दया राधास्वामी छिन २ लेना री ॥ १७ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

गुरू के पइयाँ लागूँगी ।
चरन गुरु हिरदे धारूँगी ॥ १ ॥
गुरू ँ रलियाँ मानूँगी ।
निर छबि वारूँगी ॥ २ ॥
हिये बिच ब ाऊँगी ।
जगत मैं ाऊँगी ॥ ३ ॥
करम और भरम उड़ाऊँगी ।
जीव गुरु चरन लगा ँगी ॥ ४ ॥
भ की रीत सिखाऊँगी ।
प्रीत गुरु बहुत दृढ़ाऊँगी ॥ ५ ॥
थाल रधा धराऊँगी ।
भाव की जोत जगा ँगी ॥ ६ ॥
आरती तगुरु गाऊँगी ।
सुरत मन अधर चढ़ाऊँगी ॥ ७ ॥
ह दल पार जाऊँगी ।
गगन गुरु दर दि ँगी ॥ ८ ॥
सुन्न मैं शब्द जगाऊँगी ।
भँवर धुन ध्यान लाऊँगी ॥ ९ ॥

सत्त सर जा अन्हाऊँगी ।
पुरुष का दरशन पाऊँगी ॥ १० ॥
अलख और अगम सराहूँगी ।
राधास्वामी चरन समाऊँगी ॥११॥

॥ शब्द ४२ ॥

गावे आरती सेवक पूरा ।
छिन छिन पल पल मन को चूरा ॥१॥
दम दम सूरत चरन लगावत ।
दरशन रस ले त्रिप्त अघावत ॥ २ ॥
सतसँग कर नित करम सुलावत ।
सेवा कर निज भाग जगावत ॥ ३ ॥
गुरु मत ठान सुमत हिये धारत ।
मनमत छोड़ कुमत नित जारत ॥ ४ ॥
राधा राधा नाम पुकारत ।
स्वामी स्वामी हिये बिच गावत ॥ ५ ॥
कल मल काल कलेश हटावत ।
मिल मिल शब्द सुरत नभ धावत ॥ ६ ॥
जगमग जोत निरख चित हरखत ।
बंक नाल धस गुरु धुन परखत ॥ ७ ॥

सुन में जाय मानसर न्हावत ।
किंगरी सारँगी शोर मचावत ॥ ८ ॥
महासुन्न के ऊपर धावत ।
मुरली धुन सँग राग सुनावत ॥ ९ ॥
सत्तलोक जाय बीन बजावत ।
सत्तपुरुष का दरशन पावत ॥ १० ॥
अलख अगम के पार चढ़ावत ।
राधास्वामी चरन धियावत ॥ ११ ॥
हुए प्रसन्न राधास्वामी दयाला ।
प्यार किया और किया निहाला ॥१२॥

॥ शब्द ४३ ॥

सुरत पियारी उमगत आई ।
गुरु दरशन कर अति हरखाई ॥ १ ॥
प्रेम सहित सुनती गुरु बचना ।
मन माया अँग छिन छिन तजना ॥ २॥
गुरु सँग प्रीत करी उन गहिरी ।
सुरत निरत हुई चरनन चेरी ॥ ३ ॥
हिये बिच उठी अभिलाषा भारी ।
आरत सतगुरु करूँ सँवारी ॥ ४ ॥

हिये नुराग थाल कर लाई ।
बिरह प्रेम ी जोत जगाई ॥ ५ ॥
न्दर ब प्रीत कर साजे ।
उमँग नवीन हिये मैं राजे ॥ ६ ॥
भोग धा रस ान धराई ।
हरष हरष गुरु आरत गाई ॥ ७ ॥
अति कर प्रेम भाव हिये परखा ।
दया दृष्टि से सतगुरु निरखा ॥ ८ ॥
चरन भेद दे सुरत चढ़ाई ।
करम भरम ब दूर पराई ॥ ९ ॥
मेहर हुई निज भाग जगाए ।
ट मैं दरशन सतगुर पाए ॥ १० ॥
आँ खुली तब निज र देखा ।
जग जीवन ज है लेखा ॥ ११ ॥
कोइ मूरत दिर टके ।
कोइ तीरथ ोइ बरत मैं भटके ॥ १२ ॥
देवी देवा पत्थर पा ी ।
राम रहे भु ानी ॥ १३ ॥
निज घर ा कोइ भेद न पाया ।
बिन सतगुरु धोखा ाया ॥ १४ ॥

स कस भाग सराहूँ अपना ।
सतगुरु ने मोहि किया निज अपना ॥१५॥
दया करी मोहि गोद बिठाया ।
सुरत शब्द मारग दरसाया ॥ १६ ॥
चरन सरन मोहि दृढ़ र दीन्ही ।
मेरी सुरत करी परबीनी ॥ १७ ॥
नित नित प्रीत परतीत बढ़ाई ।
संसय कोट अब दीन उड़ाई ॥ १८ ॥
परम गुरू राधास्वामी प्यारे ।
अपनी दया से मोहि लीन उबारे ॥१९॥

॥ शब्द ॥

जगत में बहु दिन बीत सिराने ।
खोज नहिँ पाया रहे हैराने ॥ १ ॥
ढूँढता आया तज घर बारा ।
मिला मोहि राधास्वामी गुरु दरबारा ।२।
भेद सत पाया मैं उन पासा ।
मगन मन निस दिन देख बिलासा ।३।
करूँ हित चित से सतसँग सारा ।
जपूँ नित राधास्वामी नाम अपारा ।४।

ध्यान ॅ लाऊँ सतगुरु चरना ।
करूँ दृढ़ निस दिन राधास्वामी रना ॥५॥
शब्द ु सुन घोर घोर ।
ोह जग डाला तोड़ म लोड़ ॥ ६ ॥
करूँ ॅ आरत सतगुरु संगा ।
हुए करम रम सब भंगा ॥ ७ ॥
दीन दिल दुर त्यागी भारी ।
रन ॅ लागी सुरत करारी ॥ ८ ॥
ँग की थाली कर बिच लाया ।
ेम ी जोत अनूप जगाया ॥ ९ ॥
गाऊँ गुरु आरत हंसन ाथा ।
रन में गुरु के राखूँ ा ॥ १० ॥
हुए प्रस राधास्वामी प्यारे ।
दया र दीना पार उतारे ॥ ११ ॥
गाऊँ गुन उ ा बारम रा ।
मिला मोहिं संत ता निज सारा ॥१२॥

॥ ब्द ४५ ॥

ज ारती ूँ सम्हाली ।
जगा भाग ौर हुई निहाली ॥ १ ॥

सेवा थाल प्रतीत की बाती ।
प्रेम की जोत सदा जगवाती ॥ २ ॥
उमँग उमँग कर आरत गाती ।
धुन घंटा और शँख बजाती ॥ ३ ॥
बंक नाल धस त्रिकुटी आई ।
धुन मृदंग और गरज सुनाई ॥ ४ ॥
गुरु दरशन कर अति हरखाई ।
लाल रंग सूरज दरसाई ॥ ५ ॥
मान सरोवर किया पयाना ।
घाट त्रिबेनी किए अशनाना ॥ ६ ॥
भँवरगुफा होय सतपुर आई ।
सत्तपुरुष धुन बीन सुनाई ॥ ७ ॥
अलख अगम के पार सिधारी ।
राधास्वामी धाम निहारी ॥ ८ ॥
सतगुरु दया भाग से पाई ।
राधास्वामी चरन समाई ॥ ९ ॥
सतसँग कर मन निरमल कीना ।
प्रीत लगी हुइ चरन अधीना ॥ १० ॥
काल चक्र डाला बहुतेरा ।
सतगुरु दया मिटा भौ फेरा ॥ ११ ॥

करम बंद से जीव छुड़ाया ।
भजन भक्ति ँ भाव दृढ़ाया ॥ १२ ॥
और सुरत दो उठ जागे ।
ँग सहित गुरु चरनन लागे ॥ १३ ॥
सेवा कर हि प्रे ब या ।
तन ब वार धराया ॥ १४ ॥
सुरत रहे निस दिन रस पीती ।
राधा ामी २ छिन २ हती ॥ १५ ॥

॥ शब्द ४६ ॥

गुरुमु ुरत प्रे भर पूरी ।
सतगुरु चरनन सदा हज़ूरी ॥ १ ॥
बिरह नुराग की ि नई धारन ।
दृढ़ परतीत ौर ीत सँवारन ॥ २ ॥
सतगुरु रपन ।
करम भरम ब दूर बिडारन ॥ ३ ॥
गुरु से हित चित से रना ।
सुरत दृष्टि दोउ ति ँ भर ा ॥ ४ ॥
ऐसा जोग मेहर से पाऊँ ।
राधास्वामी पै बल बल ँ ॥ ५ ॥

दीन अधीन रहूँ गुरु चरना ।
उमँग सहित धारूँ गुरु सरना ॥ ६ ॥
सतसँग महिमाँ कही न जाई ।
भेद गुप्त सब दिया लखाई ॥ ७ ॥
राधास्वामी मत है अति कर गहिरा।
राधास्वामी चरनन जीव निबेड़ा ॥ ८ ॥
राधास्वामी देस ऊँच से ऊँचा ।
संत बिना कोइ जहाँ न पहुँचा ॥ ९ ॥
बड़ भागी जो सतसँग पावे ।
कर परतीत सरन में धावे ॥ १० ॥
काल करम की फाँसी टूटे ।
चौरासी का भरमन छूटे ॥ ११ ॥
राधास्वामी दया भाग मेरा जागा ।
चित्त चरन में हजहि लागा ॥ १२ ॥
अपनी दया ` लिया अपनाई ।
क्योंकर महिमाँ राधास्वामी गाई ॥१३॥
हिय में उमँग उठी भारी ।
ारत सतगुरु रूँ सम्हारी ॥ १४ ॥
बिरह प्रेम का थाल जाऊँ ।
धुन झनकार जोत जगवाऊँ ॥ १५ ॥

उमँग उमँग र आरत गाऊँ ।
दृष्टि जोड़ मन सुरत चढ़ाऊँ ॥ १६ ॥
सहस ँवल होय त्रिकुटी धाऊँ ।
सुन के परे गुफा दरसाऊँ ॥ १७ ॥
सत्तलो जाय बीन बजाऊँ ।
लख अगम के पार चढ़ाऊँ ॥ १८ ॥
राधास्वामी प्यारे के दरशन पाऊँ ।
उन रनन ँ जाय समाऊँ ॥ १९ ॥

॥ शब्द ४७ ॥

सुरत ी उमगत ाई ।
दीन लीन चित आरत लाई ॥ १ ॥
बिरह नुराग थाल र लाई ।
भक्ति की जोत जगाई ॥ २ ॥
अंतर ` ` अधिक हुलासा ।
दे ँ गुरु चरन बिलासा ॥ ३ ॥
नित गुरु चरनन बिनती धारी ।
खोलो घट में किवाड़ी ॥ ४ ॥
रूप अनूप दे हिय हरखूँ ।
दया मेहर स्वामी ँ परखूँ ॥ ५ ॥

तुम दाता स्वामी अपर अपारी ।
मैं हूँ दीन अधीन बिचारी ॥ ६ ॥
किरपा कर मोहिँ दरशन दीजे ।
छिन छिन सुरत अमीँ रस भीँजे ॥ ७ ॥
भूल चूक मेरी चित्त न लाओ ।
तुम दाता मेरे दिल दरियाओ ॥ ८ ॥
काल करम मोहिँ बहु दुख दीना ।
हार पड़ी आए अब तुम सरना ॥ ९ ॥
तुम दाता मेरे पिता दयाला ।
चरन सरन दे करो प्रतिपाला ॥ १० ॥
हित चित से यह आरत गाई ।
राधास्वामी प्यारे हुए सहाई ॥ ११ ॥

॥ शब्द ४८ ॥

गुरु दरशन मोहिँ अति मन भाए ।
बचन सुनत हिय प्रीत बढ़ाए ॥ १ ॥
संगत देखी सब से न्यारी ।
पद ऊँचे से ऊँचा भारी ॥ २ ॥
राधास्वामी धाम कहाई ।
जोत निरंजन जहाँ न जाई ॥ ३ ॥

महिमाँ बरनी न जाय अपारा ।
राधास्वामी चरनन जीव उबारा ॥ ४ ॥
सहज जोग राधास्वामी बतलाया ।
घट में दरशन गुरु दिखलाया ॥ ५ ॥
सुरत शब्द की राह बतलाई ।
प्रेम अँग ले करो चढ़ाई ॥ ६ ॥
मन और सुरत दोउ उठ जागे ।
शब्द गुरू में हित से लागे ॥ ७ ॥
बड़े भाग राधास्वामी मत पाया ।
भटक भटक गुरु चरनन आया ॥ ८ ॥
आस भरोस धरूँ गुरु चरनन ।
हिया जिया वारूँ वारूँ तन मन ॥ ९ ॥
मेरे मन अस गुरु बिस्वासा ।
करें मेहर दें अगम निवासा ॥ १० ॥
राधास्वामी बिन कोइ और न जानूँ ।
प्रीत सहित उन आरत धारूँ ॥ ११ ॥
प्रेम अंग घट अंतर छाया ।
राधास्वामी दया प्रशादी पाया ॥ १२ ॥
प्रीत प्रतीत दान मोहिं दीजे ।
न्यारा कर अपना कर लीजे ॥ १३ ॥

चरन धार जिऊँ मैं निस दिन ।
राधास्वामी २ गाऊँ छिन छिन ॥ १४ ॥

॥ शब्द ४९ ॥

सरन गुरु हिये मैं ठान रही ॥ टेक ॥
उमँग की धारा भारी ।
सो चरन बही ॥ १ ॥
बालपने से जग सँग बहती ।
मन मूरख नजान रही ॥ २ ॥
गुरु दयाल मोहिं भेटे आई ।
चरन भेद उन सार दई ॥ ३ ॥
कर तसंग बूझ तब आई ।
जग की रीत बिसार दई ॥ ४ ॥
सुरत शब्द मारग अब धारा ।
संत मते ी टेक गही ॥ ५ ॥
बिरह अनुराग बढ़ा घट अंतर ।
राधास्वामी सरन पई ॥ ६ ॥
सुमिरन ध्यान भजन मैं लागी ।
तर रस मन चाख चखी ॥ ७ ॥

भक्ति भाव की महिमाँ जानी ।
सतगुरु चरनन लिपट रही ॥ ८ ॥
बिन सतगुरु कोइ भेद न पावे ।
शब्द बिना सब जीव बही ॥ ९ ॥
मैं अब खोल सुनाऊँ सब को ।
बिना संत कोइ नाहिँ बची ॥ १० ॥
तासे सरन गहो राधास्वामी ।
जैसे बने तैसे चरन पई ॥ ११ ॥
जीव दया उन हिरदे बसती ।
जम से तुरत बचाय लई ॥ १२ ॥
कल जुग समाँ बड़ा बिकराला ।
करम धरम कुछ नाहिँ बनी ॥ १३ ॥
पिछले जुग की करनी त्यागो ।
गुरु चरनन में चित्त दई ॥ १४ ॥
काल जाल से सहज निकारें ।
मन और सूरत गगन चढ़ी ॥ १५ ॥
राधास्वामी महिमाँ कही न जाई ।
मोहि निज गोद बिठाय लई ॥ १६ ॥
नित गुन गाय रहूँ गुरु अपने ।
राधास्वामी ध्याय रही ॥ १७ ॥

घंटा संख सुनी धुन दोई ।
गुरु चरनन छबि झाँक रही ॥ १८ ॥
सुन में जाय सुनी सारंगी ।
हंसन साथ मिलाप चही ॥ १९ ॥
भँवरगुफा मुरली धुन सुन कर ।
सतपुर बीन बजाय रही ॥ २० ॥
अलख अगम के पार गई अब ।
राधास्वामी रूप निहार रही ॥ २१ ॥

॥ शब्द ५० ॥

गुरु याद बढ़ी अब मन में ।
गुरु नाम जपूँ छिन छिन में ॥ १ ॥
गुरु सतसँग चित से चाहूँ ।
गुरु दरशन पर बल जाऊँ ॥ २ ॥
नित सन्मुख गुरु के खेलूँ ।
मन प्रेमी जन सँग मेलूँ ॥ ३ ॥
राधास्वामी नाम सुहाया ।
सुमिरन में चित्त लगाया ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर कराई ।
मैं बालक लिया अपनाई ॥ ५ ॥

राधास्वामी गुन नित गाऊँ ।
राधास्वामी रूप धियाऊँ ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन गही री ।
राधास्वामी छाँह बसी री ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५१ ॥

गुरु रूप लगा मोहिं प्यारा ।
गुरु दरशन मोर अधारा ॥ १ ॥
नित सतगुरु नाम सुमिरना ।
गुरु चरनन में चित धरना ॥ २ ॥
गुरु आज्ञा नित्त सम्हारूँ
गुरु सूरत हियरे धारूँ ॥ ३ ॥
प्रेमी जन लगें पियारे ।
उन सँग गुरु सेवा धारे ॥ ४ ॥
मेरे मन में चाहत येही ।
गुरु संग करूँ मैं नित ही ॥ ५ ॥
गुरु सुनिये बिनती मेरी ।
घट प्रीत देओ मोहिं गहिरी ॥ ६ ॥
चरनन में लेव अपनाई ।
नित राधास्वामी नाम जपाई ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५२ ॥

दास दयाला आरत लाया ।
जग से भाग चरन में धाया ॥ १ ॥
घट पट फोड़ चढ़त नभ द्वारे ।
मान मनी तज सरन अधारे ॥ २ ॥
झट पट लिपट चरन हुआ न्यारा ।
करम भरम का भार उतारा ॥ ३ ॥
सतसँग बचन धार लिये मन में ।
लट पट मन माया रहे तन में ॥ ४ ॥
उलट पलट झाँका गुरु द्वारा ।
हूहू हूहू गगन पुकारा ॥ ५ ॥
मीन चाल पहुँचा सुन नगरी ।
भरी अमीं सँग मन की गगरी ॥ ६ ॥
सतगुरु संग चला अब बाटी ।
चढ़ गया सहज महासुन घाटी ॥ ७ ॥
मुरली धुन सुन भँवरगुफा में ।
धारा सोहँग सुरत सफ़ा में ॥ ८ ॥
मधुर बीन धुन सुनी अधर घर ।
सत्तपुरुष गुरु मिले अमर पुर ॥ ९ ॥

अलख लोक जा सुरत सिँगारी ।
अगम लोक फल पाया भारी ॥ १० ॥
अधर धाम अब लखा अनामा ।
संतन का जहाँ निज बिस्रामा ॥ ११ ॥
वहाँ आरती साज सँवारी ।
राधास्वामी रूप निहारी ॥ १२ ॥
दरशन पाय मगन हुआ भारी ।
राधास्वामी कीन्ही दया अपारी ॥१३॥
सुरत लगी जाय चरनन कैसे ।
मीन मगन होय जल में जैसे ॥ १४ ॥
छिन छिन राधास्वामी दरस निहारूँ ।
धन धन धन धन बाद पुकारूँ ॥ १५ ॥

—×०×—

॥ शब्द ५३ ॥

प्रेमी जन मस्त हुआ गुरु संगा ।
हुए सब संसय मन के भंगा ॥ १ ॥
बचन सुन प्रीत बढ़ी अँग अंगा ।
सुरत मन भींज गए गुरु रंगा ॥ २ ॥
निरख कर सीखा सतसँग ढंगा ।
परख कर धारा गुरु आलंबा ॥ ३ ॥

मिला मोहि शब्द जोग अब चंगा ।
चढूँ अब नभ पर सहित उमंगा ॥ ४ ॥
काल के छेदूँ नाम तुफंगा ।
गुरू का हूँ मस्ताना सिंघा ॥ ५ ॥
हौंय तब मन और माया तंगा ।
गगन चढ़ न्हाऊँ घट में गंगा ॥ ६ ॥
मिला मोहि राधास्वामी सतगुरू संगा ।
जगा मेरा अचरज भाग अभंगा ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५४ ॥

राधास्वामी चरनन आइया ।
जागे मेरे भाग ॥
दरशन कर हिये हरखिया ।
सतसँग में चित लाग ॥ १ ॥
बचन सुनत चित मगन होय ।
दृढ़ परतीत सम्हार ॥
राधास्वामी चरन पर ।
तन मन देता बार ॥ २ ॥

ऐसी सँगत ना सुनी ।
ना कहीं आँखन दीठ ॥
राधास्वामी बल हिये धार कर ।
तोडूँ काल की पीठ ॥ ३ ॥
दम दम नाम पुकारता ।
छिन छिन धरता ध्यान ॥
हिये गुरु रूप बसाय कर ।
रहता अमन अमान ॥ ४ ॥
गुरु से प्रीत बढ़ावता ।
चित चरनन लौ लीन ॥
हिय से सेवा धारता ।
तन मन दीन अधीन ॥ ५ ॥
क्या माया मेरा कर सके ।
काल न सकता रोक ॥
मेहर दया से पाइया ।
राधास्वामी चरनन जोग ॥ ६ ॥
भटक भटक भटकत फिरा ।
कहीं न पाया ठाम ॥
राधास्वामी चरनन आ पड़ा ।
हुआ चेरा बिन दाम ॥ ७ ॥

राधास्वामी से सतगुरु नहीं ।
राधास्वामी सा निज नाम ॥
सुरत शब्द सम जोग नहिं ।
पाया भेद अनाम ॥ ८ ॥
भक्ति बिना कोइ ना तरे ।
गुरु बिन होय न पार ॥
सतगुरु बिन सब जगत जिव ।
डूबे भौजल धार ॥ ९ ॥
प्रेम बिना नहिं पा सके ।
राधास्वामी का दीदार ॥
यासे सतगुरु भक्ति कर ।
पहुँचो निज घर बार ॥ १० ॥
अब आरत गुरु वारता ।
प्रेम का थाल सजाय ॥
उमँग हिये उमगावता ।
बिरह की जोत जगाय ॥ ११ ॥
राधास्वामी हुए प्रसन्न अब ।
दृष्टि मेहर की कीन ॥
प्रीत प्रतीत की दात दे ।
मोहि अपना कर लीन ॥ १२ ॥

॥ शब्द ५५ ॥

सरस धुन बाज रही ।
मेरे गुरु दरबार ॥ १ ॥
सुरत मन लाग रहे ।
गुरु चरनन लार ॥ २ ॥
बचन गुरु सुनत रही ।
चित धर धर प्यार ॥ ३ ॥
दया पर मोह रही ।
मैं तन मन वार ॥ ४ ॥
समझ गुरु सीख ।
तजी जग मन्सा खार ॥ ५ ॥
शब्द का भेद मिला ।
अब सब का सार ॥ ६ ॥
लोभ और काम तजा ।
उपदेश सम्हार ॥ ७ ॥
चरन में प्यार बढ़ा ।
गुरु रूप निहार ॥ ८ ॥
काल अब थकित हुआ ।
गुरु हुए दयार ॥ ९ ॥

हिये परतीत बढ़ी ।
रही माया हार ॥ १० ॥
करम भरम पाखंड का ।
जग में बढ़ा पसार ॥ ११ ॥
जीव सब घेर लिये ।
यह काल बड़ा बरियार ॥ १२ ॥
संत सरन जो दृढ़ गहे ।
सोई उतरे पार ॥ १३ ॥
राधास्वामी गाय कर ।
चलो निज घर बार ॥ १४ ॥

॥ शब्द ५६ ॥

सुरत पियारी सन्मुख आई ।
प्रेम प्रीत गुरु हिये बसाई ॥ १ ॥
संतसँग बचन अधिक मन भाए ।
जग व्योहार अति तुच्छ दिखाए ॥ २ ॥
परमारथ का भाव बढ़ावत ।
छिन छिन चित चरनन में धावत ॥ ३ ॥
गुरु सेवा लागत अति प्यारी ।
तन मन धन चरनन पर वारी ॥ ४ ॥

निरखत रहूँ रूप गुरु सुन्दर ।
हरखत रहूँ बचन गुरु सुन कर ॥ ५ ॥
किरपा कर गुरु दीन्हा भेदा ।
काल करम के मिट गये खेदा ॥ ६ ॥
सुरत खैंच धुन शब्द सुनाई ।
शब्द शब्द का भेद जनाई ॥ ७ ॥
सहसकँवल चढ़ त्रिकुटी आई ।
जोत लखी गुरु रूप दिखाई ॥ ८ ॥
दसम द्वार का पाट खुलाना ।
सेत चंद्र परकाश दिखाना ॥ ९ ॥
भँवरगुफा होय सतपुर आई ।
सत्त पुरुष का दरशन पाई ॥ १० ॥
अलख अगम के पार सिधारी ।
पुरुष अनामी रूप निहारी ॥ ११ ॥
आरत का फल पाया पूरा ।
राधास्वामी चरनन हो गइ धूरा ॥ १२ ॥

॥ शब्द ५७ ॥

भक्ती थाल सजाय कर ।
प्रेम की बाती लाय ॥

सुरत निरत दोउ जोड़ कर ।
शब्द की जोत जगाय ।
आरती राधास्वामी गाऊँगी ॥ १ ॥
अद्भुत रूप लखूँ गुरु अंतर ।
प्रीत सहित धारूँ गुरु मंतर ।
नाम धुन बिमल जगाऊँगी ॥ २ ॥
सुन्न में जाय त्रिबेनी न्हाऊँ ।
हंसन संग मिलाप बढ़ाऊँ ।
शिखर चढ़ सारँग गाऊँगी ॥ ३ ॥
दया ले गई महासुन पार ।
भँवर धुन मुरली लई सम्हार ।
सत्तपुर बीन बजाऊँगी ॥ ४ ॥
अलख लख गई अगम के पास ।
किया जाय राधास्वामी चरनन बास ।
नित्त मैं राधास्वामी ध्याऊँगी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५८ ॥

हंस हंसनी जुड़ मिल आए ।
दरशन कर मन अति हरखाए ॥ १ ॥

हिल मिल कर गुरु आरत करते ।
प्रीत प्रतीत हिये बिच धरते ॥ २ ॥
हार हार मन चित बिगसाना ।
फूल फूल गुरु चरन समाना ॥ ३ ॥
थाल उमँग और जोत बिरह की ।
जुड़ मिल गावैं आरत गुरु की ॥ ४ ॥
घंटा संख शब्द धुन आई ।
ताल मृदँग और गरज सुनाई ॥ ५ ॥
हिये सँजाय लखी गुरु मूरत ।
बिमल बिलास करैं मन सूरत ॥ ६ ॥
अक्षर पुरुष दरस किया सुन मैं ।
सारंगी धुन सुनी स्रवन मैं ॥ ७ ॥
हिल मिल कर सतगुरु सँग चाली ।
मुरली धुन सुन भँवर सम्हाली ॥ ८ ॥
सत्त पुरुष का दरशन पाते ।
धुन बीना सँग राग सुनाते ॥ ९ ॥
अमी अहार बिलास नवीना ।
सतगुरु चरनन सरन अधीना ॥ १० ॥
अलख अगम की महिमाँ गावत ।
दया मेहर ले आगे धावत ॥ ११ ॥

राधास्वामी के दरशन पाये ।
उमँग उमँग निज चरन समाये ॥१२॥
आनँद हरख रहा घट छाई ।
भाग आपना लिया सराही ॥ १३ ॥
दया मेहर कुछ बरनि न जाई ।
पूरन प्रेम रहा बरखाई ॥ १४ ॥
आरत हो गई पूरन आज ।
राधास्वामी कीना सब का काज ॥ १५ ।

॥ शब्द ५९ ॥

बिरह भाव घट भीतर आया ।
मन अंतर अनुराग समाया ॥ १ ॥
तड़प रहूँ दरशन के कारन ।
मगन होय देखूँ घट चाँदन ॥ २ ॥
शब्द जुगत जो मोहि बताई ।
प्रेम अंग ले करूँ कमाई ॥ ३ ॥
काल बिघन बहु भाँत लगाई ।
रोग सोग सँग अधिक झुमाई ॥४॥
पर राधास्वामी अस किरपा धारी ।
राख रहीं बिस्वास सम्हारी ॥ ५ ॥

चरन गुरू नित मन में ध्याती ।
गुरु स्वरूप हिये माहिँ बसाती ॥ ६ ॥
तब तो काल करम रहे हार ।
पहुँच गई मैं गुरु दरबार ॥ ७ ॥
दरशन पाय हरख हुआ भारी ।
तन मन धन चरनन पर वारी ॥ ८ ॥
भजन भरि और प्रेम बढ़ाऊँ ।
सुरत शब्द ले नभ पर धाऊँ ॥ ९ ॥
राधास्वामी मेहर हुई जब भारी ।
घट में देखूँ जोत उजारी ॥ १० ॥
वहाँ से त्रिकुटी धाम समाऊँ ।
गुरु पद परस सरोवर न्हाऊँ ॥ ११ ॥
तन मन से अब होय अकेल ।
हंसन संग करूँ नित केल ॥ १२ ॥
आगे जाय महासुन पारा ।
सुनत रहूँ सोहंग धुन सारा ॥ १३ ॥
सतपुर अलख अगमपुर देख ।
दरशन राधास्वामी हुत पे ॥ १४ ॥
आरत गाऊँ उमँग उमंग ।
मिट गई ब मेरी सभी उचंग ॥ १५ ॥

प्रेम बढ़ा हुई दरस दिवानी ।
को समझे यह अकथ कहानी ॥ १६ ॥
कस पाती यह प्रेम भँडार ।
राधास्वामी आपहि लिया सम्हार ॥१७॥

॥ शब्द ६० ॥

गुरु दरशन मोहिं लागे प्यारे ।
बचन सुनत हिये हरख बढ़ारे ॥ १ ॥
सतसँग की अभिलाखा भारी ।
मेहर होय तो करूँ सदारी ॥ २ ॥
रहुँ चरनन में प्रेम जगाऊँ ।
शब्द माहिं मन सुरत लगाऊँ ॥ ३ ॥
मेहर बिना कुछ बन नहिं आवे ।
जीव निबल क्या भक्ति कमावे ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया करें जब अपनी ।
तब मन से यह दुरमत टलनी ॥ ५ ॥
भक्ति भाव छिन छिन हिये धारी ।
जगत आस सब मन से टारी ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरनन बाढ़ी प्रीती ।
दृढ़ कर धारी हिय परतीती ॥ ७ ॥

रहूँ उदास चरन नित ध्याऊँ ।
राधास्वामी किरपा छिन २ चाहूँ ॥ ८ ॥
मैं अति दीन हीन सरनागत ।
टारो काल करम की आफ़त ॥ ९ ॥
अपना कर मोहिं लेव सुधारी ।
मैं चरनन पर छिन छिन वारी ॥ १० ॥
घट में मोहिं धुन शब्द सुनावो ।
मन और सूरत अधर चढ़ावो ॥ ११ ॥
देखँ बिलास मगन रहूँ मन में ।
झाँकत रहूँ रूप तिल तट में ॥ १२ ॥
सुनूँ गगन में अनहद बाजा ।
सुन में जाय सुरत मन साधा ॥ १३ ॥
भँवरगुफा देखत उजियारी ।
सत्तपुरुष के चरनन लागी ॥ १४ ॥
प्रेम सहित नित आरत साजे ।
राधास्वामी चरनन आई भाज ॥ १५ ॥

॥ बचन आठवाँ ॥

आरत बानी भाग दूसरा

॥ शब्द १ ॥

उमँग मेरे उठी हिये में आज ।
करूँ अब आरत गुरु की साज ॥ १ ॥
दीन दिल थाली लेउँ सजाय ।
बिरह की जोत अनूप जगाय ॥ २ ॥
सुरत के बान चलाऊँ सार ।
चरन गुरु राखूँ हिरदे धार ॥ ३ ॥
बिकल मन तड़पत है दिन रैन ।
करूँ गुरु दरशन पाऊँ चैन ॥ ४ ॥
गुरू मेरे प्यारे दीन दयाल ।
सरन दे मुझ को करो निहाल ॥ ५ ॥
करें गुरु मेरा पूरा काज ।
मेरे तन मन की उनको लाज ॥ ६ ॥
करूँ मैं बिनती बारम्बार ।
गुनह मेरे बख़्शो दीन दयार ॥ ७ ॥

सुरत मन लीजे आज सम्हार ।
बहत हूँ काल करम की धार ॥ ८ ॥
चरन में छिन छिन जाऊँ बलिहार ।
गुरू मेरे प्यारे सत करतार ॥ ९ ॥
मेहर कर खोलो प्रेम दुआर ।
चढ़ावो सूरत नौ के पार ॥ १० ॥
सहसदल जोत जगाऊँ सार ।
पाऊँ फिर दरशन गुरु दरबार ॥ ११ ॥
सुन्न चढ़ मानसरोवर न्हाय ।
गुफा में मुरली लेउँ बजाय ॥ १२ ॥
वहाँ से सतपुर पहुँचूँ धाय ।
पुरुष का हरखूँ दरशन पाय ॥ १३ ॥
अलख और अगम लोक के पार ।
जाऊँ राधास्वामी पै बलिहार ॥ १४ ॥
प्रेम अँग आरत करूँ बनाय ।
दरस राधास्वामी छिन छिन पाय ॥ १५ ॥
मेहर से काज हुवा सब पूर ।
सुरत हुई राधास्वामी चरनन धूर ॥ १६ ॥

॥ शब्द २ ॥

सखी री मेरे मन बिच उठत तरंग ।
करूँ गुरु आरत रंगा रंग ॥ १ ॥
प्रेम की थाली कर बिच लाय ।
लाल और मोती संग सजाय ॥ २ ॥
बिरह की जोत जगाऊँ आज ।
कँवल फुलवारी चहुँ दिस साज ॥ ३ ॥
अनेक रँग अम्बर बस्तर लाय ।
अमीं का भोग उमंग धराय ॥ ४ ॥
बिबिध अस आरत साज सजाय ।
सुरत मन नाचत हरखत गाय ॥ ५ ॥
हंस जहाँ मोहित देख बिलास ।
हिये बिच छिन छिन बढ़त हुलास ॥ ६ ॥
शब्द धुन झनकारत चहुँ ओर ।
अमीं रस बरखावत घन घोर ॥ ७ ॥
भींज रही सुरत रँगीली नार ।
रहा मन ग़ोता खावत वार ॥ ८ ॥
धमक कर चढ़ गई फोड़ अकाश ।
चमक कर पहुँची सतगुरु पास ॥ ९ ॥

प्रेम रँग भीज रही सुत नार ।
पाइया पूरन अब सिंगार ॥ १० ॥
हुए परसन गुरू दीन दयाल ।
लिया मोहिं अपनी गोद बिठाल ॥ ११ ॥
भाग मेरा जागा आज अपार ।
मिले राधास्वामी निज दिलदार ॥ १२ ॥

॥ शब्द ३ ॥

काल ने जग में कीना ज़ोर ।
डालिया माया भारी घोर ॥ १ ॥
जीव सब भोगन में भरमात ।
नाम का भेद न कोई पात ॥ २ ॥
करम बस दुख सुख भोगें आय ।
गए सब जम के हाथ बिकाय ॥ ३ ॥
निडर होय जग में मारें मौज ।
करें नहिं सतगुरु का वह खोज ॥ ४ ॥
जीव का हित नहिं दिल में लाय ।
फ़िकर नहिं आगे क्या हो जाय ॥ ५ ॥
समझ जो उनको कोइ सुनाय ।
भरम बस चित में नहीं समाय ॥ ६ ॥

मान मद डाली भारी धूल ।
सहँगो जग के कारी सूल ॥ ७ ॥
बड़ा मेरा जागा भाग अपार ।
मिले मोहिं सतगुरु परम उदार ॥ ८ ॥
अबल मैं कुछ करनी नहिं कीन ।
दया कर चरन सरन मोहिं दीन ॥ ९ ॥
प्रेम की भारी कीन्ही दात ।
छुटाया करम भरम का साथ ॥ १० ॥
शुकर कर निस दिन उन गुन गाय ।
कुसँग से लीजे मोहिं बचाय ॥ ११ ॥
रहूँ मैं निस दिन चरनन पास ।
प्रेमी जन सँग पाऊँ बास ॥ १२ ॥
करो अभिलाखा मेरी पूर ।
हुकम से तुम्हरे नाहिं कुछ दूर ॥ १३ ॥
जीव हितकारी नाम तुम्हार ।
करो अब मुझ पर दया अपार ॥ १४ ॥
परम गुरु राधास्वामी दीन दयाल ।
दरस दे मुझको करो निहाल ॥ १५ ॥
मगन मन अभिलाखत दिन रात ।
करूँ गुरु आरत प्रेमी साथ ॥ १६ ॥

थाल सतसँग का लेउँ सजाय ।
बचन गुरु सरधन जोत जगाय ॥ १७ ॥
करूँ गुरु दरशन दृष्टि सम्हार ।
गाऊँ अस आरत बारम्बार ॥ १८ ॥
करत मन मेरा अस बिसवास ।
करें गुरु पूरन मेरी आस ॥ १९ ॥
पिया मेरे राधास्वामी प्रान अधार ।
दरस पर तन मन दूँगी वार ॥ २० ॥
मोहनी छबि नहिं बरनी जाय ।
नैन और तन मन रहे लुभाय ॥ २१ ॥
भाग बड़ प्रेमी जन हैं सोय ।
करें नित दरशन सुरत समोय ॥ २२ ॥
भाग मेरा भी लेव जगाय ।
देव निज दरशन पास बुलाय ॥ २३ ॥
सोच मेरे मन में निस दिन आय ।
मोहिं केहि कारन दूर रखाय ॥ २४ ॥
कसर मेरी कीजे सब अब दूर ।
दिखाओ जल्दी अपना नूर ॥ २५ ॥
करूँ मैं बिनती दोउ कर जोर ।
सुनो प्यारे राधास्वामी सतगुरु मोर ॥ २६ ॥

मेहर अब पूरी करो दयाल ।
चरन में मुझको लेव सम्हाल ॥ २७ ॥
गाऊँ गुन तुम्हरा दिन और रात ।
चरन में प्रेमी जन के साथ ॥ २८ ॥
सुरत मन चढ़ैं गगन पर घूम ।
सुन्न में पहुँचें वहाँ से झूम ॥ २९ ॥
गुफा चढ़ सतपुर पहुँचूँ धाय ।
अलख और अगम को निरखूँ जाय ॥३०॥
अनामी धाम का दरशन पाय ।
चरन में राधास्वामी रहूँ समाय ॥ ३१ ॥

—x०x—

॥ शब्द ४ ॥

बढ़त मेरे हिये में अति अनुराग ।
चरन में सतगुरु के रहूँ लाग ॥ १ ॥
काल मन फैल रहा चहुँ देस ।
बाँधिया सब जिव जम गह केस ॥ २ ॥
जीव सब तड़पत हैं बे चैन ।
दुक्ख सुख भोगत हैं दिन रैन ॥ ३ ॥
कुशल कहीं दीखत नहिँ जग माँहिँ ।
बचे जो ओट गहे गुरु पाँय ॥ ४ ॥

हुई मो पै धुरकी दया अपार ।
मिले मोहिं सतगुरू किरपा धार ॥ ५ ॥
सुनाए मुझ को अचरज बैन ।
दई मोहिं निज घट की फिर सैन ॥ ६ ॥
हटाया करम भरम को दूर ।
चरन में प्रीत दई भरपूर ॥ ७ ॥
मगन मन हरखत है दिन रैन ।
चुका अब काल करम का दैन ॥ ८ ॥
गाऊँ गुन गुरू का बारम्बार ।
दिया सब संसय कूड़ा टार ॥ ९ ॥
उमँग मन सेव करे दिन रात ।
सुरत अब तजे न गुरू का साथ ॥ १० ॥
गुरू की दम दम महिमा गाय ।
प्रेम अँग आरत करूँ सजाय ॥ ११ ॥
भेंट गुरू तन मन धन करता ।
चरन राधास्वामी हिये धरता ॥ १२ ॥

॥ द ५ ॥

सुरत मेरी गुरू र ागी ।
हुआ न ग से ैरागी ॥ १ ॥

प्रेम की धारा घट जागी ।
सुमत छाइ दुरमत अब भागी ॥ २ ॥
गुरू ने मोहिं बख़शा सोहागी ।
हूँ क्या हुई मैं ब भागी ॥ ३ ॥
ढ़त मेरा दिन दिन नुरागी ।
छुटी अब संगत मन कागी ॥ ४ ॥
काल और रम जले आगी ।
वासना या ी त्यागी ॥ ५ ॥
सुरत अब धुन रस में पागी ।
गाऊँ नित घट में गुरु रागी ॥ ६ ॥
कहूँ क्या महिमाँ गुरु स्वामी ।
हुई मैं चेरी बिन दामी ॥ ७ ॥
बसाई घट में पनी ी ।
बताई मुझ ो अचरज रीत ॥ ८ ॥
रही मैं जग में बहुत अजा ।
मिले मोहिं राधास्वामी पुरुष सुजान॥९॥
मेहर से आपहि अपनाया ।
हिये दरसन दि ॥ १० ॥
मेरी आपहि कीनी पूर ।
दिखा र नूर ॥ ११ ॥

दई मोहिँ निज चरनन की प्रीत ।
सरन मैं बख्शी दृढ़ परतीत ॥ १२ ॥
मनोरथ पूरन कीन्हे
रहूँ मैं निस दिन उन गुन गाय ॥ १३ ॥
जीव सब भरमन में अटके ।
भरम कर चौरासी भटके ॥ १४ ॥
कहूँ मैं उनको कर प्यारो ।
सरन राधास्वामी हिये धारो ॥ १५ ॥
जीव अपने हित लावो ।
नहीं तो जमपुर पछतावो ॥ १६ ॥
काल जुग महा कराला है ।
संत बिन नहीं गुजारा है ॥ १७ ॥
नाम राधास्वामी चित धारो ।
चलो भौसागर के पारो ॥ १८ ॥
शब्द की डोरी लो हाथा ।
चरन में राधास्वामी धर माथा ॥ १९ ॥
करूँ मैं आरत राधास्वामी ।
बिरह की जोत अनूप जगाय ॥ २० ॥
सुरत गगन पर धाय ।
चरन में राधास्वामी जायँ समाय ॥ २१ ॥

शब्द धुन बाजी नभ की ोर।
सहस दल परदा डाला तोड़ ॥ २० ॥
गगन में उठी शब्द की गाज।
रत गई त्रिकुटी पाया राज ॥ २१ ॥
सुन्न में धूम पड़ी भारी।
नी धुन सारंगी ारी ॥ २२ ॥
भँवर चढ़ मुरली लई बजाय।
गई सतपुर में बीन सुनाय ॥ २३ ॥
लख और अगम को निरखा जाय।
दरस राधास्वामी पाया ाय ॥ २४ ॥
रती पूरन कीनी आय।
दया राधास्वामी ि न २ पाय ॥ २५ ॥

॥ द ७ ॥

चरन गुरु प्रेम बढ़ा भारी।
रत हुई गुरु चरनन प्यारी ॥ १ ॥
सहज मन चंचलता ोड़ी।
ोह जग छिन में सब तोड़ी ॥ २ ॥
भोग ब लागे फीके।
पदार माया के ीके ॥ ३ ॥

सरन गुरु चरनन दृढ़ करती ।
प्रेम नित हिये अंतर भरती ॥ ४ ॥
सेव गुरु निस दिन चित भाई ।
चाँदनी हिये अंतर छाई ॥ ५ ॥
गही गुरु चरनन दृढ़ परतीत ।
त्याग दई मन से जग की रीत ॥ ६ ॥
कहूँ क्या महिमाँ राधास्वामी ।
काढ़ लिया मोहिं अंतरजामी ॥ ७ ॥
मेहर कर चरनन लिया लगाय ।
दया कर मुझ को लिया अपनाय ॥ ८ ॥
नहीं तो करम भरम बहती ।
काल के दुख सुख नित सहती ॥ ९ ॥
बड़ा मेरा जागा भाग बली ।
सुरत मेरी राधास्वामी चरन रली ॥१०॥
संग गुरु कस कहूँ महिमाँ गाय ।
सुक्ख सब भाँती दुख नहिं पाय ॥११॥
कसर सब मन की है अपने ।
सँग में दुख नहीं सुपने ॥ १२ ॥
करेगा जो कोइ गुरु का संग ।
बिरोधी होंगे सबही तंग ॥ १३ ॥

करे कोइ चाहे जितना ज़ोर ।
पकड़ सब जावेंगे ज्यों चोर ॥ १४ ॥
काल का रहा न कुछ अख़्तियार ।
डगर तज बैठी माया हार ॥ १५ ॥
गाऊँ गुरु महिमा बारम्बार ।
करी निज मुझ पर दया अपार ॥१६॥
काट दिया काल अधम का जाल ।
करम के मेटे सब दुख साल ॥१७ ॥
उमँग हिये बढ़ती अब दिन रात ।
करूँ गुरु सेवा नई नई भाँत ॥ १८ ॥
गाऊँ अब आरत सखियन साथ ।
चरन में राधास्वामी धर धर माथ ॥१९॥
थाल दूढ़ भक्ती लेउँ सजाय ।
उमँग की जोत जगाऊँ आय ॥ २० ॥
करी राधास्वामी दृष्टि निहार ।
गए सब संसय बाढ़ा प्यार ॥ २१ ॥
उमँग कर सुरत अधर चढ़ती ।
सँख धुन गरज गगन सुनती ॥ २२ ॥
सुन्न में बजती सारँग सार ।
गुफ़ा धुन मुरली करत पुकार ॥ २३ ॥

लोक सतपुरुष दरस पाती ।
अलख और अगम की चढ़ घाटी ॥ २४ ॥
दरश राधास्वामी पाया सार ।
हुई मैं छिन छिन उन बलिहार ॥ २५ ॥
लिया मोहिं राधास्वामी अंग लगाय ।
परम छबि राधास्वामी मोहिं सुहाय ॥ २६ ॥
गाऊँ गुन राधास्वामी बारम्बार ।
रहूँ नित हाज़िर गुरु दरबार ॥ २७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

उमँग मेरे हिये अंदर जागी ।
हुआ मन गुरु चरनन रागी ॥ १ ॥
बचन सुन हिरदे बाढ़ी प्रीत ।
शब्द की आई मन परतीत ॥ २ ॥
दरश गुरु करूँ सम्हार सम्हार ।
मगन होय पिऊँ अमीं रस धार ॥ ३ ॥
हुआ मोहिं गुरु भक्ती आधार ।
पंथ गुरु चलूँ बिचार बिचार ॥ ४ ॥
गुरू मोहिं दई प्रेम की दात ।
गाऊँ गुन उनका दिन और रात ॥ ५ ॥

चलो हे सखियो मेरे साथ ।
गुरू का पकड़ो दृढ़ कर हाथ ॥ ६ ॥
करो तुम सतसँग मन को मार ।
जगत की तजो बासना झाड़ ॥ ७ ॥
सुमत से करो शब्द का खोज ।
निरख घट अंतर मारो चौज ॥ ८ ॥
गुरू ने मोहिं दीना भेद अपार ।
देखती घट में अजब बहार ॥ ९ ॥
सराहूँ छिन छिन भाग अपना ।
गुरू ने मेट दिया तपना ॥ १० ॥
जगत का फीका लागा रंग ।
हुए मन माया दोनौं तंग ॥ ११ ॥
काल का क़रज़ा दिया उतार ।
करम का उतर गया सब भार ॥ १२ ॥
हुई गुरू चरनन दृढ़ परतीत ।
दीनता धारी बाढ़ी प्रीत ॥ १३ ॥
छोड़ दिया मन ने जग ब्योहार ।
भोग सब हो गए अब बीमार ॥ १४ ॥
मेहर बिन कस पाती यह दात ।
जगत में बहती दिन और रात ॥ १५ ॥

कभी नहिं मिलता यह आनंद ।
काल ने डाले बहु फंद ॥ १६ ॥
लिया मोहिं गुरु ने आप निकाल ।
काट दिए माया के ब जाल ॥ १७ ॥
कहूँ कस महिमाँ सतसँग गाय ।
भाग बिन कैसे यह सुख पाय ॥ १८ ॥
पड़ी थी जग में निपट जान ।
गुरू ने संग लगा । आन ॥ १९ ॥
शुकर उन कस स कहूँ बनाय ।
कहन और लेखन नहिं आय ॥२०॥
सुरत मन नभ पर पहुँचे धाय ।
शब्द धुन घंटा संख बजाय ॥ २१ ॥
सुना त्रिकुटी में भारी शोर ।
गरज और मृदँग ते घोर ॥ २२ ॥
सुन्न में पिया अमीं रस धाय ।
बाँसरी सुनी गुफा में जाय ॥ २३ ॥
बीन धुन सतपुर में जागी ।
अलख लख अगम सुरत लागी ॥ २४ ॥
दरश राधास्वामी पाया आय ।
प्रेम और उमँग रहा हिये छाय ॥२५॥

आरती सन्मुख धारी आय ।
चरन राधास्वामी हिये बसाय ॥ २६ ॥
हुए राधास्वामी आज दयाल ।
सरन दे मुझको किया निहाल ॥ २७ ॥

॥ शब्द ९ ॥

चरन गुरु बढ़त हिये अनुराग ।
बासना जग की दीन्ही त्याग ॥ १ ॥
गुरू मोहिं दीन्हा परम सोहाग ।
सुरत रही छिन छिन धुन रस लाग ॥२॥
दया मोपै बिन माँगे अस कीन ।
दरश मोहिं घट में निस दिन दीन ॥३॥
कहूँ क्या महिमाँ राधास्वामी गाय ।
सुरत मेरी चरनन लीन लगाय ॥ ४ ॥
पड़ी थी निरबल भव के कूप ।
दिखाया मुझ को अचरज रूप ॥ ५ ॥
चढ़ाया मुझको नभ के पार ।
दिखाई घट में अजब बहार ॥ ६ ॥
रहे मन इंद्री थक कर वार ।
सहज में पाया गुरु दीदार ॥ ७ ॥

छुड़ाए मन के सभी बिकार ।
करम मेरे काटे सबही झाड़ ॥ ८ ॥
कहूँ कस महिमाँ दया अपार ।
लिया मोहिं अपनी गोद बिठार ॥ ९ ॥
नहीं कोइ करनी मैंने कीन ।
नहीं कोइ सेवा मुझ से लीन ॥ १० ॥
नहीं कोइ बचन सुने मैं आय ।
नहीं मैं दरशन सन्मुख पाय ॥ ११ ॥
कुटँब सँग घर में रही लिपटाय ।
वहीं मोपै किरपा करी बनाय ॥ १२ ॥
सुरत रहे निस दिन रस माती ।
दरश नित हिये अंतर पाती ॥ १३ ॥
शब्द सँग करती नित्त बिलास ।
देखती घट में अजब उजास ॥ १४ ॥
तड़प हिये उठती बारम्बार ।
करूँ मैं सतसँग गुरु दरबार ॥ १५ ॥
चरन में बिनती करूँ बनाय ।
देव मोहिं दरशन पास बुलाय ॥ १६ ॥
करूँ मैं आरत सन्मुख आय ।
झुकर कर चरनन माथ नवाय ॥ १७ ॥

करो मेरी अभिलाखा पूरी ।
रहूँ सँग कोइ दिन तज दूरी ॥ १८ ॥
पाऊँ सतसँग का परम बिलास ।
शब्द का देखूँ घट परकाश ॥ १९ ॥
सुरत तब चढ़े गगन पर धाय ।
जोत लख गुरु पद परसे जाय ॥ २० ॥
सुन्न में तिरबेनी न्हावे ।
गुफ़ा चढ़ मुरली धुन पावे ॥ २१ ॥
सुने धुन बीना सतपुर आय ।
अलख लख अगम का दर्शन पाय ॥२२॥
चरन राधास्वामी कर दीदार ।
रहूँ मैं दम दम चरन अधार ॥ २३ ॥
दया बिन नहिँ पावे यह धाम ।
चढ़ै नहिँ बिन डोरी निज नाम ॥ २४॥
मेहर कर राधास्वामी दिया बिसराम
सरन में उनके रहूँ मुदाम ॥ २५ ॥

॥ शब्द १० ॥

दरश गुरु देखत हुई निहाल ।
बचन गुरु सुनत हुई खुशहाल ॥ १ ॥

सुनत गुरु महिमाँ बाढ़ा भाव ।
देख निज सतसँग बाढ़ा चाव ॥ २ ॥
प्रीत जब घट में जाग रही ।
जगत की लज्या त्याग दई ॥ ३ ॥
कोई कुछ कहवे मन नहिं मान ।
सरन गुरु चरनन गही निदान ॥ ४ ॥
उमँग मन गुरु सेवा नित लाग ।
हुई गुरु किरपा जागा भाग ॥ ५ ॥
भेद गुरु दीना मोहिं बताय ।
शब्द में सूरत छिन छिन लाय ॥ ६ ॥
रूप गुरु हिये अंतर धरना ।
काम और क्रोध लोभ तजना ॥ ७ ॥
नाम धुन मन से पल पल गाय ।
चित्त में दृढ़ परतीत बसाय ॥ ८ ॥
करो नित सत सँग मन को रोक ।
पाये तब सूरत शब्द सँजोग ॥ ९ ॥
बचन गुरु हिरदे में धरती ।
शब्द की करनी नित करती ॥ १० ॥
प्रेम रँग घट में लागा आय ।
कहूँ कस महिमाँ राधास्वामी गाय ॥ ११ ॥

जीव सब करम भरम भूले ।
काल और माया सँग झूले ॥ १२ ॥
कौन कहे उनको यह समझाय ।
बिना गुरु सब रहे धोखा खाय ॥ १३ ॥
शब्द बिन सुरत न जावे पार ।
गुरू बिन मिले न सत दीदार ॥ १४ ॥
गुरू ने मेरा दीना भाग जगाय ।
सरन दे मुझको लिया अपनाय ॥ १५ ॥
प्रेम सँग गुरु आरत करती ।
उमँग नित हिये अंतर बढ़ती ॥ १६ ॥
सुरत मेरी गगन ओर चढ़ती ।
शब्द में सुरत नित्त भरती ॥ १७ ॥
हुए राधास्वामी आज दयाल ।
शब्द घट जागा पाया हाल ॥ १८ ॥
रहूँ मैं निस दिन महिमाँ गाय ।
चरन में राधास्वामी जाऊँ समाय ॥१९॥

॥ शब्द ११ ॥

चरन गुरु परसे हुई निहाल ।
दीन हुई सतगुरु हुए दयाल ॥ १ ॥

ोड़ घर आई गुरु दरबार ।
मिला मोहिं सतसँग का रस सार ॥२॥
प्रीत गुरु चरन बढ़त दिन रात ।
रली तन   से रनन   ाथ ॥ ३ ॥
मोह जग म से त्याग दई ।
  ँग सूरत जाग रही ॥ ४ ॥
दर गुरु करती नैन निहार ।
सुरत मन घेरत लख उजियार ॥ ५ ॥
शब्द ी डोरी नित लौ लाय ।
 मीं रस पीवत रहूँ घाय ॥ ६ ॥
नाम राधास्वामी गा ँ नित्त ।
चरन में जोड़ूँ हित र चित्त ॥ ७ ॥
बचन गुरु कस कहुँ महिमाँ गाय ।
भरम सब दीने दूर बहाय ॥ ८ ॥
दूत शरमा र ऐंठ रहे ।
बिकारी थक र बैठ रहे ॥ ९ ॥
भोग इंद्रिन के हो गए ख़्वार ।
मान मद काढ़े सबही झाड़ ॥ १० ॥
हुआ मन जग से सहज उदास ।
चरन गुरु दृढ़ र बाँधी आस ॥ ११ ॥

प्रेम गुरु हिरदे छाय रहा ।
रूप गुरु मन मैं भाय रहा ॥ १२ ॥
चरन गुरु दम दम हिरदे धार ।
सरन पर तन मन डारूँ वार ॥ १३ ॥
सुरत मन चढ़ते नभ की ओर ।
सुनत अब घट मैं धुन घन घोर ॥१४॥
छाँट धुन घंटा सुनती धाय ।
जोत का रूप निहारूँ आय ॥ १५ ॥
घाट फिर त्रिकुटी पाऊँ जाय ।
सूर जहाँ लाल लाल दिखलाय ॥१६ ॥
सुन्न चढ़ मानसरोवर न्हाय ।
गुफ़ा मैं मुरली रही बजाय ॥ १७ ॥
गई सतपुर मैं पाया बास ।
अलख लख अगम लखा परकाश ॥१८॥
निरखिया आगे फिर निज धाम ।
पाइया राधास्वामी पद बिसराम ॥१९॥
आरती राधास्वामी कीनी आय ।
उमँग और प्रेम रहा हिये छाय ॥ २० ॥

॥ शब्द १२ ॥

उमँग मेरे हिये उठती भारी ।
करूँ गु　　रत [illegible]ी ॥ १ ॥
सजा कर थाली कर धारी ।
बना कर जो　　गी न्यारी ॥ २ ॥
उमँग कर आरत गाता री ।
निरख छबि हुआ　　मा　　री ॥ ३ ॥
बिरह हिये माँि　उठाता री ।
प्रीत ि　　नई　गाता री ॥ ४ ॥
दीनता चित　　　ाता री ।
गुरू की सेव कमाता री ॥ ५ ॥
ब्द　सुरत　गाता री ।
　　ग　　रस पाता री ॥ ६ ॥
रूप गुरु　　धराता री ।
सुरत　　गगन　　ता री ॥ ७ ॥
निरं　न　ोत धियाता री ।
　　धुन घंट ब　ाता री ॥ ८ ॥
तिरकुटी गढ़ पर धावा कीन ।
गरज सुन गुरु मूरत लख लीन ॥ ९ ॥

परे चढ़ तिरबेनी न्हाई ।
चँद्र की जोत जहाँ छाई ॥ १० ॥
महासुन अँधियारा देखा ।
गुफ़ा चढ़ सेत नूर पेखा ॥ ११ ॥
सत्तपुर बाजी धुन बीना ।
अजायब पुरुष दरश लीना ॥ १२ ॥
दई दुरबीन पुरुष भारी ।
अलख लख आगे पग धारी ॥ १३ ॥
वहाँ से गई अगम दरबार ।
भूप कुल निरखा सुरत सम्हार ॥ १४ ॥
चरन राधास्वामी फिर परसे ।
सुरत मन पाय दरश हरखे ॥ १५ ॥
कहूँ क्या सोभा पिया प्यारे गाय ।
सुरत मेरी कहत रही शरमाय ॥ १६ ॥
करी मोपे राधास्वामी दया अपार ।
गाऊँ गुन उनका बारम्बार ॥ १७ ॥
नाव मेरी बहत रही मँझधार ।
दिया राधास्वामी पार उतार ॥ १८ ॥
सरन दे मुझ को लिया अपनाय ।
मेहर कर चरनन लिया लगाय ॥ १९ ॥

उमँग और प्रेम रहा भरपूर ।
दास अब कीनी आरत पूर ॥ २० ॥
जिऊँ मैं चरन अमीं रस खाय ।
रहूँ नित राधास्वामी महिमाँ गाय ॥२१॥

॥ शब्द १३ ॥

गुरू से मेरी प्रीत लगी ारी ।
सुरत मन चरनन पर वारी ॥ १ ॥
हूँ क्या महिमाँ गुरु भारी ।
भाव जग दिया मन से टारी ॥ २ ॥
बचन सुन हुई मलिनता नाश ।
दर कर देखा घट परकाश ॥३ ॥
रत ौर शब्द जोग झीना ।
बताया गुरु ि रपा ीना ॥ ४ ॥
ना की महिमाँ गाई सार ।
सुरत मन न हुये रशार ॥ ५ ॥
छुड़ाई मुझसे ि रत सार ।
हटाया मन का निज अहँकार ॥ ६ ॥
मेहर से दीना भक्ती दान ।
प्रीत की रीत सिखाई आन ॥ ७ ॥

दई मोहि निज चरनन परतीत ।
सरन गुरु धारी भौ भ्रम जीत ॥ ८ ॥
करम मेरे काटे राधास्वामी आय ।
लिया मोहिं किरपा कर अपनाय ॥९॥
जिऊँ मैं नित निस गुरु गुन गाय ।
काल से लीना आप बचाय ॥ १० ॥
दया कर मन मेरा गढ़ लीन ।
सुरत में बिरह प्रेम धर दीन ॥ ११ ॥
उठत अभिलाखा स मन मोर ।
करत रहूँ दरशन नैना जोड़ ॥ १२ ॥
सेव गुरु करत रहूँ निस बास ।
पाऊँ मैं पदवी दासन दास ॥ १३ ॥
अमीं रस सतसँग पीऊँ नित्त ।
जोड़ रहूँ गुरु चरनन में चित्त ॥ १४ ॥
करूँ नित आरत सखियन साथ ।
रहे गुरु चरनन मेरा माथ ॥ १५ ॥
प्रेम की धारा रहे जारी ।
सुरत हुई सतगुरु की प्यारी ॥ १६ ॥
उमँग नित बढ़ती रहे हिय माँहि ।
रहूँ नित गुरु चरनन की ँहि ॥ १७ ॥

बिनय नित करूँ पुकार पुकार ।
गुरू मोहिँ दीजे चरन अधार ॥ १८ ॥
रहूँ नित राधास्वामी महिमाँ गाय ।
सुरत मेरी निज पद जाय समाय ॥१९॥

॥ शब्द १४ ॥

जगा मेरा अचरज भाग अपार ।
सरन राधास्वामी पाई सार ॥ १ ॥
करम और भरम तिमर नाशा ।
बँधी स्वामी चरनन की आसा ॥ २ ॥
लिया मोहिँ आपहि चरन लगाय ।
भाव और भक्ति दई अधिकाय ॥ ३ ॥
रहे नित प्रीत चरन बढ़ती ।
शब्द सँग सुरत अधर चढ़ती ॥ ४ ॥
जगत की किरत लगी फीकी ।
कौन यह बूझे मेरे जिय की ॥ ५ ॥
जीव सब भूले भरमन में ।
फँसे सब रहते करमन में ॥ ६ ॥
प्रीत चरनन में नहिँ लावें ।
संत की महिमाँ नहिँ जानें ॥ ७ ॥

इसी से भुगतैं चौरासी ।
कौन उन काटे जम फाँसी ॥ ८ ॥
कहूँ मैं उन को हित रके ।
रन राधास्वामी गहो दृढ़ के ॥ ९ ॥
सुरत और शब्द राह चलना ।
सहज मैं भौ सागर तरना ॥ १० ॥
दया स्वामी मुझ पै की भारी ।
चरन पै बार बार वारी ॥ ११ ॥
लिया मेरे मन को आप उधार ।
भोग बे क़दर कराए झाड़ ॥ १२ ॥
दई मोहि चरनन मैं परतीत ।
प्रेम की देखी अचरज रीत ॥ १३ ॥
रहूँ मैं राधास्वामी चरन सम्हार ।
जिऊँ मैं राधास्वामी चरन अधार ॥१४॥
आरती हित चित से करती ।
उँमग रहे नित हिये मैं बढ़ती ॥ १५ ॥
मेहर राधास्वामी नित चाहूँ ।
दरश स्वामी नित घट मैं पाऊँ ॥ १६ ॥
रहे मन सुरत चरन लौ लीन ।
बढ़े घट प्रेम ग़रीबी दीन ॥ १७ ॥

॥ शब्द १५ ॥

हुई गुरू सन्मु ुत ारी ।
वहीं घट प्रीत जगी ारी ॥ १ ॥
हुई ब गुरू ी परती ।
प्रेम ी प्यारी ागी रीत ॥ २ ॥
बिरह नुराग ब दिन रात ।
गुरू सम और चित्त ात ॥ ३ ॥
तड़प मन गुरु दरशन को धाय ।
उमँग मन गुरू सेवा को चाह ॥ ४ ॥
बसत चाहत त ँग ी ।
चढ़त नित रंगत गुरू रँग ी ॥ ५ ॥
मेहर गुरू भाग मेरा जागा ।
बसा मन गुरू चरनन रागा ॥ ६ ॥
नाम गुरू जपत रहूँ तन मैं ।
रूप गुरू ध्यान धरूँ मन ॥ ७ ॥
सुरत सैं धरा शब्द ा प्यार ।
जुगत सँग भजन सम्हारूँ ार ॥ ८ ॥
कौन कहे राधास्वामी त महिमाँ ।
थके सब बेद पुरान कुरान ॥ ९ ॥

संत यह जानें भेद पार ।
बिना उन कौन जनावे पार ॥ १० ॥
ख़बर धुर घर नहिं जाने कोय ।
सभी करमन में गए बिगोय ॥ ११ ॥
दया कर राधास्वामी जग आए ।
भेद उन अपना सब गाए ॥ १२ ॥
जगत जिव करमन के मारे ।
बचन उन चित्त नहीं धारे ॥ १३ ॥
फसे सब रहते माया देश ।
भोगते निस दिन काल कलेश ॥ १४ ॥
कहूँ क्या राधास्वामी के गुन गाय ।
दया कर मुझको लिया अपनाय ॥ १५ ॥
छुड़ाया मुझ से करम असार ।
हटाया भूल भरम से पार ॥ १६ ॥
दिया मोहिं भेद सार का सार ।
दिखाया घट में परम उजार ॥ १७ ॥
प्रेम सँग आरत उन करती ।
निरख छबि हिये अंदर धरती ॥ १८ ॥
करी मोपै राधास्वामी दया बनाय ।
सरन दे गोद लिया बिठलाय ॥ १९ ॥

॥ ब्द १६ ॥

बिमल चित गुरु चरनन लागा ।
दास घट बाढ़ा नुरागा ॥ १ ॥
ढूँढ़ता बहुत फिरा जग ।
भट गए ब जिव । ग ॥ २ ॥
बोलते से ची बात ।
परख नहिं पाई तगुरु । ॥ ३ ॥
संत । मर नहीं जाना ।
ग्रंथ प पढ़ हुए दीवाना ॥ ४ ॥
खोजता आया राधास्वामी पास ।
दरश कर हियरे हुला ॥ ५ ॥
बचन न ाई न परतीत ।
चरन गुरु के धारी प्री ॥ ६ ॥
भेद त ग । मोहिं दीना ।
सुरत हुई धुन में लौ लीना ॥ ७ ॥
मेहर राधास्वामी पाई ाय ।
दिया मेरा सोता भाग जगाय ॥ ८ ॥
गुरू की महिमाँ ब जानी ।
नाम धुन सुन हुई मस्तानी ॥ ९ ॥

सुरत रस शब्द लेत दिन रात ।
स्वामी की महिमाँ निस दिन गात ॥१०॥
संत के कस कस गुन गाऊँ ।
चरन पर नित नित बल जाऊँ ॥ ११ ॥
शब्द की गहिरी लागी चोट ।
गही जब सतगुरु की मैं ओट ॥ १२ ॥
रहे मन इंद्री थक कर वार ।
काल और करम रहे झख मार ॥ १३ ॥
गुरू ने पकड़ी मेरी बाँह ।
बिठाया निज चरनन की छाँह ॥ १४ ॥
अँधेरा छाय रहा संसार ।
भेख और पंडित भरमैं वार ॥ १५ ॥
जीव सब भूले उनके संग ।
हुए सब मैले माया रंग ॥ १६ ॥
कहूँ मैं उनको अब समझाय ।
सरन लो सतगुरु की तुम आय ॥ १७ ॥
जीव का अपने करलो काज ।
नहीँ फिर जमपुर आवे लाज ॥ १८ ॥
नहीँ कुछ तीरथ मैं मिलना ।
चित्त नहिँ मूरत मैं धरना ॥ १९ ॥

चरन राधास्वामी परसो न्याय ।
सहज मैं सूरत निज घर जाय ॥ २० ॥
उमँग मेरे मन मैं उठती ज ।
रूँ राधा मी रत साज ॥ २१ ॥
प्रेम ँग गुरु स्तुत गाती ।
मेहर राधा मी छिन २ पाती ॥ २२ ॥
जोत ा दरशन नभ पाती ।
गरज सुन सुरत गगन जाती ॥ २३ ॥
सु मैं तिरबेनी न्हाती ।
गुफ़ा चढ़ मुरली बजवाती ॥ २४ ॥
सत्त और अलख अगम पारा ।
चरन राधास्वामी परसाती ॥ २५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

चरन गुरु दिन दिन बढ़त उमंग ।
दिया मोहिं किरपा कर निज संग ॥१॥
दिखा छबि मन मेरा हर लीन ।
प्रीत मेरे हियरे मैं धर दीन ॥ २ ॥
बिरह नित दरशन की उठती ।
बचन सुन भाव भक्ति बढ़ती ॥ ३ ॥

भरे थे मन में बहुत बिकार ।
दया कर लीना मोहिं सम्हार ॥ ४ ॥
करूँ अब सतसँग दिन राती ।
उमँग अब नइ नइ हिये लाती ॥ ५ ॥
सेव गुरु करती सहित उमंग ।
पिरेमी जन सँग लागा रंग ॥ ६ ॥
करे जो गुरु से मेरे प्रीत ।
सुनाऊँ उसको भक्ती रीत ॥ ७ ॥
गुरू की महिमाँ नित्त सुनाय ।
प्रीत उन हिरदे देती बढ़ाय ॥ ८ ॥
कहूँ मैं सब जीवों से येह ।
सुफल करो अपनी अब नर देह ॥ ९ ॥
सरन में सतगुरु के आवो ।
चरन में भाव भक्ति लावो ॥ १० ॥
होय निस्तारा तुमरा हाल ।
दया गुरु काटें माया जाल ॥ ११ ॥
अभागी जीव न माने कोय ।
मुफ़्त नर देही देते खोय ॥ १२ ॥
प्रेम मेरे घट में अब बाढ़ा ।
चरन गुरु सूरत मन साधा ॥ १३ ॥

करूँ गुरु आरत चित्त सम्हाल ।
हुए अब मुझ पर गुरू दयाल ॥ १४ ॥
फंद से मन के काढ़ँ हाल ।
सरन दे मुझ को करें निहाल ॥ १५ ॥
भाग बढ़ मेरा अब जागा ।
भरम और संशय सब भागा ॥ १६ ॥
सरन राधास्वामी हिये धारी ।
चरन सतगुरु हुइ आधारी ॥ १७ ॥
सहसदल घंटा बाजे सार ।
गगन में गुरु मूरत उजियार ॥ १८ ॥
सुन्न में हंसन सँग गाती ।
गुफ़ा धुन मुरली सँग राती ॥ १९ ॥
पुरुष सत तख़्त बिराज रहे ।
अलख और अगम्म राज रहे ॥ २० ॥
परे तिस धाम अनूप अनाम ।
परम गुरु राधास्वामी का बिसराम ॥२१॥

॥ शब्द १८ ॥

ध्यान गुरु धार रही मन में ।
नाम गुरु सुमिर रही छिन में ॥ १ ॥

दरश गुरु निरखत हुई निहाल ।
चरन गह मगन हुई दरहाल ॥ २ ॥
बचन सुन बाढ़ी चित्त उमंग ।
भक्ति हिये जागी लागा रंग ॥ ३ ॥
सुनत गुरु महिमाँ हरखाती ।
गुरू की लीला मन भाती ॥ ४ ॥
देख सत संगत उठता चाव ।
निरख छबि मन में बढ़ता भाव ॥ ५ ॥
सुरत और शब्द राह झीनी ।
दई सोहिं गुरु किरपा कीनी ॥ ६ ॥
नाम राधास्वामी गाऊँ सार ।
चरन में जोड़ूँ चित धर प्यार ॥ ७ ॥
रहूँ नित परखत मन की चाल ।
चलूँ नित निरखत माया जाल ॥ ८ ॥
दया राधास्वामी लेकर संग ।
करूँ मैं निस दिन मन से जंग ॥ ९ ॥
नाम राधास्वामी हिरदे धार ।
निकारूँ घट से सभी बिकार ॥ १० ॥
चरन गुरु प्रीत बढ़ाऊँगी ।
हिये परतीत बसाऊँगी ॥ ११ ॥

मेरे मन निश्चय अस होई ।
नहीं है राधास्वामी सम कोई ॥ १२ ॥
वही हैं समरथ दीन दयाल ।
वही फिर काटैं जम का जाल ॥ १३ ॥
मेहर की दृष्टि करें जिस पर ।
बचावैं उस को अपना कर ॥ १४ ॥
जगा अब मेरा अचरज भाग ।
रही मैं उन चरनन से लाग ॥ १५ ॥
जगत के जीव सभी मूरख ।
भेद सत संग न जानें कुछ ॥ १६ ॥
भरम से गुरु निंद्या करते ।
भाव परमारथ नहिं धरते ॥ १७ ॥
जगत का भाव बसा मन में ।
भक्ति की रीत नहीं जानें ॥ १८ ॥
बचन उन मन में नहिं धारूँ ।
चरन पर तन मन धन वारूँ ॥ १९ ॥
प्रेम की आरत लीन जगाय ।
फेरती गुरु सन्मुख सरनाय ॥ २० ॥
मेहर की दृष्टी राधास्वामी कीन ।
सुरत लगी चरनन ज्यों जल मीन ॥ २१ ॥

॥ शब्द १९ ॥

हुई मैं मूल नाम दासी ।
मिले मोहिं सतगुरु अबिनाशी ॥ १ ॥
दरश बिन मन ब्याकुल रहता ।
जगत जीवन सँग दुख सहता ॥ २ ॥
उठत नित दरशन को जाती ।
देख छबि हिये में मगनाती ॥ ३ ॥
बचन सुन हुई मैं दीन अधीन ।
लखी गुरु मूरत हिये में चीन ॥ ४ ॥
प्यार सतसँग में नित बढ़ता ।
उमँग मन नित घट में चढ़ता ॥ ५ ॥
सुरत और शब्द जोग पूरा ।
दिया मोहिं गुरु ने किया सूरा ॥ ६ ॥
गुरू के चरनन बलिहारी ।
प्रीत उन संग लगी सारी ॥ ७ ॥
गुरू सँग मैं नित नित चाहूँ ।
प्यार सतसँगियन में लाऊँ ॥ ८ ॥
फूल चुन चुन कर हार बनाय ।
गुरू के गल पहिनाऊँ आय ॥ ९ ॥

आरती गुरु चरनन में धार ।
बिरह की जोत जगाऊँ सार ॥ १० ॥
प्रेम सँग आरत गाती आय ।
सरन राधास्वामी चित्त बसाय ॥ ११ ॥

॥ शब्द २० ॥

चरन गुरु मनुआँ लागा री ।
मोह जग छिन में त्यागा री ॥ १ ॥
खोजता धावत आयारी ।
संग गुरु पूरे पाया री ॥ २ ॥
बचन सुन भजन कमाया री ।
हिये में नाम जगाया री ॥ ३ ॥
प्रीत गुरु चरन बढ़ाया री ।
सुरत मन अधर चढ़ाया री ॥ ४ ॥
काल और करम हटाया री ।
पाप और पुन्न नसाया री ॥ ५ ॥
सहस दल जोत जगाया री ।
गगन धुन गरज सुनाया री ॥ ६ ॥
सुन्न चढ़ बेनी न्हाया री ।
गुफा चढ़ सोहँग गाया री ॥ ७ ॥

सत्तपुर पुरुष मनाया री ।
बीन धुन अधर बजाया री ॥ ८ ॥
अलख और अगम धाया री ।
दरश राधास्वामी पाया री ॥ ९ ॥
प्रेम अँग आरत गाया री ।
अनामी पुरुष रिझाया री ॥ १० ॥
धाम यह कोई न पाया री ।
काल ने जग भरमाया री ॥ ११ ॥
तीन गुन देव पुजाया री ।
जीव सब दुख सुख पाया री ॥ १२ ॥
ख़बर निज घर नहिँ पाया री ।
संत बिन कौन जनाया री ॥ १३ ॥
बड़ा मेरा भाग सुहाया री ।
सरन राधास्वामी आया री ॥ १४ ॥
दया कर भेद बताया री ।
मेहर से धुर पहुँचाया री ॥ १५ ॥
कहाँ लग महिमाँ गाया री ।
चरन में सीस नवाया री ॥ १६ ॥
दया गुरु काज बनाया री ।
उलट राधास्वामी ध्याया री ॥ १७ ॥

॥ शब्द २१ ॥

दरस गुरु जब मैं कीन्हा री ।
रूप रस हुआ मन भीना री ॥ १ ॥
हुई जब धार बचन जारी ।
सुरत मन भीँज गए सारी ॥ २ ॥
मेहर की दृष्टि करी गुरु ने ।
लगा मन शब्द ध्यान जुड़ने ॥ ३ ॥
भेद मोहि गुप्त दिया जबही ।
हरे मेरे मन बुद्धी तबही ॥ ४ ॥
प्रेम की धार लगी बहने ।
सुरत धुन शब्द लगी गहने ॥ ५ ॥
उमँग अब घट भीतर जागी ।
हुए मन सूरत अनुरागी ॥ ६ ॥
धावता दरशन को हर बार ।
प्रीत गुरु बढ़ती हिये में सार ॥ ७ ॥
सेव गुरु उमँग सहित करता ।
चरन हिये प्रीत सहित धरता ॥ ८ ॥
प्रेम गुरु लागा हिरदे रंग ।
उठत आरत की नई उचंग ॥ ९ ॥

प्रीत से भाव वस्त्र लाता ।
मगन होय गुरु को पहिनाता ॥ १० ॥
सुधा रस ब्यँजन बनवाता ।
थाल भर गुरु सन्मुख लाता ॥ ११ ॥
हंस जुड़ मिल आरत गाते ।
उमँग और प्रेम प्रीत राते ॥ १२ ॥
शब्द धुन गाज रही घन घोर ।
संख और घंटा डाला शोर ॥ १३ ॥
गगन गढ़ सूरत चढ़ चाली ।
गरज धुन मिरदँग सम्हाली ॥ १४ ॥
सुन्न में सारँग बाज रही ।
गुफ़ा धुन मुरली साज रही ॥ १५ ॥
मधुर धुन बीन बजे सतलोक ।
पुरुष सँग पाया सूरत जोग ॥ १६ ॥
अलख और अगम पुरुष दरबार ।
किया जाय दरशन निरख निहार ॥१७॥
लखा फिर राधास्वामी अचरज धाम ।
सुरत ने पाया अब बिसराम ॥ १८ ॥
मेहर राधास्वामी बरनी न जाय ।
सुरत मेरी छिन छिन रही गुन गाय ॥१९॥

॥ शब्द २२ ॥

बसी मेरे घट में गुरु परतीत ।
प्रीत ी पर ी अचरज रीत ॥ १ ॥
ा गुरु लागा ति प्यारा ।
रत ौर शब्द जोग धारा ॥ २ ॥
हूँ मैं नित नित गुरु संग ।
प्रेम गुरु लागा हिरदे रंग ॥ ३ ॥
जी जग भिलाखा सारी ।
भोग जग लागे सब खारी ॥ ४ ॥
दई सब ाया ममता ोड़ ।
लिया गुरु चरन जो ॥ ५ ॥
ब न गुरु हुआ न ली ।
रस ौर भर हुए सब ीन ॥ ६ ॥
जगत ि नई ई घट परतीत ।
बढ़त नित चर न गहिरी प्रीत ॥ ७ ॥
संतसँग महिमाँ रनी ा ।
मेहर से कोई ड़ भागी पाय ॥ ८ ॥
मिला जिस जन ो गुरु ग ।
उड़न लागा दि न दि न ाया रंग ॥ ९ ॥

लगे सब डरने घट के चोर ।
थका फिर काल करम का ज़ोर ॥ १० ॥
मेहर बिन नहिं होवे निरमल ।
करे कोइ सतसँग नित चल चल ॥ ११ ॥
गुरू ने मेरा दीना भाग जगाय ।
खैंच निज चरनन लिया अपनाय ॥ १२ ॥
मगन होय दरशन करता नित्त ।
चरन में धरता हित कर चित्त ॥ १३ ॥
प्रेम अँग आरत लीन जगाय ।
गावता गुरु के सन्मुख आय ॥ १४ ॥
शब्द धुन गरज रही घन घोर ।
सुरत मन चढ़ते घट में दौड़ ॥ १५ ॥
सरन राधास्वामी हिये सम्हार ।
निरखती घट में सदा बहार ॥ १६ ॥
मेहर की दृष्टी कीनी पूर ।
हुई मैं राधास्वामी चरनन धूर ॥ १७ ॥

॥ शब्द २३ ॥

चरन गुरु बसे हिये में आय ।
सरन गुरु गही उमँग मन धाय ॥ १ ॥

स्वामी का दरशन लगा प्यारा ।
हुआ घट अंतर उजियारा ॥ २ ॥
सुनत गुरु बचन हिया उमगाय ।
प्रेम और प्रीत लगी अधिकाय ॥ ३ ॥
हुई अब मन में दृढ़ परतीत ।
सुरत में धरी शब्द की प्रीत ॥ ४ ॥
भाग मेरा जागा अब भारा ।
मिला राधास्वामी सतसँग सारा ॥ ५ ॥
शब्द का भेद अनूप अपार ।
दिया मोहि गुरु ने किरपा धार ॥ ६ ॥
सुरत मेरी कीनी गुरु ने सार ।
छुड़ाया करम भरम गुब्बार ॥ ७ ॥
देव और देवी नहिं पूजूँ ।
प्रेम रँग गुरु चरनन भीजूँ ॥ ८ ॥
बरत और तीरथ छोड़ दिये ।
चरन गुरु दृढ़ कर पकड़ लिये ॥ ९ ॥
पढ़ैं सब पंडित बेद पुरान ।
भेद नहिं पावैं रहैं अजान ॥ १० ॥
गाऊँ कस राधास्वामी मेहर अपार ।
सरन दे किया मोर उपकार ॥ ११ ॥

काल मत भूल रहा संसार ।
लिया मोहिँ गुरु ने सहज निकार ॥१२॥
प्रीत मेरे हिये में घर दीनी ।
प्रेम रँग सुरत हुई भीनी ॥ १३ ॥
शब्द घट सुनता सुरत लगाय ।
झाँट धुन घंटा निरत जगाय ॥ १४ ॥
आरती घट में नित करता ।
गगन चढ़ गुरु मूरत लखता ॥ १५ ॥
सुन्न चढ़ भँवर गुफ़ा धावत ।
लोक सत गाऊँ सतगुरु आरत ॥ १६ ॥
अलख और अगम चरन परसे ।
सुरत मन निज करके हरखे ॥ १७ ॥
चरन राधास्वामी निरख निहार ।
आरती गाऊँ उनकी सार ॥ १८ ॥
दया जस राधास्वामी मोपै कीन ।
कहीं नहिँ जाय सुरत हुई लीन ॥ १९ ॥

॥ शब्द २४ ॥

सुरत मन फैल रहे जग माँहि ।
मिले मोहिँ राधास्वामी पाया ठाँव ॥१॥

मेहर की दृष्टि करी मुझ पै ।
गए सब कल मल तन मन से ॥ २ ॥
भड़क कर तड़न उठत भारी ।
करत मन जब कुल संसारी ॥ ३ ॥
बिरह की अगनी भड़काती ।
सुरत मन चरनन सरकाती ॥ ४ ॥
बचन सतसँग के सुनती सार ।
लोभ और मोह पर पड़ती धाड़ ॥ ५ ॥
क्रोध खिच खिच कर सोय रहा ।
मान मद चरनन मोह रहा ॥ ६ ॥
दरश गुरु करती नैनन से ।
प्रीत लगी सतगुरु बैनन से ॥ ७ ॥
सुमिर गुरु याद बढ़ी दिल में ।
रूप गुरु झाँक रही तिल में ॥ ८ ॥
प्रेम मेरे हिरदे बढ़ता नित्त ।
चरन गुरु रहता हित कर चित्त ॥ ९ ॥
देख माया का अजब पसार ।
भागती घर को तन मन झाड़ ॥ १० ॥
करम सँग खट पट नित करती ।
शब्द सँग झट पट पग धरती ॥ ११ ॥

काल सँग होत लड़ाई नित्त ।
गुरू की गाऊँ बड़ाई नित्त ॥ १२ ॥
सूर होय चोरन धमकाती ।
दरश गुरु निरखत मुसकाती ॥ १३ ॥
बढ़त सत सँगियन से अब प्यार ।
उमँग मन सेवा करत सम्हार ॥ १४ ॥
हरखती निरखत गुरू सिंगार ।
मगन होय देती तन मन वार ॥ १५ ॥
चाव गुरु आरत मन में लाय ।
प्रेम की थाली लीन सजाय ॥ १६ ॥
बिरह की जोती गगन जगाय ।
शब्द धुन घंटा शंख सुनाय ॥ १७ ॥
ताल और मिरदंग किंगरी बजाय ।
हंस सँग हिल मिल आरत गाय ॥१८॥
अधर चढ़ मुरली बीन बजाय ।
परम गुरु राधास्वामी लीन रिझाय ॥१९॥

॥ शब्द २५ ॥

दया राधास्वामी हुई भारी ।
प्रेम की सींचूँ घट क्यारी ॥ १ ॥

हुई मैं गुरु की पनिहारी।
अमीं जल भरत नहीं हारी ॥ २ ॥
पिलाऊँ सुत गउअन सारी।
लगी मोहिं यह सेवा प्यारी ॥ ३ ॥
स्वामी की महिमा कस गाऊँ।
दई मोहिं गुरु मंदिर ठाँऊँ ॥ ४ ॥
खिली जहाँ भक्ती फुलवारी।
भूम वह लागे अति प्यारी ॥ ५ ॥
प्रेम की झड़ियाँ लाग रहीं।
सुरत म ी जल जाग रहीं ॥ ६ ॥
बृक्ष और खा फूल रहे।
मोर और दादुर बोल रहे ॥ ७ ॥
हं ब जुड़ मिल वें।
अमीं फल खावें और हरखा ॥ ८ ॥
दे गुरु दिर अज बि ।
नित झुरता होत उदास ॥ ९ ॥
भि ा और सु र रूप पहि ।
करत गुरु दिर वन ान ॥ १० ॥
मेहर राधस्वामी कीनी।
सुरता निज कर मोहिं दीनी ॥ ११ ॥

अकेला बन में रहा ललकार ।
विघन सब छिन में टारे झाड़ ॥ १२ ॥
क्रोध को राखा बाँध गुलाम ।
धार कर हिरदे राधास्वामी नाम ॥१३॥
चहूँ दिस धाक पड़ी भारी ।
हुई गुरु मँदिर उजियारी ॥ १४ ॥
घंट और संख लगे बजने ।
काम और लोभ देस तजने ॥ १५ ॥
बंक चढ़ त्रिकुटी पहुँची धाय ।
गुरू का दरशन सन्मुख पाय ॥ १६ ॥
जहाँ अब आरत लीन सजाय ।
चन्द्र की जोत जगाई आय ॥ १७ ॥
बीन और मुरली बाज रही ।
पुरुष सँग आरत साज रही ॥ १८ ॥
परम गुरु राधास्वामी हुए दयाल ।
सरन दे मुझ को किया निहाल ॥ १९ ॥

॥ शब्द २६ ॥

चरन उर धारो राधा प्यारी ।
निरख घट झाँको उजियारी ॥ १ ॥

परम गुरु राधास्वामी को मानो ।
सर्व घट पूरन उन जानो ॥ २ ॥
वही हैं समरथ कुल दातार ।
लगावें सब को इ　दिन पार ॥ ३ ॥
　रत से करो चर　　ध्यान ।
ओट उन गहो सरन　　मान ॥ ४ ॥
करो तुम सतसँग चित्त लगाय ।
　न उन हिरदे माँहिं　माय ॥ ५ ॥
　राधास्वामी　ि रो नित्त ।
शब्द धुन　नियो देकर चित्त ॥ ६ ॥
राख　　ँग　से प्यार ।
गुरू की　हिमाँ गाओ　ार ॥ ७ ॥
　रू　ी सेव करो हित से ।
गाओ गुरू　ारत　चि　से ॥ ८ ॥
जीव सब　ँसे　ाल के　ाल ।
रहैं नित माया　ँग बेहा　॥ ९ ॥
　रैं नित पूजा तिरगु　ी ।
ख़बर नहिं पाते नि　घर　ी ॥ १० ॥
　जानैं नहिं कोई ।
　नते माया ब्रह्म दोई ॥ ११ ॥

बेद और शास्तर सम्रत पुरान ।
पढ़ँ नहिं पावँ भेद अजान ॥ १२ ॥
भाग बड़ मेरा जागा आय ।
लिया मोहिं राधास्वामी चरन लगाय॥१३
उमँग कर आरत उन करती ।
प्रीत गुरु हिये अंदर धरती ॥ १४ ॥
गाऊँ नित महिमाँ राधास्वामी सार ।
दया कर किया जीव उपकार ॥ १५ ॥

॥ शब्द २७ ॥

करूँ मैं आरत राधास्वामी की ।
जताऊँ भाव प्रीत उर की ॥ १ ॥
रहा मैं करम धरम भरमाय ।
स्वामी ने लीना संग लगाय ॥ २ ॥
दिखाया सतसँग संतन सार ।
दई मोहिं निज सिक्षा कर प्यार ॥३॥
बताया सुरत शब्द का भेद ।
मिटाया जनम जनम का खेद ॥ ४ ॥
बहे था काम क्रोध की धार ।
सहे था मोह लोभ की मार ॥ ५ ॥

कुटँब परिवार ग लिपटा ।
जगत ग द द धोखा ॥ ६ ॥
गुरू ने खैंचा किरपा धार ।
लगाया चर सरन की लार ॥ ७ ॥
मेरे म निश्चय है भारी ।
पाप पु धोवैंगे सारी ॥ ८ ॥
करूँ मैं आरत उमँग ।
गुरू की महिमाँ कि ि न ॥ ९ ॥
मेहर से दीना पार ।
काल और रम रहे रभ ॥ १० ॥
प्रीत अब नित घट में बढ़ती ।
सुरत धुन शब्द प ी ॥ ११ ॥
सहसदल घंट शंख बाजे ।
गगन में धुन मिरदंग गाजे ॥ १२ ॥
सुन्न में सारंगी बज ी ।
गुफ़ा में मुरली धु सजती ॥ १३ ॥
लोक सत अलख ग के पार ।
चरन राधास्वामी परसे सार ॥ १४ ॥
मेहर से काज हु पूरा ।
हुआ मैं राधास्वामी दर धूरा ॥ १५ ॥

॥ शब्द २८ ॥

दरश गुरु करता सहित उमंग ।
चरन उर धरता प्रीत अभंग ॥ १ ॥
रूप रस महिमाँ बरनी न जाय ।
बचन रस निस दिन पियत अघाय ॥२॥
सरन गुरु जब मन धार लई ।
सुरत मेरी छिन छिन पार गई ॥ ३ ॥
गुरू मेरे समरथ पुरुष अपार ।
जगत में ाए धर औतार ॥ ४ ॥
मेहर से किया जीव उपकार ।
बहुत जिव लीने तुरत उबार ॥ ५ ॥
नाम राधास्वामी गाया ार ।
दई निज चरन सरन र प्यार ॥६॥
कहूँ मैं जग जीवन समुझाय ।
चरन राधास्वामी पकड़ो धाय ॥ ७ ॥
देव ौर देवी पूजो ।
ज्ञान थोथा है बूझो ॥ ८ ॥
शब्द का लो उपदेश सम्हार ।
चलो फिर काल देस के पार ॥ ९ ॥

सुरत से सुनो शब्द घट ।
लखो गुरु मूर ि पट ॥ १० ॥
फल हो नर देही तुम्हरी ।
नहीं तो ज ज बिगड़ी ॥ ११ ॥
भाव से करो गुरू ।
चित्त धारो ग उमंग ॥ १२ ॥
गुरु सेवा करना ।
ीत और ि हिये धरना ॥ १३ ॥
हो तुम्हरा पूर ।
बचन यह ो हित कर ॥१४॥
जगा । राधा मी मेरा ।
मेहर से दीना चरन सुहाग ॥ १५ ॥
आरती राधास्वामी की करहूँ ।
प्रेम नि हिरदे भरहूँ ॥ १६ ॥
गाऊँ गुन राधास्वामी अचरज ।
जपूँ नि राधास्वामी अचरज ॥१७॥

॥ शब्द २९ ॥

आरती सतगुरु ।
प्रीत घट माँहिं बसाऊँ ॥ १ ॥

भाग परमारथ नहिं पाया ।
कनक कामिन सँग भरमाया ॥ १२ ॥
भाग मेरा जागा अजब निदान ।
दिया मोहिं राधास्वामी भक्ती दान १३
करूँ मैं आरत उन की नित्त ।
चरन मैं छिन २ बढ़ता हित्त ॥ १४ ॥
प्रीत से सतसँग नित करहूँ ।
नाम राधास्वामी छिन २ भजहूँ ॥ १५ ॥

॥ शब्द ३० ॥

सरन राधास्वामी हिये धारी ।
शब्द धुन लागी घट प्यारी ॥ १ ॥
उमँग मन घट मैं नित चढ़ता ।
प्रेम गुरु चरनन नित बढ़ता ॥ २ ॥
निरख अस लीला हरखत मन ।
परख गुरु किरपा फूलत तन ॥ ३ ॥
भई मम हिरदे अस परतीत ।
जाउँ घर काल करम दल जीत ॥ ४ ॥
मेहर गुरु कस कस गाऊँ मैं ।
चरन पर बल बल जाऊँ मैं ॥ ५ ॥

संग गुरु क्या महिमाँ कहना ।
प्रेम रस नित घट में पीना ॥ ६ ॥
संग कोइ बड़ भागी पावे ।
चरन में छिन छिन मन लावे ॥ ७ ॥
प्रेम से गुरु सेवा धावे ।
सुरत नभ चढ़ धुन रस पावे ॥ ८ ॥
कटें सब काल करम के जाल ।
मिटें सब धरम भरम के ख़्याल ॥ ९ ॥
सुफल होय दुरलभ नर देही ।
चित्त से परम पुरुष सेई ॥ १० ॥
होयँ जब परशन गुरु स्वामी ।
करें अस दया अंतर जामी ॥ ११ ॥
करूँ मैं बिनती राधास्वामी से ।
लगाओ मुझ को चरनन से ॥ १२ ॥
संग मोहिं दीजे पास बुलाय ।
मगन रहूँ नित तुम महिमाँ गाय ॥१३॥
पिरेमी जन सँग देख बिलास ।
हिये में दिन दिन बढ़त हुलास ॥ १४ ॥
प्रेम सँग आरत नित करहूँ ।
चरन राधास्वामी हिये धरहूँ ॥ १५ ॥

करो पूरो अभिलाखा मेरी ।
हुई मैं निज चरनन चेरी ॥ १६ ॥
दया अस राधास्वामी अब कीजे ।
नित्त सँग चरनन में दीजे ॥ १७ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

गुरू के सन्मुख आन खड़ी ।
सुरत करे आरत प्रेम भरी ॥ १ ॥
सजा कर थाली दृढ़ परतीत ।
जगाती जोत बिरह अरु प्रीत ॥ २ ॥
वारती तन मन गुरु चरना ।
प्रेम और भक्ति हिये धरना ॥ ३ ॥
नाम गुरु लेती कर बिस्वास ।
चरन उर धरती निस और बास ॥ ४ ॥
करत गुरु दरशन उमँगत मन ।
करत गुरु सेवा फूलत तन ॥ ५ ॥
प्रेम की धारा घट उमँगाय ।
बचन सतसँग में सुनती धाय ॥ ६ ॥
करत नित सुमिरन राधास्वामी नाम ।
नहीं कुछ और नाम से काम ॥ ७ ॥

मी बिन और पूजूँ ोय।
गए देवी देव बिगोय ॥ ८ ॥
हीँ तीरथ में देखा।
नहीँ मंदिर पे । ॥ ९ ॥
रहा ठावें नीर ।
पूजते मूरख जीव ॥ १० ॥
गुरु ी हिमाँ नहिँ ।
रत और शब्द नहीँ मानें ॥ ११ ॥
लगे नहिँ इनका थल बेड़ा।
पड़े ब चौरासी घेरा ॥ १२ ॥
हुई मोपे धुर की दया अपार।
मिले मोहिँ राधास्वा ी गुरु दातार।१३।
भाग मेरा सोता दिया जगाय।
मेहर र चरनन लिया लगाय ॥ १४ ॥
शब्द मारग सम ।
घाट घट । बदलाया ॥ १५ ॥
सुरत मेरी लीनी प जगाय।
दान गुरु भक्ती दीना आय ॥ १६ ॥
गाऊँ राधास्वामी दम दम।
न गु जपत रहूँ हरदम ॥ १७ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

हुआ मन मगन देख सतसंग ।
उठत नित हिये में नई उमंग ॥ १ ॥
सरन राधास्वामी दृढ़ करता ।
चरन में हित से चित धरता ॥ २ ॥
सुनो जब महिमाँ राधास्वामी ।
हुआ मन जग से निहकामी ॥ ३ ॥
नाम राधास्वामी हिये धारा ।
करम और भरम सभी टारा ॥ ४ ॥
जगत का परमारथ थोथा ।
काल ने दिया सब को नौता ॥ ५ ॥
मिलें जिस सतगुरु परम उदार ।
वही जिव जावें निज घर बार ॥ ६ ॥
संत बिन बचे नहीं कोई ।
करे चाहे जतन अनेक सोई ॥ ७ ॥
मेरे घट लागा गुरु का रंग ।
सिखाया गुरु ने भक्ती ढंग ॥ ८ ॥
भोग जग अब मोहिं नहिं भावें ।
मान मद अब नहिं भरमावें ॥ ९ ॥

किया मैं तन मन गुरु अरपन ।
तोड़िया सिर माया सरपन ॥ १० ॥
दिया मोहिँ गुरु ने बल अपना ।
दूत घर पड़ा कठिन तपना ॥ ११ ॥
काल नहिँ रोके मेरी चाल ।
हुए मन इंद्री निपट बेहाल ॥ १२ ॥
मेहर से राधास्वामी बख़्शिश कीन ।
नहीँ मैं कोइ बढ़ सेवा कीन ॥ १३ ॥
करूँ मैं आरत सहित उमंग ।
रहूँ नित घट में सतगुरु संग ॥ १४ ॥
प्रेम की थाली कर धारूँ ।
बिरह की जोत हिये बारूँ ॥ १५ ॥
सुरत मन चरनन पर वारूँ ।
काल के बिघन सभी टारूँ ॥ १६ ॥
सहसदल जोत रूप निरखूँ ।
गगन गुरु सूरत लख हरखूँ ॥ १७ ॥
सुन्न धुन सुन कर चढ़ी आगे ।
गुफा पर जहाँ सोहँग जागे ॥ १८ ॥
पुरुष का दरश किया सतलोक ।
अलख और अगम का पाया जोग ॥ १९ ॥

चरन राधास्वामी निरख निहार ।
सुरत हुई मस्तानी सरशार ॥ २० ॥
दया राधास्वामी पाई सार ।
मिला अब प्रेम भक्ति भंडार ॥ २१ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

हुई मन राधास्वामी की परतीत ।
गहो मन सुरत शब्द की रीत ॥ १ ॥
बचन सुन मन में आई शांत ।
शब्द की निरखी घट में क्रांत ॥ २ ॥
धरे थे मन में भरम अनेक ।
बसे बहु धरम करम कुल टेक ॥ ३ ॥
बुद्धि से करता मत की तोल ।
मिला नहिं खाये बहु झकझोल ॥ ४ ॥
भाग से मिला गुरू का संग ।
मेहर हुई लागा घट गुरु रंग ॥ ५ ॥
हुए सब संशय मन के दूर ।
परखिया घट में राधास्वामी नूर ॥ ६ ॥
जगत का परमारथ त्यागा ।
मगन मन सुरत शब्द लागा ॥ ७ ॥

प्रेम सँग नित करता अभ्यास ।
हुआ राधास्वामी चरनन बिस्वास ॥ ८ ॥
प्रीत घट अंतर लाग रही ।
शब्द सँग सूरत जाग रही ॥ ९ ॥
शब्द गुरु प्रेम बढ़त दिन रात ।
कटत नित माया के उतपात ॥ १० ॥
कठिन मन डालत भारी झोल ।
दिखावत माया नए नए चोल ॥ ११ ॥
गुरु बल काटूँ मन का जाल ।
तोड़ देउँ माया का जंजाल ॥ १२ ॥
गुरू मेरे राधास्वामी पुरुष अपार ।
दया निधि समरथ कुल दातार ॥ १३ ॥
मेहर से लिया मोहिं अपनाय ।
दिया मेरा अचरज भाग जगाय ॥ १४ ॥
सरन दे पूरा कीना काम ।
भजूँ मैं छिन २ राधास्वामी नाम ॥ १५ ॥
सुरत मन चढ़ते धुन के संग ।
सहसदल बजते घंटा संख ॥ १६ ॥
गगन धुन मिरदँग गरज सुनाय ।
ररँग धुन सारंगी सँग गाय ॥ १७ ॥

गुफा में मुरली उठ बोली ।
सत्तपर धुन बीना तोली ॥ १८ ॥
अलख लख गई अगम के पार ।
अनामी पुरुष किया दीदार ॥ १९ ॥
करी वहाँ आरत प्रेम सम्हार ।
रही मैं अचरज रूप निहार ॥ २० ॥
दया मोपै राधास्वामी कीनी पूर ।
मिला मोहिँ आनँद बाजे तूर ॥ २१ ॥
दिया मोहिँ राधास्वामी शब्द अधार
हुई मैं तन मन से बलिहार ॥ २२ ॥
मेहर से तारा कुल परिवार ।
गुरू मेरे प्यारे परम उदार ॥ २३ ॥
शब्द की महिमाँ अगम अपार ।
शब्द बिन होय न जीव उधार ॥ २४ ॥
परम गुरु राधास्वामी पुरुष अनाम ।
दिया मोहिँ निज चरनन बिसराम ॥२५॥

॥ शब्द ३४ ॥

चरन गुरु जागी नई परतीत ।
उमँगती घट में नई नई प्रीत ॥ १ ॥

वार मन गुरु चरनन मिला ।
वार तन गुरु सेवा हित ला ॥ २ ॥
उमँग सुत चरनन लीलीन ।
ज धुन ट चीन्ह ॥ ३ ॥
प्रेम की धारा उमँगी ।
शब्द र पी संगी ॥ ४ ॥
देख घट लीला बिगसत म ।
देस ब ोड़त द्री ॥ ५ ॥
चरन गुरु निज हियरे धारे ।
मिला पद यह जियरे वारे ॥ ६ ॥
समझ आए ब सतगु बैं ।
निरखिया घट में रूप अनैन ॥ ७ ॥
मेहर गुरु हुँ महिमाँ गा ।
लिया मोहिँ ापहि संग लगा ॥ ८ ॥
शब्द का देकर पूरा भेद ।
मिटाया ल करम खेद ॥ ९ ॥
मन ि री ।
रत दृढ़ चरन रन गहिरी ॥ १० ॥
ओट गुरु चरन गहत मज़बूत ।
सुरत लागत सूत ॥ ११ ॥

दया पर तन मन धन वारूँ ।
नाम गुरु छिन छिन हिये धारूँ ॥ १२ ॥
गुरू मेरे समरथ कुल दातार ।
परम प्रिय राधास्वामी अपर अपार ।१३।
रूप गुरु धर कर जग आये ।
हंस जीव सबही मुक्ताये ॥ १४ ॥
काग जीवन पर बोझा डाल ।
काटिया काल कठिन जाल ॥ १५ ॥
भाग बड़ मेरा अस जागा ।
चरन में राधास्वामी के लागा ॥ १६ ॥
प्रेम सँग आरत गुरु गाऊँ ।
चरन राधास्वामी नित ध्याऊँ ॥ १७ ॥

—

॥ शब्द ३५ ॥

दुखी रहें जग जिव तापन में ।
दास सुख पाया चरनन में ॥ १ ॥
सुनी गुरु महिमाँ जागा प्रेम ।
दरश गुरु धारा मन में नेम ॥ २ ॥
कार संसारी दीने छोड़ ।
कुटँब का मोह दिया सब तोड़ ॥ ३ ॥

मिला जाय सतसंग में गुरु के ।
बचन रहूँ ा धुर घर के ॥ ४ ॥
से कीना बैराग ।
बासना ा की दई त्याग ॥ ५ ॥
रूँ नित गुरु सेवा ि लाय ।
दया तगुरु की दि न रि न पाय ॥६॥
सुरत और शब्द ु हिये धार ।
वारता मन गुरु दरबार ॥ ७ ॥
हूँ क्या महिमाँ साधू ंग ।
टूटने लागे मन के ंग ॥ ८ ॥
काम और ोध रहे मुरझाय ।
लोभ ौर मोह रहे रमाय ॥ ९ ॥
मान मद हो गए च चूर ।
रम ौर भरम हुए ब दूर ॥ १० ॥
ब रु न सुन ि ।
रन नित नई ीत जगाय ॥ ११ ॥
ारती गुरु सन्मु रती ।
नाम राधास्वामी हिये धरती ॥ १२ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

सील घर रहती समान ।
चरन गुरु धरती हिरदे ध्यान ॥ १ ॥
दे गु दरशन हरखाती ।
ीन मगनाती ॥ २ ॥
ंतर बहुत उमंग ।
गुरू न्सु हित उमंग ॥ ३ ॥
दे सतसँग नित्त बि ास ।
हिये निस दिन हुलास ॥ ४ ॥
ग गुरू ारत गाऊँ ।
चरन पर छिन छिन जाऊँ ॥ ५ ॥
शब्द धुन रही घोर ।
भागने लागे के चोर ॥ ६ ॥
धुन टा रही ।
त शिर ा धुनत रही ॥ ७ ॥
गगन चढ़ गु ाई ।
आरती प्रे सहित गाई ॥ ८ ॥
गर और मिरदँग डाला शोर ।
ग त घट ंतर भोर ॥ ९ ॥

सुन्न में धुन सारँग जागी ।
गुफ़ा चढ़ मुरली सँग पागी ॥ १० ॥
परे चढ़ दरशन सतपुर्ष पाय ।
आरती दूसर लीन जगाय ॥ ११ ॥
मधुर धुन बीन जहाँ बजती ।
प्रेम सँग सूरत वहाँ सजती ॥ १२ ॥
अलख पुर जाय किया दीदार ।
मगन हुई सूरत रूप निहार ॥ १३ ॥
अगम चढ़ राधास्वामी धाम गई ।
आरती तीसर साज लई ॥ १४ ॥
हुए परसन गुरु दीन दयाल ।
सरन दे मुझ को किया निहाल ॥ १५ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

बिरह मेरे सतसँग की जागी ।
प्रीत मेरी गुरु चरनन लागी ॥ १ ॥
बचन सुन तड़प उठत हिये मोर ।
चरन गुरु लागूँ सूरत जोड़ ॥ २ ॥
बिछाया मन नें जग में जार ।
करावत जित उठ छित संसार ॥ ३ ॥

स्वामी से माँगूँ भक्ती दान ।
बढ़ै मेरे हिये में प्रेम निदान ॥ ४ ॥
जगत की किरत न रोकै मोहि ।
रखो मेरी सूरत चरन समोय ॥ ५ ॥
बहुत दिन बीते करत पुकार ।
सुनो मेरी बिनती गुरु दातार ॥ ६ ॥
मेहर से घट का पट खोलो ।
सरन में मन सूरत ले लो ॥ ७ ॥
जीव को दया बसे मन माँहि ।
देश्रो मुझ को भी चरनन छाँहिँ ॥ ८ ॥
मगन होय आरत गुरु धारूँ ।
प्रेम सँग सुत चरनन वारूँ ॥ ९ ॥
सुनूँ नित घट में शब्द रसाल ।
हरख कर निरखूँ जोत जमाल ॥ १० ॥
गगन चढ़ सुनूँ गरज मिरदंग ।
गुरू के चरनन लागा रंग ॥ ११ ॥
सुन्न चढ़ तिरबेनी न्हाऊँ ।
गुफा में मुरली बजवाऊँ ॥ १२ ॥
मिलूँ सतगुरु से सतपुर में ।
मधुर धुन बीन धरूँ उर में ॥ १३ ॥

अलख और अगम का दरशन पाय ।
आरती राधास्वामी करूँ सजाय ॥ १४ ॥
मेहर राधास्वामी कीन बनाय ।
लिया मोहिँ अपने चरन लगाय ॥ १५ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

सरन गुरु पाई जागे भाग ।
सुरत मन चरनन मेँ रहे लाग ॥ १ ॥
दरश गुरु पावत हरखा मन ।
सेव गुरु चाहत धाया तन ॥ २ ॥
साध सँग करत बढ़ा बिस्वास ।
चरन गुरु रलत भया परकाश ॥ ३ ॥
बचन गुरु सुनत अमीँ बरखाय ।
नाम गुरु सुमिरत प्रेम बढ़ाय ॥ ४ ॥
शब्द की महिमाँ निस दिन गाय ।
सुरत मन धुन रस छिन छिन पाय ॥५॥
भेद सतसँग का गुरु जब दीन ।
सुरत मेरी जागी हुआ मन लीन ॥ ६ ॥
शब्द धुन घट मेँ नित सुनती ।
संख और घंटा नित गुनती ॥ ७ ॥

बंक का द्वारा लीन खुलाय ।
त्रिकुटी चढ़ कर पहुँची धाय ॥ ८ ॥
मानसर किए जाय अश्नान ।
लगा फिर धुन मुरली से ध्यान ॥ ९ ॥
पुरुष का दरशन पाय हरखात ।
धुनन सँग अमृत रस बरखात ॥ १० ॥
गई फिर अलख अगम के पार ।
मिले मोहिं राधास्वामी पुरुष अपार ११
चरन में गुरु के रही लिपटाय ।
मेहर राधास्वामी छिन छिन पाय ॥१२॥
बेद मत नहिं जाने यह भेद ।
सकल जिव सहते करमन खेद ॥ १३ ॥
संत बिन कौन करे उपकार ।
शब्द बिन कौन करे निरवार ॥ १४ ॥
सरन राधास्वामी जो धारे ।
जाय घर भौ सागर पारे ॥ १५ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

चरन गुरु दीन हुआ मन मोर ।
शब्द धुन सुनता सूरत जोड़ ॥ १ ॥

भरम तज हिये परतीत भई।
प्रेम सँग सूरत शब्द गही ॥ २ ॥
छोड़ दिया मन से क्रोध और काम।
सुमिरता हिये में राधास्वामी नाम ॥३॥
सरन गुरु हित चित से धारी।
चरन में प्रीत लगी सारी ॥ ४ ॥
दरश गुरु जागत मन अनुराग।
बचन सुन जगत बासना त्याग ॥ ५ ॥
साध सँग होवत कारज पूर।
भक्ति गुरु धावत मन हुआ सूर ॥ ६ ॥
ध्यान गुरु धारत भागे चोर।
सुनत नित घट में अनहद शोर ॥ ७ ॥
शब्द की क्या कहुँ महिमाँ सार।
सहज में होवत जीव उधार ॥ ८ ॥
करम और धरम सभी त्यागे।
शब्द सँग मन सूरत जागे ॥ ९ ॥
नहीं कोइ जाने घट का भेद।
भरम कर सहते करम का खेद ॥ १० ॥
काल का जाल बिछा भारी।
जीव सब घेर लिये सारी ॥ ११ ॥

पड़े सब भरमें करमन में ।
दुक्ख सुख भोगें जनमन में ॥ १२ ॥
सरन सतगुरू की जो आवे ।
उलट कर वही निज घर जावे ॥ १३ ॥
होय माया से वह न्यारा ।
चरन गह संत जाय पारा ॥ १४ ॥
सराहूँ कस कस अपना भाग ।
चरन में राधास्वामी के मन लाग ॥ १५ ॥
प्रेम सँग आरत उन गाऊँ ।
दया पर छिन छिन बल जाऊँ ॥ १६ ॥
सरन राधास्वामी हिरदे धार ।
रहूँ मैं छिन छिन चरन सम्हार ॥ १७ ॥

॥ शब्द ४० ॥

चरन गुरू निज हियरे धारे ।
लगे मोहिं प्रानन से प्यारे ॥ १ ॥
देख सत सँग मन लागी प्रीत ।
सुनत गुरू बचन बढ़ी परतीत ॥ २ ॥
संग गुरू महिमाँ चित्त बसाय ।
सेव गुरू करता चित्त लगाय ॥ ३ ॥

मगन मन निरखत नित्त बिलास ।
सुखी होय रहता चरनन पास ॥ ४ ॥
प्रेम घट बढ़ता दिन और रात ।
शब्द गुरु महिमाँ कही न जात ॥ ५ ॥
बिना गुरु शब्द नहीं छुटकार ।
भरमते सब जिव माया लार ॥ ६ ॥
लगे नहिं उनका ठौर ठिकान ।
दुक्ख सुख भोगें चारों खान ॥ ७ ॥
भाग मेरे पूरबले जागे ।
सुरत मन गुरु चरनन लागे ॥ ८ ॥
शब्द का भेद मिला मोहिं सार ।
सुनूँ नित घट में धुन झनकार ॥ ९ ॥
सहसदल घंटा संख सुनाय ।
तिरकुटी गुरु पद परसा जाय ॥ १० ॥
सुन्न में धुन सारँग जागी ।
गुफ़ा चढ़ धुन मुरली साजी ॥ ११ ॥
सत्तपद बीन सुनी निज सार ।
पुरुष का दरशन करूँ सम्हार ॥ १२ ॥
वहाँ से गई लख दरबार ।
गम गढ़ खोला सुरत सुधार ॥ १३ ॥

परे तिस निरखा सतगुरु धाम ।
पाइया अद्भुत राधास्वामी नाम ॥ १४ ॥
सरन गुरु पाई चरन समाय ।
नाम प्यारे राधास्वामी छिन २ गाय ॥ १५ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

चरन गुरु घट में धार रही ।
सरन गुरु निज उर सार लई ॥ १ ॥
प्रीत जग झूँठी देखी आय ।
सरन में राधास्वामी के गई धाय ॥ २ ॥
जगत जिव मतलब के हैं यार ।
भोग सँग बहते माया धार ॥ ३ ॥
संग इन चित से नहिं चाहूँ ।
चरन गुरु सीतलता पाऊँ ॥ ४ ॥
करी मोपै राधास्वामी मेहर बनाय ।
चरन में अपने लिया लगाय ॥ ५ ॥
सुनाए बचन सार के सार ।
शब्द का दीना भेद अपार ॥ ६ ॥
नाम राधास्वामी सुमिरूँ नित्त ।
शब्द धुन सुनती कर कर हित्त ॥ ७ ॥

कहूँ क्या महिमाँ सत ँग ी।
बाढ़ नित बढ़ती गुरु रँग ी ॥८॥
हिये में निस दिन ब ी प्रीत।
शब्द ी होती नई परतीत ॥९॥
भाग से कोइ कोइ प्रेमी पाय।
लिए मन सूरत दोउ जगाय ॥ १० ॥
जगत से चित में धर बैराग।
चरन गुरु बढ़ता नित नुराग ॥११॥
बासना भोगन की दई त्याग।
मधुर धुन शब्द रहा लाग ॥ १२ ॥
हुए राधास्वामी आज सहाय।
भाग मेरे भी लीन जगाय ॥ १३ ॥
प्रेम सँग गुरु के सन्मुख आय।
करूँ नित आरत उनकी गाय ॥ १४ ॥
मेहर राधास्वामी छिन छिन पाय।
चरन में राधास्वामी रहूँ लिपटाय ॥१५॥

॥ शब्द ४२ ॥

जगत सँग मनुआ रहत उदास।
चहत गुरु चरनन नित्त बिलास ॥ १ ॥

रीत मोहिं जग की नहिं भावे ।
साधु सँग छिन छिन मन धावे ॥ २ ॥
तजत मन अब कृत संसारी ।
भजत गुरु नाम सुरत प्यारी ॥ ३ ॥
काम और ोध रहे ुरझाय ।
चरन गुरु आसा मन ा लाय ॥ ४ ॥
लोभ और मोह गए घर ोड़ ।
नाम में राधार ामी के चित जोड़ ॥ ५ ॥
अहँगता दीन्ही ब जारी ।
दीनता चरनन में बाढ़ी ॥ ६ ॥
बिरह अनुराग रहे घट ाय ।
सुरत मन धुन सँग रहे लिपटाय ॥ ७ ॥
कि या राधास्वा ी यह सिंगार ।
गाऊँ कस महिमाँ उ की ार ॥ ८ ॥
चरन गुरु लागी बिरह सम्हार ।
रही मैं चरज रूप निहार ॥ ९ ॥
प्रेम की धारा बढ़ी नियार ।
करी राधास्वामी द ा अपार ॥ १० ॥
गाऊँ नित आरत राधास्वामी ाज ।
दिया मोहिं राधास्वामी अचरज दाज ॥ ११ ॥

गगन में बाजे अनहद तूर ।
लखा घट अंतर अ त नूर ॥ १२ ॥
गुरू पद परस गई सुन में ।
रली जाय फिर मुरली धुन में ॥ १३ ॥
सुनी धुन बीना सतपुर में ।
लख लख गई गम पुरे में ॥ १४ ॥
परे तिस धाम नूप दिखाय ।
चरन राधास्वामी परसे जाय ॥ १५ ॥

॥ शब्द ४३ ॥

प्रीत गुरू हिये तर बढ़ती ।
रत मन गुरू चरनन धरती ॥ १ ॥
प्रेम रँग लाल हुआ मन मोर ।
दिए ब घट के बंधन तोड़ ॥ २ ॥
दर गुरू हो मनुआँ मस्त ।
नि ट कर दे त दूर ी त ॥ ३ ॥
भेद पाय सुध बुध ब भूली ।
हिये ँ लन क्यारी फूली ॥ ४ ॥
धुन सँग रहा लि ।
देह रहा गगन ॥ ५ ॥

खिला अब घट में इक गुलज़ार ।
सहसदल जोत सरूप निहार ॥ ६ ॥
गुरू पद निरखा अजब बहार ।
सुन्न में सुनती सारँग सार ॥ ७ ॥
भँवर चढ़ धरा सोहंगम ध्यान ।
सत्तपुर सुनी बीन धुन तान ॥ ८ ॥
अलख लख अगम लोक के पार ।
अनामी पुरुष किया दीदार ॥ ९ ॥
सरन राधास्वामी पाई सार ।
हुई मैं उन चरनन बलिहार ॥ १० ॥
संत मत क्या कहूँ महिमाँ गाय ।
सर्व मत उसके नीचे आय ॥ ११ ॥
काल सँग रहे सभी लिपटाय ।
गए सब माया संग भुलाय ॥ १२ ॥
सरन गुरू कोइ बड़ भागी पाय ।
शब्द की डोरी गह चढ़ जाय ॥ १३ ॥
चरन में राधास्वामी के लौ लाय ।
मेहर से निज घर अपना पाय ॥ १४ ॥
हरख और आनंद उर न समाय ।
जगत और देह दई बिसराय ॥ १५ ॥

॥ शब्द ४४ ॥

टेक गुरु बाँधो मी ारी ।
तजो ब करम भरम सारो ॥ १ ॥
जगत जिव पूजें देवी देव ।
करें नहिं ोई सतगुरु सेव ॥ २ ॥
रहे सब जिव नीर पखान ।
भरम कर फिरते चारों खान ॥ ३ ॥
भेद ँग का नहिं पावैं ।
रम बस चौरासी वैं ॥ ४ ॥
भाग मेरा धुर हाल ।
मिले मोहिं सतगुरु परम दयाल ॥ ५ ॥
मेहर से दीन्हा भेद अपार ।
बताया शब्द सार सार ॥ ६ ॥
सुरत मेरी धुन रस लागी ।
कुमत गई सुमत जागी ॥ ७ ॥
सुना राधास्वामी दयार ।
गया तम होगया घट उजियार ॥ ८ ॥
चरन गुरु परसे मल हुआ ना ।
देखती घट में अजब बिला ॥ ९ ॥

चरन गुरु ो सके महिमाँ गाय ।
मेहर से कोइ बड़ भागी पाय ॥ १० ॥
चरन गह आई सतगुरु ओट ।
उतर गई रम भरम की पोट ॥ ११ ॥
प्रीत राधास्वामी हिये बा़ी ।
शब्द की लागी घट ड़ी ॥ १२ ॥
थाल हिये र र धार ।
शब्द धुन जोत जगाई ार ॥ १३ ॥
गुरु के सन्मु ले ा़ी ।
मेहर सोंपे ी ी गुरु भारी ॥ १४ ॥
सरन दे पूरा ीना का ।
भजूँ मैं ि २ राधास्वामी नाम ॥ १५ ॥

॥ शब्द ४५ ॥

हरख मन सरन गही सतगुरु ।
ीत सँग धरे बचन निज उर ॥ १ ॥
साध ँग शोभा बरनी न जाय ।
रली गुरु चरनन भाग जगाय ॥ २ ॥
भई निज हिरदे गुरु परतीत ।
तजी मन भय लज्या जग री ॥ ३ ॥

सुनत रही महिमा सतसँग सार ।
निरख रही घट में नाम उजार ॥ ४ ॥
दरश गुरु परत्यक्ष चाह रही ।
मेहर हुई पास बुलाय लई ॥ ५ ॥
उमँग कर आरत गुरु धारी ।
करी गुरु मेहर दृष्टि भारी ॥ ६ ॥
प्रेम मेरे हिरदे दीन बढ़ाय ।
शब्द धुन हिये में दीन जगाय ॥ ७ ॥
करम और भरम दिये सब त्याग ।
चरन गुरु नित बढ़ता अनुराग ॥ ८ ॥
सहसदल सुनती संख पुकार ।
गगन चढ़ पहुँची गुरु दरबार ॥ ९ ॥
सुन्न धुन सारँग गाज रही ।
भँवर में मुरली बाज रही ॥ १० ॥
सुनी धुन बीन अमर पुर जाय ।
पुरुष का दरशन अद्भुत पाय ॥ ११ ॥
अलख में पहुँची लगन बढ़ाय ।
अगम पुर दरशन लीना धाय ॥ १२ ॥
लखा तिस ऊपर राधास्वामी धाम ।
सुरत ने पाया वहाँ बिस्राम ॥ १३ ॥

कहूँ कस शोभा निज पुर गाय।
सुरत मेरी छिन छिन रहो शरमाय ॥१४॥
मिले मोहिं राधास्वामी पुरुष अनाम।
किया मेरा राधास्वामी पूरन काम ॥१५॥

॥ शब्द ४६ ॥

हिये में गुरु परतीत बसी।
प्रीत सँग सूरत शब्द रसी ॥ १ ॥
दरश गुरु कीन्हा सुरत सम्हार।
सुनत गुरु बचन बढ़ा मन प्यार ॥ २ ॥
बचन सतसँग के चित धारूँ।
सरन पर जान प्रान वारूँ ॥ ३ ॥
कहूँ क्या महिमाँ सतगुरु गाय।
दिया मेरा अद्भुत भाग जगाय ॥ ४ ॥
प्रीत मेरे हिये में दृढ़ कर दीन।
हुआ मन चरनन में लौ लीन ॥ ५ ॥
नित्त मैं गाऊँ महिमाँ सार।
नाम गुरु सुमिरूँ धर कर प्यार ॥ ६ ॥
एक चित होय भजन करती।
सुरत धुन संग अधर चढ़ती ॥ ७ ॥

प्रेम नित हिये अंदर भरती ।
जोत लख आरत गुरु करती ॥ ८ ॥
गगन चढ़ गुरु मूरत लखती ।
काल की कला यहाँ थकती ॥ ९ ॥
सुन्न में तिरबेनी न्हाती ।
रागनी सारँग सँग गाती ॥ १० ॥
भँवर में गई सोहँग धुन हेर ।
गुरु बल महाकाल हुआ ज़ेर ॥ ११ ॥
अमर पुर दरशन सतपुरुष पाय ।
नूर सत निरखा बीन बजाय ॥ १२ ॥
अधर चढ़ देखा अलख पसार ।
अगम में पहुँची सुरत सम्हार ॥ १३ ॥
परे तिस निरखा राधास्वामी देस ।
सुरत ने धारा अचरज भेस ॥ १४ ॥
आरती पूरन कीन्ही आय ।
परम गुरु राधास्वामी लीन रिझाय ॥१५॥

॥ शब्द ४७ ॥

चरन गुरु प्रीत बढ़ाय रही ।
नाम गुरु छिन छिन गाय रही ॥ १ ॥

दरश गुरु तड़प रहा मन मोर ।
बिरह ने डाला घट में शोर ॥ २ ॥
चरन गुरु नित बिनती धारी ।
करो मोहिं भौजल से पारी ॥ ३ ॥
जगत की किरत रहा अटकाय ।
दरश बिन मन में रहा मुरझाय ॥ ४ ॥
करो मोपै अस किरपा भारी ।
आरती गाऊँ सन्मुख आरी ॥ ५ ॥
सुरत मन लीजे ाज मल्हार ।
शब्द सँग घट रैं बिहार ॥ ६ ॥
ाल के दूत तावें आय ।
लेव मोहिं इन से बेग ब ा ॥ ७ ॥
रहे मन ना संग ी ली ।
हो नहिं ाया ा धी ॥ ८ ॥
चरन गुरु द दि रा ।
प्रेम रस हिये छिन छि पा ॥ ९ ॥
धरूँ हिये तर गुरु परतीत ।
गहूँ म ञ्चि से ी री ॥ १० ॥
सरन दे ीजे पूरा ामे ।
होय घट परघट राधास्वामी ॥ ११ ॥

रहूँ नित राधास्वामी के गुन गाय ।
भजन में नित नया आनँद पाय ॥१२॥

॥ शब्द ४९ ॥

हुआ घट दरघट आज बिबेक ।
गुरू की धारी दृढ़ कर टेक ॥ १ ॥
भेख में बहु दिन भट खाय ।
मिला नहिं सार रहा प ताय ॥२॥
करम मेरा धुर का जागा ाय ।
चरन में राधास्वामी आया धाय ॥३॥
बचन राधास्वामी ुने अथाह ।
सुरत मन वोहीं गए लुभाय ॥ ४ ॥
 मझ   ई रत बिचार ।
नहीं कोइ सतगरू सम सार ॥ ५ ॥
सरन राधास्वामी चित में धार ।
लिया मैं गुरु उपदे सम्हार ॥ ६ ॥
भजन नित करता सुरत सम्हार ।
निरखता घट में गुरु दीदार ॥ ७॥
सराहूँ नित नित भाग प ।
गुरू ने ट दिया तपना ॥ ८ ॥

करम और भरम उड़ाय दिए ।
सुरत मन तुरत जगाय दिए ॥९॥
भेष की रीत छुड़ाय दई ।
शब्द की प्रीत जगाय दई ॥१०॥
दई सब पाखँड कृत अब छोड़ ।
चरन गुरु ध्याता मन को जोड़ ॥११॥
जगत के भोग लगे खारी ।
चरन गुरु आसा मन धारी ॥१२॥
पदारथ माया के न सुहाँयँ ।
नाम रस पीता अब घट माहिँ ॥१३॥
मेहर से गुरु ने दीन्ही दात ।
जाय नहिँ महिमा उनकी गात ॥१४॥
आरती हित चित से ठानी ।
सरन राधास्वामी मन मानी ॥१५॥

॥ शब्द ४९ ॥

धरी मन राधास्वामी की परतीत ।
गही मन सुरत शब्द की रीत ॥१॥
नाम राधास्वामी नित गाऊँ ।
रूप राधास्वामी नित ध्याऊँ ॥२॥

चरन राधास्वामी हिये धरती ।
खोज धुन नित घट में करती ॥ ३ ॥
गुरू का निश्चय मन में धार ।
ऊपरी बरतूँ जग ब्योहार ॥ ४ ॥
टेक राधास्वामी चरन सम्हार ।
करम और भरम दिए सब टार ॥ ५ ॥
जगत जिव भरमों में अटके ।
भूल कर माया सँग भटके ॥ ६ ॥
सुनाऊँ गुरु महिमाँ उनको ।
जताऊँ प्रेम रीत सबको ॥ ७ ॥
न मानें भाग हीन यह बात ।
नहीं जग लज्या छोड़ी जात ॥ ८ ॥
दया मोपै राधास्वामी धुर से कीन ।
चरन में प्रेम प्रीत मोहिं दीन ॥ ९ ॥
दिया मोहिं ऐसा अगम बिचार ।
गुरू और शब्द से होय उबार ॥ १० ॥
धार यह समझ गहे चरना ।
संग जग जीवन नहिं करना ॥ ११ ॥
चाह सतसँग की नित उठती ।
बिरह दरशन की नित बढ़ती ॥ १२ ॥

गुरू से रती यही पुकार।
मिले ोहिँ दरशन बारम्बार ॥१३॥
बिघन हिँ रो मुझ को आय।
हिये नित नई प्रीत जगाय ॥१४॥
रती गुरु न्मुख धारूँ।
टँब को पने ब तारूँ ॥१५॥
मेहर राधास्वामी छिन२ पाय।
रहूँ ि राधास्वामी के गुन गाय ॥१६॥
ाग ीव देत्र बढ़ाय।
रन राधास्वामी धारँ आय ॥१७॥

॥ ब्द ५० ॥

हिये प्री ई जागी।
रन गुरु रत नई साजी ॥१॥
म ी थाली हाथ लई।
जुगत की जोत जगाय दई ॥२॥
टँ ँग आरत गुरु धारी।
हरख म ि रन वारी ॥३॥
न गुरु नित्त सम्हारूँ ाय।
हिये निस दिन प्रेम जगाय ॥४॥

संत मत महिमाँ नित गाता।
सुरत और शब्द जुगत राता ॥ ५ ॥
जगत में रहा तमोगुन छाय।
जीव सब माया जाल फँसाय ॥ ६ ॥
संत मत भेद नहीं पावें।
करम बस चौरासी धावें ॥ ७ ॥
मिले मोहिं राधास्वामी गुरु पूरे।
हु । मैं उन चरनन धूरे ॥ ८ ॥
दया कर लीन्हा मोहिं बचाय।
चरन में दीन्हो प्रीत जगाय ॥ ९ ॥
भरम और संसय दीन्हे खोय।
मेहर से चरन सरन दई मोहिं ॥ १० ॥
भाग मेरा जागा हुआ उजियार।
दूर किया घट का सब अँधियार ॥ ११ ॥
रहूँ नित राधास्वामी के गुन गाय।
जिऊँ नित राधस्वामी राधस्वामी गाय १२

॥ शब्द ५१ ॥

संत का परमारथ भारी।
सुरत और शब्द जुगत न्यारी ॥ १ ॥

दया राधास्वामी लीनी चीन्ह ।
हुई मैं हित चितसे आधीन ॥ २ ॥
बचन सुन प्रीत बढ़ाय रही ।
हिये में उमँग जगाय रही ॥ ३ ॥
उठत नित चाहत दरशन की ।
टेक तजी देवी देवन की ॥ ४ ॥
निरख माया का रँग मैला ।
छोड़ दई भोगन सँग केला ॥ ५ ॥
चित्त में बस गया राधास्वामी नाम ।
इष्ट में धारा राधास्वामी धाम ॥ ६ ॥
जगत त्रिय तापन में तपता ।
करम बस माया सँग खपता ॥ ७ ॥
लगे नहिं कुछ भी उनके हाथ ।
बिपत नित भोगें माया साथ ॥ ८ ॥
चरन में गुरु के जब आई ।
समझ में निरमल तब पाई ॥ ९ ॥
शब्द का भेद सुना सारा ।
चित्त से सुरत जोग धारा ॥ १० ॥
भजन और सुमिरन नित करती ।
ध्यान गुरु चरनन में धरती ॥ ११ ॥

सहज मन चरनन मैं लौ लीन।
बासना जग की सब तज दीन ॥ १२ ॥
उमँग कर गुरु आरत गाती।
शब्द सँग सुरत गगन जाती ॥ १३ ॥
सुनूँ नित घट मैं अनहद घोर।
काल और माया बल दिया तोड़ ॥ १४ ॥
मेहर अस राधास्वामी मो पै कीन।
दई निज सरन देख मोहिं दीन ॥ १५ ॥

॥ शब्द ५२ ॥

हुई घट परमारथ की लाग।
सरन गुरु आया जग से भाग ॥ १ ॥
भरमता जग मैं रहा बहु भाँत।
ज़रा भी नहिं आई मन शांत ॥ २ ॥
सुक्ख दुख सहता रहा दिनरात।
चैन नहिं पाया जग जिव साथ ॥ ३ ॥
भाग से पाया पता निशान।
मिला राधास्वामी संगत आन ॥ ४ ॥
बचन राधास्वामी सुन हरखाय।
संत मत गुप्त भेद परखाय ॥ ५ ॥

चरन राधास्वामी धारी । ।
हुआ मन जग से आज निरा ॥ ६
कहूँ क्या राधास्वामी गुरु महिमा ।
शब्द ी सिफ़ती क्या कहना ॥ ७॥
नहीं कोइ जतन और संसार ।
होय जासे परघट जीव उधार ॥ ८ ॥
शब्द धुन घट में होत सदा ।
सुनत ताहि होवत शाह गदा ॥ ९ ॥
रूह की धार कहो उसको ।
नूर की बाड कहो उसको ॥ १० ॥
सुरत से पकड़ चढ़े कोई ।
अरश पर चढ़ जावे सोई ॥ ११ ॥
गुरू की मेहर बिना यह भेद ।
न पावे हे रम के खेद ॥ १२ ॥
दया मोपै राधास्वामी करी पार ।
जगत से लीना मोहिं निकार ॥ १३ ॥
चरन में अपने लिया लगाय ।
शब्द की जुक्ती दई बताय ॥ १४ ॥
करूँ मैं निस दिन यह अभ्यास ।
चरन में राधास्वामी पाऊँ बास ॥ १५ ॥

निरत गुरु आरत करूँ सजाय ।
नाम राधास्वामी छिन २ गाय ॥ १६ ॥
चरन में प्रेम भाव बढ़ता ।
सरन राधास्वामी दृढ़ करता ॥ १७ ॥

॥ शब्द ५३ ॥

दरस गुरु मन में होत हुलास ।
चरन गुरु बढ़त नित्त बिस्वा ॥ १ ॥
बचन सुन हिये मरती ई ।
रूप गुरु चित में अति भाई ॥ २ ॥
देह से दूर दे रहती ।
रत से दरशन र लेती ॥ ३ ॥
ोट मुख क्या महिमाँ गाऊँ ।
चरन पर नित बल बल जाऊँ ॥ ४ ॥
मेहर की रीत कहूँ कस गाय ।
लिया मोहिँ आपहि चरन लगाय ॥ ५ ॥
सुरत मन धुन रस भींज रहे ।
चरन गुरु अमृत पीव रहे ॥ ६ ॥
सुरत अस घट में चढ़ती नित्त ।
शब्द में रहा मम चित्त ॥ ७ ॥

देह की सुध बुध बिसरत जाय ।
भोग माया के गए भुलाय ॥ ८ ॥
गुरू पै तन मन वार रही ।
सरन गुरू चित में धार रही ॥ ९ ॥
जगत से रहा न कोई काम ।
बसा अब मन में राधास्वामी नाम ॥१०॥
करम और भरम दिये सब छोड़ ।
जगत से दीना नाता तोड़ ॥ ११ ॥
प्रीत गुरू नित्त बढ़ाऊँ आय ।
प्रेम अँग आरत करूँ बनाय ॥ १२ ॥
थाल गुरु भक्ती लेकर हाथ ।
बिरह की जोत जगाऊँ साथ ॥ १३ ॥
नित्त अस गुरू आरत गाती ।
प्रेम रस होत सुरत माती ॥ १४ ॥
दया राधास्वामी पूरी कीन ।
मेहर से चरन सरन मोहिं दीन ॥ १५ ॥

॥ शब्द ५४ ॥

परम पुर्ष राधास्वामी गुरू भारी ।
चरन पर चार लोक वारी ॥ १ ॥

सुनत गुरु महिमाँ उँमगा प्यार ।
करूँ दरशन गुरु दरबार ॥ २ ॥
चरन में बिनती नित रता ।
भरि ौर भाव हिये ॥ ३ ॥
परम गुरु राधास्वामी मेहर करी ।
चरन में सूरत मोड़ धरी ॥ ४ ॥
मिला तब ति ुदर ौसर ।
चरन में खैंचा किरपा कर ॥ ५ ॥
दरश राधास्वामी कीना ।
सुरत मन हुए चर लीना ॥ ६ ॥
रूँ नित ारत चित्त सम्हार ।
चरन में धर धर ि से प्यार ॥ ७ ॥
भाव ी थाली कर धारी ।
भक्ति ी जोत जगी न्यारी ॥ ८ ॥
उमँग कर आरत राधा मी गाय ।
लिया मैं पना भाग जगाय ॥ ९ ॥
काल से नाता तोड़ा ।
हुआ गुरु चरनन मोर धार ॥ १० ॥
रन राधास्वामी धर कर चीत ।
जाऊँ घर ाल रम ी जोत ॥ ११ ॥

रहूँ मैं राधास्वामी के गुन गा ।
नाम राधास्वामी नित्त जगाय ॥ १२ ॥

॥ शब्द ५५ ॥

सहज मैं पाए गुरु दर्शन ।
निरख गुरु लीला हरखा मन ॥ १ ॥
देख गुरु संगत अचरज प्रीत ।
हिये मैं धारी भक्ती रीत ॥ २ ॥
जुगत गुरु लागी अति प्यारी ।
प्रेम सँग सुरत शब्द धारी ॥ ३ ॥
हुई मोहि अस हिरदे परतीत ।
नहीं कोइ गुरु सम जग मैं मीत ॥ ४ ॥
गुरू बिन जग जिव ग़ोता खाय ।
गए सब भौजल धार बहाय ॥ ५ ॥
नेम से गुरु बानी पढ़ते ।
चरन गुरु प्रीत नहीं धरते ॥ ६ ॥
मोह और मान संग लिपटाय ।
जन्म सब बिरथा देत बहाय ॥ ७ ॥
गुरू ने कीनी मुझ पै मेहर ।
हटाया काल करम का क़हर ॥ ८ ॥

लिया मोहिं सन्मुख आप बुलाय ।
सरन दे अचरज भाग जगाय ॥ ९ ॥
करूँ कस शुकराना गुरु का ।
भेद मोहिं दीना धुर घर का ॥ १० ॥
उमँग की थाली लई सजाय ।
प्रेम की जोती दई जगाय ॥ ११ ॥
गुरू के सन्मुख आरत फेर ।
लिया मैं तन मन अपना घेर ॥ १२ ॥
नाम राधास्वामी हिये बसाय ।
रहूँ मैं छिन छिन याद बढ़ाय ॥ १३ ॥

॥ शब्द ५६ ॥

संत मत भेद सुनत मन जाग ।
चरन में राधास्वामी के रहा लाग ॥ १ ॥
जगत में भूल पड़ी चहुँ ओर ।
रहे सब करम भरम चित जोड़ ॥ २ ॥
देव और देवी पूजें धाय ।
ख़बर निज घर की कोइ नहिं पाय ॥ ३ ॥
साध सँग महिमाँ नहिं जानें ।
टेक पिछलों की मन ठानें ॥ ४ ॥

भरमते तीरथ मँदिर में ।
खोज नहिँ करते सुन दर में ॥ ५ ॥
कहूँ क्या महिमाँ राधास्वामी गाय ।
लिया मोहिँ सन्मुख आप बुलाय ॥ ६ ॥
दया कर शब्द भेद दीना ।
सुरत मन हुए चरनन लीना ॥ ७ ॥
नाम की महिमाँ गाई सार ।
दिया मोहिँ घट का भेद अपार ॥ ८ ॥
सरन राधास्वामी हिये धारी ।
करम और भरम कटे भारी ॥ ९ ॥
रहूँ नित संतन महिमाँ गाय ।
चरन राधास्वामी हिये बसाय ॥ १० ॥
जपूँ नित राधास्वामी सतगुरु नाम ।
नहीँ कुछ और पूजन से काम ॥ ११ ॥
प्रेम सँग आरत गाता नित्त ।
चरन में राधास्वामी धरता चित्त ॥ १२ ॥
करें राधास्वामी मेरी सार ।
दया कर देवें पार उतार ॥ १३ ॥
प्रीत रहे चरनन में बढ़ती ।
सुरत रहे नित घट में चढ़ती ॥ १४ ॥

हुई हिरदे परतीत ।
ज मैं निज घर भोज जी ॥ १५ ॥
मेहर र ड़ा राधा ी हा ।
तजूँ नहिं मैं उनका ॥ १६ ॥
भाग मेरा जागा रसा ।
पड़ी राधास्वामी गुरु चरनन ॥ १७

॥ शब्द ५७ ॥

मेरा जागा भाग सही ।
ँग न राधास्वामी रन गही ॥१॥
चरन राधा मी पकड़े ाय ।
करम ुग ुग के लीन ॥ २ ॥
न राधास्वामी दर न ।
ि त राधा मी हिमाँ गाय॥३॥
जाल ब भारी ।
जीव घेर लिये सारी ॥ ४ ॥
भोग बहु म लीन उपाय ।
लिया ब जीवन हज फँ ा ॥ ५ ॥
मेहर हुइ ु पै राधा ी की ।
पाई मैं सुध ु निज घर ी ॥ ६ ॥

गुरू ने दीनी ।
शब्द २ सुरत लगाय ॥ ७ ॥
लो की र ।
होय तब झूँठा असार ॥ ८ ॥
काल के दे तोड़ो ।
चरन में राधास्वामी जोड़ो ॥ ९ ॥
उमँग मन जुगती लई सम्हार ।
चलूँ मैं गुरू पंथ निहार ॥ १० ॥
दया गुरु लूटैं भ और म ।
पाऊँ मैं दि सतगुरु धाम ॥ ११ ॥
नित्त गुरु चरन प्री ।
बसाऊँ हिये दृढ़ परती ॥ १२ ॥
करूँ गुरु । चित्त सम्हार ।
चढ़ाऊँ धुन की लार ॥ १३ ॥
सहसदल जोत उजियार ।
शब्द धु घंटा सम्हार ॥ १४ ॥
वहाँ से त्रिकुटी पहुँचूँ ।
ओअँग सँग धुन मिरदंग ॥ १५ ॥
सुन्न में मानसरोवर न्हाय ।
गुफा धुन मुरली जिया जाय ॥ १६ ॥

भर पुर दरशन सतपुरुष पाय ।
चरन में राधास्वामी रहूँ लिपटाय ॥ १७॥

॥ शब्द ५८ ॥

चरन गुरु निश्चय धारा री ।
सरन पर तन मन वारा री ॥ १ ॥
दया गुरु मोहिं सँवारा री ।
सीस उन चरनन डारा री ॥ २ ॥
लगा मोहिं सतसँग प्यारा री ।
बचन सुन भरम बिडारा री ॥ ३ ॥
प्रीत गुरु लीन सम्हारा री ।
शब्द गुरु मिला सहारा री ॥ ४ ॥
मेहर गुरु काल निकारा री ।
गया तम हुआ उजियारा री ॥ ५ ॥
लखा घट अंतर तारा री ।
शब्द नभ माहिं पुकारा री ॥ ६ ॥
जोत का रूप निहारा री ।
सुनी धुन घंटा सारा री ॥ ७ ॥
गई चढ़ त्रिकुटी पारा री ।
धुनन सँग कीन बिहारा री ॥ ८ ॥

सुन्न में बेनी न्हाई री ।
ररँग धुन सहज बजाई री ॥ ९ ॥
गुफ़ा धुन मुरली गाई री ।
बीन सुन सतपुर आई री ॥ १० ॥
आरती सतगुरु गाई री ।
चरन में राधास्वामी धाई री ॥ ११ ॥
मेहर गुरु काज बनाई री ।
हुए स्वामी आप सहाई री ॥ १२ ॥
लिया गुरु आज रिझाई री ।
दया अब पूरी पाई री ॥ १३ ॥
भेद सब दिया जनाई री ।
संत मत कहूँ बड़ाई री ॥ १४ ॥
दास राधास्वामी कहाई री ।
सदा गुन राधास्वामी गाई री ॥ १५ ॥

॥ शब्द ५९ ॥

सरन गुरु आया बाल समान ।
रूप गुरु देखत देह भुलान ॥ १ ॥
चित्त दे सुनता धुन घम घम ।
निरखता जोत रूप चम चम ॥ २ ॥

मगन होय खेलत गुरू के पास ।
चरन में हियरे बढ़त हुलास ॥ ३ ॥
बाज रही जहाँ नित धुन मिरदंग ।
गरज सँग गाजत धुन ओअँग ॥ ४ ॥
देख रहा सुन में चन्द्र उजास ।
धुनन सँग खेलत हंसन पास ॥ ५ ॥
महासुन घाटी चढ़ भागा ।
गुरू के चरन लार लागा ॥ ६ ॥
भँवर में जागी धुन सोहंग ।
बाँसरी सुनता चित्त उमंग ॥ ७ ॥
सत्तपुर बाजत धुन बीना ।
अमीं रस पुरुष दरश पीना ॥ ८ ॥
अलख और अगम रूप देखा ।
कहूँ कस मैं वहाँ का लेखा ॥ ९ ॥
चरन राधास्वामी लागा धाय ।
भाग जुग जुग के लीन जगाय ॥ १० ॥
मेहर राधास्वामी हुई भारी ।
चरन पर उन के बलिहारी ॥ ११ ॥

॥ शब्द ९० ॥

दास गुरु चेतन सँग चेता ।
चरन राधास्वामी रस लेता ॥ १ ॥
सेव सतसँग की करता नित्त ।
बचन गुरु सुन कर उँमगत चित्त ॥ २ ॥
सुरत और शब्द रीत धारी ।
करत मन नित करनी सारी ॥ ३ ॥
उमँग कर जाती घट के कूप ।
अमीं जल भरत गगरिया खूब ॥ ४ ॥
चरन गुरु अमृत रस पीती ।
करम की मटकी हुई रीती ॥ ५ ॥
जगत से बढ़ता नित बैराग ।
धावता अंतर सहित अनुराग ॥ ६ ॥
भरमते जग जिव माया संग ।
क़दर नहिं जाने संतन सँग ॥ ७ ॥
गुरू ने पलट दिया मेरा भाग ।
उठा अब सोता मनुआँ जाग ॥ ८ ॥
करूँ नित सतसँग धर कर धीर ।
छाँटता रहूँ मैं नीर और छीर ॥ ९ ॥

संत का परमारथ चित धार ।
चलूँ मैं सतगुरु मारग सार ॥ ७ ॥
रोग और सोग सहे भारी ।
जगत सँग रहती दुखियारी ॥ ८ ॥
नहीं कुछ पाया सुख जग में ।
भटक में गए दिन या मग में ॥ ९ ॥
मिला मोहिं जब से गुरु का संग ।
भींज रही सहज नाम के रंग ॥ १० ॥
सराहूँ नित नित भाग अपना ।
नाम राधास्वामी हिये जपना ॥ ११ ॥
करूँ नित आरत गुरु के पास ।
सुखी होय करती चरन निवास ॥ १२ ॥
प्रेम से गुरु सेवा करती ।
उमँग हिये छिन छिन नई धरती ॥ १३ ॥
दया राधास्वामी लेकर संग ।
शब्द में लगती सहित उमंग ॥ १४ ॥
रहूँ अस निश्चय मन में धार ।
करें राधास्वामी मोर उधार ॥ १५ ॥

॥ ब्द ९२ ॥

पदम गुरु चरन हुआ दास ।
शब्द सूरत करत बिलास ॥ १ ॥
रन गुरु प्रीत बढ़ी भारी ।
छोड़ दई त री ॥ २ ॥
टुँब परिवार ग तज दीन ।
हु ा चरनन लौ लीन ॥ ३ ॥
राग रँग माया ीके लाग ।
चाह भोगन ी दीनी ग ॥ ४ ॥
ग राधास्वामी चित भाया ।
ोड़ जग चरनन में धाया ॥ ५ ॥
ब गुरु ता दिन ोर रात ।
ग कर हाथ ॥ ६ ॥
ब्द धुन गी घट प्यारी ।
रु ित गी सारी ॥ ७ ॥
दर गुरु देता तन मन वार ।
देखता घट बहार ॥ ८ ॥
सुरत रहे लागी दिन और रैन ।
भजन बिन नहिं पावत मन चैन ॥ ९ ॥

सरकती छिन छिन नभ की ओर ।
संख धुन घंटा डाला शोर ॥ १० ॥
निरखता झिल मिल जोत अपार ।
बंक धस लखता गगन उजार ॥ ११ ॥
सुन्न में देखी हंसन भीड़।
धोए सब कल मल बेनी तीर ॥ १२ ॥
महासुन घाटी चढ़ भागा ।
भँवर में नूर सूर जागा ॥ १३ ॥
निरख अमरा पुर पुर्ष विलास ।
पदम गुरु पाया चरन निवास ॥ १४ ॥
करी मोपै सतगुरु दया नवीन ।
भेद फिर आगे का मोहिं दीन ॥१५॥
चढ़ाई सूरत उलटी धार ।
अलख लख किया अगम दरबार॥ १६॥
भेद राधास्वामी पाया सार ।
हुई मैं उन चरनन बलिहार॥ १७ ॥
कहूँ क्या महिमाँ मेहर अपार ।
सरन दे लीना मोहिं उबार ॥ १८ ॥
भाग बड़ अपना क्या गाऊँ ।
चरन राधास्वामी नित ध्याऊँ ॥ १९ ॥

॥ शब्द ६३ ॥

शब्द गुरु ्दर रूप निहार ।
दा घट तर जागा ार ॥ १ ॥
भरमता जग में रहा च े ।
भोगिया जहाँ तहाँ र लेश ॥२॥
भरम ँग लिपट रहे जीव ।
त बिन नाहिं पावें नि पी ॥ ३ ॥
खोज ा ा गुरु द ार ।
सुने राधास्वा ी ब पार ॥ ४॥
नत हु ि माँ देश न ।
ि ा मानो ॥ ५ ॥
ीत मेरी गुरु चर ी ।
सतपुर की री ॥ ६ ॥
च न राधास्वामी हिये बसाय ।
नाम उन जपत रहूँ गुन गाय ॥ ७ ॥
सुरत और शब्द जुगत ले सार ।
चढ़ाऊँ मन को धुन की लार ॥ ८ ॥
धरूँ गुरु मूरत हिरदे ध्यान ।
शब्द नभ धारूँ जोत निशान ॥ ९ ॥

नित्त गुरु सतसँग करूँ बिलास।
हिये में छिन छिन बढ़त हुलास ॥१०॥
आरती गाऊँ बिरह सम्हार।
चरन गुरु उपजत नया पियार ॥ ११ ॥
दया राधास्वामी नित चाहूँ।
जीत मन माया घर जाऊँ ॥ १२ ॥

॥ शब्द ६४ ॥

भक्ति गुरु जागी कर सतसंग।
छोड़ दई मन ने सभी उचंग ॥ १ ॥
भाव नित बढ़ता गुरु चरना।
प्रीत नई घट अंतर भरना ॥ २ ॥
तोलता सतसँग बचन बिचार।
खोलता जड़ सँग गाँठ सम्हार ॥ ३ ॥
रोलता नाम बस्तु हरबार।
डोलता गुरु मूरत की लार ॥ ४ ॥
जमा कर मन सूरत हिये माहिँ।
ध्यान में लाता सतगुरु पाँय ॥ ५ ॥
सुना कर परमारथ बचना।
कुटुँब को लाता गुरु सरना ॥ ६ ॥

॥ शब्द ६५ ॥

खिला घट कँवलन की फुलवार ।
सुनत रहो सूरत धुन झनकार ॥ १ ॥
प्रेम की सींचत नित क्यारी ।
शब्द धुन लागी फुलवारी ॥ २ ॥
बाढ़ दृढ़ परतीत की साजी ।
घाट तज माया रही लाजी ॥ ३ ॥
बचन की पौद रखाऊँ झाड़ ।
रहित के फल और फूल सम्हार ॥ ४ ॥
करत मन माली सेवा नित्त ।
सब्द को डोरी सँग रहे चित ॥ ५ ॥
सुरत की बेल चढ़ी आकाश ।
सहसदल कँवल फोड़ किया बास ॥ ६ ॥
गगन में सूरज गुल फूला ।
करम के कट गए सब सूला ॥ ७ ॥
सुन्न में खिली चाँदनी सार ।
बजत रहो जहाँ धुन रारंकार ॥ ८ ॥
भँवर मन बैठा जाय हुशियार ।
बाँसरी सोहँग संग सम्हार ॥ ९ ॥

अमर पुर अचरज धुन बाजी ।
हुए गुरु सत्तपुरुष राज़ी ॥ १० ॥
अलख में पहुँची धर कर प्यार ।
गम पुर देखा वार और पार ॥ ११ ॥
चरन में राधास्वामी पहुँची धाय ।
लई वहाँ आरत प्रेम सजाय ॥ १२ ॥
मगन हुई चरज दरशन पाय ।
भाग जुग जुग के लीन जगाय ॥ १३ ॥
अमीं ा सागर प्रेम सरूप ।
रत ब निरखा त रूप ॥ १४ ॥
हूँ क्या महिमाँ राधास्वामी धाम ।
गाऊँ मैं न न राधास्वामी नाम ॥१५॥
दया मोपे राधास्वामी अस कीनी ।
रत हुई चरन सरन लीनी ॥ १६ ॥

॥ शब्द ६६ ॥

भाग मेरा अचरज जाग रहा ।
चरन गुरु मनुआँ लाग रहा ॥ १ ॥
दीन चित चरनन में आई ।
बचन गुरु सुन अति हरखाई ॥ २ ॥

देख गुरु चरनन नित्त बिलास ।
हिये में निस दिन बढ़त हुलास ॥३॥
भाव जग लागा अब घटने ।
लगा मन सतसँग में जगने ॥ ४ ॥
करम और भरम हुए सब दूर ।
बजत नित घट में अनहद तूर ॥५॥
गुरू की महिमाँ क्या गाऊँ ।
सरन गहि चरनन में धाऊँ ॥ ६ ॥
जगत में भूल भरम भारी ।
चाह सब माया की धारी ॥ ७ ॥
बिसर गए निज घर को सब जीव ।
मिलें कस बिन सतगुरु सच पीव ॥ ८ ॥
सराहूँ छिन छिन भाग अपना ।
दूर हुआ माया सँग तपना ॥ ९ ॥
गुरू और सतसँग मोहिं भावें ।
भोग जग अब नहिं भरमावें ॥ १० ॥
शब्द सँग सुरत रहे लागी ।
प्रीत गुरु चरनन सँग पागी ॥ ११ ॥
नहीं गुरु सम प्रीतम कोई ।
नहीं सतसँग सम सँग कोई ॥ १२ ॥

शब्द म नहिँ ोइ मे ार ।
दरद बिन नहीँ चि हार ॥ १३ ॥
गुरु बड़ भागी वे ।
उलट घर ह ि ढ़ ावे ॥ १४ ॥
करी गु मुझ पर दया पार ।
दिया मोहिँ राध वामी नाम दयार ॥१५
रहूँ मैं नि र ज़ार ।
दया ले राध ामी हूँ पार ॥ १६ ॥
चरन राधास्वामी ारत धार ।
तरा ँ सकल कुटँब परिवार ॥ १७ ॥

॥ शब्द ६७ ॥

को बिधि ारत गुरु धा ँ ।
ौन ि धि हूँ ॥ १ ॥
कौन बि को लेउँ समझाय ।
ौन बिधि रु ो लेउँ रि य ॥ २ ॥
कौन बिधि चित ँग राखू ।
कौन बिधि गुरु रत ॥ ३ ॥
कौन बिधि मन निश्चल होई ।
कौन बिधि चित निरमल होई ॥ ४ ॥

कौन बिधि ध्यान हिये लाय।
कौन बिधि लीजे शब्द जगा ॥ ५ ॥
कौन बिधि नाम चित्त में आय।
कौन बिधि धुन सँग सुरत लगाय ॥ ६ ॥
कौन बिधि माया दल जीतूँ।
कौन बिधि सीस काल रेतूँ ॥ ७ ॥
कौन बिधि करम धरम छुटकाय।
कौन बिधि दीजे भरम बहाय ॥ ८ ॥
प्रेम राधास्वामी चरनन धार।
सरन राधास्वामी हिये सम्हार ॥ ९ ॥
करें जब राधास्वामी मेहर अपार।
देखूँ सब छिन में काज सँवार ॥ १० ॥
सुरत मन चढ़ें गगन की ओर।
शब्द धुन घट में सुन घन घोर ॥ ११ ॥
सहसदल घंटा संख सुनें।
गगन में धुन मिरदंग गुनें ॥ १२ ॥
सुन्न चढ़ तिरबेनी न्हावे।
भँवर में धुन सोहँग गावे ॥ १३ ॥
सतपुर दरश पुरुष पावे।
अलख पुर अगम को चढ़ जावे ॥ १४ ॥

परे तिस राधा ामी चरन निहार ।
करूँ मैं आरत जाउँ बलिहार ॥ १५ ॥

॥ शब्द ६८ ॥

दर गुरु जब से मैं कीना ।
हु मन प्रेम रंग भीना ॥ १ ॥
प्रीत गुरु चरनन लाग रही ।
सुरत सतसँग में जाग रही ॥ २ ॥
हुआ मन संगत में लौ लीन ।
चरन में गुरु के दीन अधीन ॥ ३ ॥
जगत जिव भूले करमन में ।
बरत ौर तीरथ में भरमें ॥ ४ ॥
पूजते देवी ौर देवा ।
मिला नहिं रत शब्द भेवा ॥ ५ ॥
दर त ँग ी नहिं जानें ।
बचन सतगुरु का नहिं मानें ॥ ६ ॥
करम बस जनमें बारम्बार ।
भरम कर बहु चौरा ी धार ॥ ७ ॥
कहूँ क्या महिमाँ राधास्वामी गाय ।
लिया मोहिं अपने चरन लगाय ॥ ८ ॥

भाग मेरा धुर का दिया जगाय ।
प्रीत मेरे हिये में दई बसाय ॥ ९ ॥
शब्द का भेद दिया पूरा ।
लगा घट बजने धुन तूरा ॥ १० ॥
प्रेम अँग आरत राधास्वामी धार ।
रहूँ मैं निस दिन चरन सम्हार ॥ ११ ॥
ध्यान गुरु धरती नैनन ताक ।
सुनत रहुँ घट में नित गुरु बाक ॥ १२ ॥
सुहावन रूप जोत ताकूँ ।
गगन चढ़ सार बेद भाखूँ ॥ १३ ॥
चाँदनी खिल गई दसवें द्वार ।
बजत जहाँ किँगरी सारँग सार ॥ १४ ॥
भँवर में बंसी गाज रही ।
सत्तपुर बीना बाज रही ॥ १५ ॥
अलख और अगम नगर देखा ।
मूल पद राधास्वामी अब पेखा ॥ १६ ॥
गाऊँ गु राधास्वामी रकबार ।
दिया मोहिं नौ... पार उतार ॥ १७ ॥

॥ शब्द ९९ ॥

सुनत गुरु महिमा जागी प्रीत ।
छोड़ दई मन ने जग की रीत ॥१॥
भजत गुरु नाम मिला आनंद ।
सुनत गुरु शब्द कटे भौ फंद ॥२॥
भटक में बहु दिन गए बीते ।
वस्तु नहिं पाई रहे रीते ॥३॥
भेख और पंडित डाला जाल ।
हुए सब माया सँग पामाल ॥४॥
भरम रहे आप अँधेरे माहिं ।
अटक रहे काल करम की छाँह ॥५॥
पुजावें सब से नीर पखान ।
न पाई सतपद की पहिचान ॥६॥
भरमते सब जिव चौरासी ।
कटे नहिं कबहीं जम फाँसी ॥७॥
घटाया उन सँग भाग अपना ।
सहैं नित करमन सँग तपना ॥८॥
हुई मोपै अचरज दया अपार ।
लिया मोहिं राधास्वामी आप निकार ९

भेद निज घर का समझारा ।
शब्द का मारग दरसाया ॥ १० ॥
सुनाए बचन गहिर गंभीर ।
छुटाई तन मन की ब पीर । ११ ॥
करम और भरम दिए छुटकाय ।
भक्ति गुरु दीनी हिये बसाय ॥ १२ ॥
चरन में गुरु के ब ती प्रीत ।
धार लई मन ने भक्ती रीत ॥ १३ ॥
सुरत मन टके गुरु चरना ।
गावती छिन छिन गुरु महिमाँ १४ ॥
सरन गुरु लागी ब प्यारी ।
उतर गई पोट करम भारी ॥ १५ ॥
करूँ गुरु रत चित्त सम्हार ।
चरन पर राधास्वामी जाउँ बलिहार १६
हुआ मेरे चित में दृढ़ बि स ।
करें गुरु पूरन मेरी ा ॥ १७ ॥
दया कर देहैं चरन में बास ।
करूँ मैं उन सँग नित्त बिलास ॥ १८ ॥
परम गुरु राधास्वामी किरपा धार ।
सरन दे मोहिं उतारा पार ॥ १९ ॥

॥ शब्द ६९ ॥

नत गुरु महिमा जागी प्रीत ।
ोड़ दई मन ने जग की रीत ॥ १ ॥
भजत गुरु नाम मिला ानंद ।
गुरु शब्द टे भौ फंद ॥ २ ॥
भट में बहु दिन गए बीते ।
बस्तु नहिं पाई रहे रीते ॥ ३ ॥
भेख ौर पंडित डाला जाल ।
हुए ब माया ंग पामाल ॥ ४ ॥
भरम रहे आप अँधेरे माहिं ।
टक रहे काल रम की ाँह ॥ ५ ॥
पुजावें सब से नीर पखान ।
न पाई तपद की पहिचान ॥ ६ ॥
भरमते ब जिव चौरासी ।
टै नहिं बहीं जम फाँ ी ॥ ७ ॥
घटाया उन ंग भाग पना ।
हैं नित रमन ंग तपना ॥ ८ ॥
हुई मोपै चरज दया पार ।
लिया मोहिं राधास्वामी ापनिकार।९

भेद निज घर का समझाया ।
शब्द का मारग दरसाया ॥ १० ॥
सुनाए बचन गहिर गंभीर ।
छुटाई तन मन की अब पीर ॥ ११ ॥
करम और भरम दिए छुटकाय ।
भक्ति गुरु दीनी हिये बसाय ॥ १२ ॥
चरन में गुरु के बढ़ती प्रीत ।
धार लई मन ने भक्ती रीत ॥ १३ ॥
सुरत मन अटके गुरु चरना ।
गावती छिन छिन गुरु महिमाँ ॥ १४ ॥
सरन गुरु लागी अब प्यारी ।
उतर गई पोट करम भारी ॥ १५ ॥
करूँ गुरु आरत चित्त सम्हार ।
चरन पर राधास्वामी जाऊँ बलिहार ।१६
हुआ मेरे चित में दृढ़ बिस्वास ।
करें गुरु पूरन मेरी आस ॥ १७ ॥
दया कर देहैं चरन में बास ।
करूँ मैं उन सँग नित्त बिलास ॥ १८ ॥

परम गुरु राध ामी किरपा धार ।
सरन दे मोहिँ उतारा पार ॥ १९ ॥
सहसदल देखूँ जोत सरूप ।
निरखती त्रिकुटी चढ़ गुरु रूप ॥ २० ॥
सुन्न सुनती सारँग सार ।
भँवर मुरली धुन झनकार ॥ २१ ॥
सत्तपुर पहुँची लगन सुधार ।
पुरुष दरशन किया सम्हार ॥ २२ ॥
गई फिर गम के धाम ।
परम गुरु मिले अरूप अनाम ॥ २३ ॥
आरती उन चरनन में धार ।
लिया मैं पना जनम धार ॥ २४ ॥
मेहर राधास्वामी बरनी न जाय ।
दिया मोहिँ सहजहि पार लगाय ॥ २५ ॥

॥ शब्द ७७ ॥

सुरत हुई मगन चरन रस पाय ।
ध्यान गुरु मूरत हिये बसाय ॥ १ ॥
कहूँ क्या महिमा चरज रूप ।
बिराजे अगम लो कुल भूप ॥ २ ॥

पिता प्यारे राधास्वामी दीन दयाल ।
दरस दे ो किया निहाल ॥ ३ ॥
न्द भे र अपार ।
दया कर दीना को सार ॥ ४ ॥
चर न पर बलिहार ।
रत हुई रंग सरशार ॥ ५ ॥
जगत । दे । रंग र ।
दई गुरु ऐसी द्व ी ार ॥ ६ ॥
हु । भोगन से बेज़ार ।
गुरू की ी मेहर अपार ॥ ७ ॥
गुरु ि पि ार ।
प्रेम की होत र ॥ ८ ॥
दरस गुरु चू धार ।
बचन गुरु पा म आधार ॥ ९ ॥
दीन दिल हिमाँ सार ।
शुकर कर हिये से बार ार ॥ १० ॥
मिले मोहिं प्री ुरु दातार ।
मेहर कर ीना गोद बिठार ॥ ११ ॥
सरन मोहिं निज चरन में दीन ।
हुआ मन सतगुरु मों धीन ॥ १२ ॥

शब्द सँग सुरत चढ़ी आ । ।
निरखिया सहसकँवल पर ॥ १३ ॥
नत धुन घंटा गन भई ।
संख धुन सूरत खैंच लई ॥ १४ ॥
परे तिस सुनियाँ धुन ओंकार ।
हुआ गुरु सूरत संग पियार ॥ १५ ॥
वहाँ से पहुँची सुन्न मँझार ।
बजत जहाँ किंगरी सारँग सार ॥ १६ ॥
मानसर किए जाय अश्नान ।
लगा फिर सोहँग धुन से ध्यान ॥ १७ ॥
भँवर चढ़ गई अमर पुर में ।
बीन धुन सुनी मधुर सुर में ॥ १८ ॥
अलख पुर गई पुरुष धर ध्यान ।
अगम पुर पाया नाम निधान ॥ १९ ॥
परे तिस लखिया पुरुष अनाम ।
चरन में राधास्वामी दिया बिसराम ॥२०॥
आरती अद्भुत लीन सजाय ।
लिए मैं राधास्वामी खूब रिझाय ॥२१॥
मेहर से काज हुआ पूरा ।
हुआ मैं चरन सरन धूरा ॥ २२ ॥

संत बिन नहिं पावे यह धाम ।
रहे सब माया नारि गुला ॥ २३ ॥
जगत में जो मत हैं जारी ।
न जावें ल देस पारी ॥ २४ ॥
नहीं कोइ जाने संत भेद ।
सहें सब ल करम के खेद ॥ २५ ॥
भाग मेरा धुर ा जागा ाय ।
भेद राधास्वामी मत पा ॥ २६ ॥
सहज राधास्वामी र िली ।
रत मेरी राधास्वामी चरन रली ॥२७॥

॥ शब्द ७१ ॥

दरस गुरु पाया जागा भाग ।
बढ़ा गुरु रनन में अनुराग ॥ १ ॥
देख गुरु लीला बिग न ।
चरन गुरु मेलत फूलत तन ॥ २ ॥
खेलती गुरु सन्मुख बहु भाँत ।
चरन रस पीवत पाई ंत ॥ ३ ॥
खिलाड़ी मनु ाँ रहे भरमाय ।
होत गुरु सन्मुख झट ठहराय ॥ ४ ॥

कहूँ क्या गुरु ि रपा बरनन ।
सरन में जीव लगे तरनन ॥ ५ ॥
अभागी जीव न ावें पास ।
रहें नित जम के ंग उदास ॥ ६ ॥
करम बस नित दु सुख पावें ।
बहुर चौरासी भरमावें ॥ ७ ॥
कहूँ क्या मात पिता महिमाँ ।
लगाया मुझ ो गुरु चरना ॥ ८ ॥
बिपत सब कीनी मेरी दूर ।
काल और करम रहे सब झूर ॥ ९ ॥
मगन होय गुरु ारत करती ।
नाम राधास्वामी हिये धरती ॥ १० ॥
कहूँ मैं बिनती बारम्बार ।
दया कर दीजे चरन अधार ॥ ११ ॥
नाम राधास्वामी नित भाखूँ ।
चरन राधास्वामी हिये राखूँ ॥ १२ ॥

॥ शब्द ७२ ॥

चरन गुरु हुआ हिये बिस्वास ।
शब्द सँग करता नित्त बिलास ॥ १ ॥

दूर से आया गुरु दर र ।
चरन गुरु उमँगा हिरदे ार ॥ २ ॥
बचन रू न न   धारे ।
लोभ मोह न से सब टारे ॥ ३ ॥
शब्द गुरु हिमाँ समाय ।
दिए ब का और ोध बहाय ॥४॥
हिये में जागी नई परतीत ।
चर गुरु ती दि र ीत ॥ ५ ॥
लिया ब राधास्वामी पंथ म्हार ।
शब्द गुरु रूँ   वार ॥ ६ ॥
सुरत ीर शब्द जुगत को धार ।
धुनन की नता घट झनकार ॥ ७ ॥
गुरु भक्ती री नई ।
रन हिये   भई ॥ ८ ॥
राधास्वामी महिमाँ सार ।
चरन पर जाउँ हिये से बलिहार ॥ ९ ॥
सरन गुरु को सके महिमाँ गाय ।
वार   कोइ   ा ी पाय ॥ १० ॥
चरन गुरु छुआ म दीन ीन ।
द राधास्वामी लीनी चीन्ह ॥ ११ ॥

सरन गुरु नित हिये दृढ़ करता ।
धरम और रम भरम ॥ १२ ॥
भाग मेरा जागा गहिर गँभीर ।
चरन गुरु पकड़े धारी धीर ॥ १३ ॥
पकड़ धुन रत ।
निरखते घट गुरु मूरत ॥ १४ ॥
आरती नई बि सा ी ।
हुए गुरु राधास्वामी रा ी ॥ १५ ॥
प्रेम ग गावत हुआ लीन ।
रूप र पाया ाँ ीन ॥ १६ ॥
गाऊँ नित राधास्वामी गुरु म ि माँ ।
दया पर छि २ कुरबाँ ॥ १७ ॥

॥ शब्द ७३ ॥

रत मेरी रनन लाग रही ।
सर धुन ट रही ॥ १ ॥
सरन गुरु न हुआ मेरा लीन ।
मौ गुरु लागा चीन्ह ॥ २ ॥
चरन दिन दिन प्यार ।
बचन ौर दर न ोर धार ॥ ३ ॥

करूँ मैं सतसँग सहित उमंग ।
त्याग दई मन से सबही उचंग ॥ ४ ॥
प्रेम की धारा रहे जारी ।
लगत गुरु सेवा ति प्यारी ॥ ५ ॥
सुमिरता राधास्वामी ना पार ।
दरस गुरु देता तन वार ॥ ६ ॥
सुरत की डोरी चरनन लाय ।
रहूँ ि गुरु प्रेम जगाय ॥ ७ ॥
संत मत महिमाँ अपर अपार ।
नहीं कोइ ने रहे वार ॥ ८ ॥
रम वस से के जाल ।
हुए सब माया सँग बेहाल ॥ ९ ॥
मेहर मोपै राधास्वामी चरज की ।
दया कर चरन रन मोहिँ दीन ॥१०॥
भाग मेरा सोता दीन जगाय ।
लिया मोहिँ ने चरन लगाय ॥११॥
दिया मोहिँ गुरु भक्ती धार ।
शब्द का भेद सार ॥ १२ ॥
सरन गुरु क्या हूँ हिमाँ सार ।
गही जि उतरे भौजल पार ॥ १३ ॥

सहज जो चाहे जीव उधार।
गुरु चरन होय जग पार॥ १४॥
शब्द गुरु रे दृढ़ परतीत।
चरन गु छिन वि पाले प्रीत॥ १५॥
भरम त दू ासा लावे।
चरन ँ पावे॥ १६॥
हुई मोपै राधास्वामी मेहर अपार।
अमीँ रस पियत रहूँ हर बार॥ १७॥
सु चढ़ते फोड़ ा।
में लखते गुरु पर ॥ १८॥
हं संग मिलाप।
गए कलह त्रिय प॥ १९॥
महासुन तगुरु ँग चाली।
भँवर धुन न हुई तवाली॥ २०॥
लोक वि पुरुष नूर।
लखा घर अगम हुइ सूर॥ २१॥
परे तिस राधास्वामी धाम अपार।
हुई चरन सरन बलिहार॥ २२॥

॥ शब्द ७४ ॥

बढ़त मेरा दिन दिन गुरु अनुराग ।
सरन गह रहे सुरत मन जाग ॥ १ ॥
हुई दृढ़ मन में गुरु परतीत ।
मेहर ी परखी अचरज रीत ॥ २ ॥
सेव गुरु करता सहित उमंग ।
चढ़त नित नया प्रेम का रंग ॥ ३ ॥
सुरत मन हुए चरन आधीन ।
ध्यान गुरु हुए रूप र लीन ॥ ४ ॥
शब्द धुन ुनत हर ा ।
अमीं रस चाखत फूला तन ॥ ५ ॥
चरन गुरु डारूँ तन मन वार ।
कुटम्ब सब अपना लेऊँ तार ॥ ६ ॥
दया गुरु महिमाँ बरनी न जाय ।
शुकर कर हर दम उन गुन गाय ॥७॥
नगर में धूम पड़ी भारी ।
निकारें काम क्रोध झारी ॥ ८ ॥
तिरिशना लोभ बिडारे जायँ ।
मोह मद मान नहीं ठहरायँ ॥ ९ ॥

होत अब गुरमुखता का राज ।
गुरू ने बख़्शा सगला साज ॥ १० ॥
सुरत मन निरमल होय आये ।
चरन गुरू गुन गावत धाये ॥ ११ ॥
सुनत चढ़ नभ में घंटा सार ।
जोग सुन पहुँची गगन मँझार ॥१२॥
बजत जहाँ सुन में सारँग सार ।
मानसर न्हाई मैल उतार ॥ १३ ॥
महासुन गई पार गुरू नाल ।
थकत रहा रस्ते में महाकाल ॥ १४ ॥
भँवर में मुरली धुन चीन्हा ।
सत्तपुर दरस पुरुष लीन्हा ॥ १५ ॥
अलख और अगम को परखा जाय ।
परे तिस राधास्वामी दरशन पाय ॥ १६ ॥
भाग मेरा उदय हुआ भारी ।
चरन राधास्वामी सिर धारी ॥ १७ ॥
उमँग कर आरत साज सजाय ।
परम गुरू राधास्वामी लीन रिझाय ॥१८॥
दया मोपै राधास्वामी कीन अपार ।
दिया मोहिं चरन सरन आधार ॥ १९ ॥

ऊँच से ऊँचा है यह धाम ।
संत बिन नहिं पावे बिस्राम ॥ २० ॥
रहा मैं जग में नीच नकार ।
दया कर राधास्वामी लीन उबार ॥२१॥

॥ शब्द ७५ ॥

प्रीत नित बढ़ती गुरु चरनन ।
हरख मन करता गुरु दरशन ॥ १ ॥
बचन गुरु हिरदे में धरता ।
प्रेम अँग नित्त मनन करता ॥ २ ॥
समझ में आई भक्ती रीत ।
धार लई मन में दृढ़ परतीत ॥ ३ ॥
उमँग अब उठती मन माहीं ।
सरन गह बैठूँ गुरु छाहीं ॥ ४ ॥
मिले मोहिं राधास्वामी गुरु साईं ।
वार देउँ तन मन उन पाईं ॥ ५ ॥
दया बिन बनत न कोई काम ।
मेहर उन माँगूँ आठो जाम ॥ ६ ॥
शब्द बिन पंथ चला नहिं जाय ।
दिया मोहिं सतगुरु भेद जनाय ॥ ७ ॥

सुरत मन घेरो घट माहीं ।
मिटे तब काल करम छाहीं ॥ ८ ॥
करो अब राधास्वामी मेरी सहाय ।
प्रेम दे दीजे सुरत चढ़ाय ॥ ९ ॥
रहूँ मैं जग में नित्त उदास ।
बिना तुम चरन नहीं कोइ आस ॥१०॥
सुरत मन बिनय करें तुम पास ।
दया कर दीजे गगन निवास ॥ ११ ॥
दूत सब दीजे घट से टार ।
मेहर से लीजे मन को मार ॥ १२ ॥
चढूँ तब देखूँ घट परकाश ।
सहसदल जाऊँ पाऊँ बास ॥ १३ ॥
वहाँ से निरखूँ त्रिकुटी धाम ।
करूँ गुरु चरनन में बिस्राम ॥ १४ ॥
सुन्न में हंसन संग मिलाप ।
करूँ और पाऊँ अपना आप ॥ १५ ॥
भँवर चढ़ सुनती सोहँग सार ।
लगा अब मुरली धुन से प्यार ॥ १६ ॥
सत्तपुर किए सतगुरु दरशन ।
परस कर सत्तपुरुष चरनन ॥ १७ ॥

चली फिर आगे को पग धार ।
अलख और अगम किया दीदार ॥१८॥
वहाँ से राधास्वामी धा गई ।
चरन में राधास्वामी मेल लई ॥ १९ ॥
रहूँ नित अस्तुत राधास्वामी गाय ।
दिया मेरा चरज भाग जगाय ॥ २० ॥
उमँग ग आरत वहाँ करती ।
नाम राधास्वामी नित भजती ॥ २१ ॥

॥ शब्द ७६ ॥

सरन गुरु महिमाँ चि बसाय ।
सुरत निसदिन रनन धाय ॥ १ ॥
चरन गुरु दृढ़ पकड़ती सम्हार ।
प्रीत हिये बढ़ती दिन दिन सार ॥ २ ॥
चरन राधास्वामी आसा धार ।
जिऊँ मैं निस दिन चरन अधार ॥ ३ ॥
हिये में राधास्वामी बल धारूँ ।
दया ले ..ाल करम जारूँ ॥ ४ ॥
भरोसा राधास्वामी हिरदे धार ।
मौज गुरु हरदम रहूँ निहार ॥ ५ ॥

निरख कर चलती मन की चाल ।
परख कर काटूँ माया जाल ॥ ६ ॥
सहज में छोड़ूँ ोध और काम ।
जपूँ नित हिये में राधास्वामी नाम ॥७॥
लोभ और मोह बिसार दई ।
अहँग तज छोड़ी मान मई ॥ ८ ॥
दया राधास्वामी लेकर साथ ।
काल और मन का कूटूँ माथ ॥ ९ ॥
परख कर पकड़ू गुरु बचना ।
चाल मन माया नित तजना ॥ १० ॥
डरत रहूँ सतगुरु से हर दम ।
चरन में राखूँ चित कर सम ॥ ११ ॥
गुरू की अज्ञा सिर पर धार ।
चलूँ नित बचन बिचार बिचार ॥ १२ ॥
गाऊँ उन महिमाँ दिन और रात ।
करूँ उन सेवा तन मन साथ ॥ १३ ॥
शुकर र हिरदे से हर बार ।
चरन पर जाऊँ नित बलिहार ॥ १४ ॥
उमँग र नित आरत करती ।
प्रेम राधास्वामी [illegible] धरती ॥ १५ ॥

पिरेमी　　सँग गाऊँ राग ।
　　मेरे दिन २ हिये अनुराग ॥ १६ ॥
मेहर राधास्वामी छिन २ प　　।
ध्यान गुरु चरनन रहूँ समा　　॥ १७ ॥
शब्द धुन बजती　　ी ओर ।
गगन　　गई रैन हुआ भोर ॥१८॥
चाँदनी खिली सुन्न के माहिँ ।
भँवर　　मिटी　　ल की दायँ ॥ १९ ॥
　ी धुन बीना　　र जा　　।
मगन हुई दरशन सतपुर्ष पाय ॥ २० ॥
　　　　से कीना प्यार ।
　　मी पुरष किया दीदार ॥ २१ ॥
पर　　कर सुरत शब　　निज धार ।
करूँ गुरु　　　　बलिहार ॥ २२ ॥
दया राधा　　ी कीन　　पार ।
हुई मस्तानी रूप निहार ॥ २३ ॥
बेद नहिँ जाने　ह घर　　र ।
रहे　　जोगी ज्ञानी वार ॥　　॥
दिया मेरा राधास्वामी भाग जगाय ।
मगन हुई मैं यह निज घर पाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७७ ॥

जगत का मेला देखा रंग ।
हुआ मन काल करम से तंग ॥ १ ॥
बहुत दिन भरमा भरम ने ।
देव किरतम की धारी टेक ॥ २ ॥
नहीं कुछ परमारथ पाया ।
करम फल हाथ नहीं ा ॥ ३ ॥
सुनी जब राधास्वामी महिमाँ ।
गहे मन चित से गुरु चरना ॥ ४ ॥
देख सतसँग की ब बहार ।
दिया मैं तन मन गुरु पर वार ॥ ५ ॥
सुरत और शब्द जुगत धारी ।
कटे सब रम भरम भारी ॥ ६ ॥
लगा अब घट में र लेने ।
सरन गुरु हित चित से गहने ॥ ७ ॥
कहूँ क्या महिमाँ राधास्वामी नाम ।
करत मन सुमिरन हुआ निष्काम ॥ ८ ॥
जगत ी आसा दीनी त्याग ।
बढ़त गुरु सतसँग में नुराग ॥ ९ ॥

सार रस सतसँग पिऊँ दिन रात ।
मेहर गुरु महिमाँ कही न जात ॥ १० ॥
हुआ राधास्वामी चरनन बिस्वास ।
करें वे पूरन एक दिन आस ॥ ११ ॥
चरन बिन और न कुछ चाहूँ ।
नाम राधास्वामी नित ध्याऊँ ॥ १२ ॥
चढ़ूँ अब घट में नभ धुन हेर ।
काल और करम हुए दोउ ज़ेर ॥ १३ ॥
गगन चढ़ गुरु का देख समाज ।
करें जहाँ मन सूरत घट राज ॥ १४ ॥
मानसर न्हाऊँ मैल उतार ।
सूनूँ धुन किंगरी सारँग सार ॥ १५ ॥
महासुन घाटी चढ़ भागी ।
गुफ़ा में मुरली धुन जागी ॥ १६ ॥
अमर पुर पहुँची कर सिंगार ।
पुरुष का देखा नूर अपार ॥ १७ ॥
गई फिर अलख अगम के पार ।
रही राधास्वामी चरन निहार ॥ १८ ॥
मेहर गुरु जागा भाग अपार ।
सरन राधास्वामी पाई सार ॥ १९ ॥

आरती राधास्वामी सन्मुख धार ।
रहूँ नित राधास्वामी चरन सम्हार ॥२०॥

॥ शब्द ७८ ॥

आज हिये होत हरख भारी ।
आरती गुरु चर धारी ॥ १ ॥
थाल गुरु से ला लिया जाय ।
ध्यान गुरु लीनी जोत जगाय ॥ २ ॥
आरती हित चित से गाऊँ ।
मेहर राधा दिन दिन चाहूँ ॥३॥
संग गुरु रत रहूँ जिय से ।
बचन गुरु सुनत रहूँ हिय से ॥ ४ ॥
धरा राधास्वामी गुरु औतार ।
बहुत जिव लीने पार उतार ॥ ५ ॥
दीन दिल चरन रन ये ।
वही जिव तपुर पहुँचाये ॥ ६ ॥
किया अस राधा मी जगत उबार ।
करम और काल रहे सब हार ॥ ७ ॥
दया मोपै राधास्वामी अस कीनी ।
भाग बड़ अपना मैं चीन्ही ॥ ८ ॥

दई मोहिं दृढ़ कर चरन सरन ।
हिये मैं निज-परतीत धरन ॥ ९ ॥
प्रेम और प्रीत लगी अधि　　।
मेहर गुरु कस　हूँ　हिं　ाँ गा　॥१०॥
हुआ मोहिं सेवा　　पियार ।
नाम राध　ामी रहूँ उर धार ॥ ११ ॥
पीस कर कीना मन चूरा ।
हटाए काल करम दूरा ॥ १२ ॥
छान कर लिया नि ज नाम सम्हार ।
चरन राधा　ी मोर　　र ॥ १३ ॥
भूनती निस दिन ..... और क्रोध ।
गुरू बल देकर मन को बोध ॥ १४ ॥
पकाऊँ दिन दिन घट मैं प्रीत ।
बसाऊँ हिये मैं गुरु परतीत ॥ १५ ॥
माँजती बासन कर कर साफ़ ।
छोड़ दई जग की तोल और नाप ॥१६॥
आस गुरु चरनन चित्त बसाय ।
रहूँ मैं निस दिन गुरु गुन गाय ॥ १७ ॥
लगाती झाड़ू हिये आँगना ।
दरस राधास्वामी वहाँ तकना ॥ १८ ॥

भोग गुरु सामाँ नित करती ।
सजा कर हिये थाली धरती ॥ १९ ॥
बिबिध अस निस दिन सेवा धाय ।
लिये मैं राधास्वामी ख़ूब रिझाय ॥२०॥
हुए परशन गुरु दीन दयाल ।
दया कर कीन्हा मोहिं निहाल ॥२१ ॥
सुरत से सुनती घंट बाजा ।
सहसदल घंट संख साजा ॥ २२ ॥
गगन गुरु धुन मिरदंग सुनाय ।
सुन्न चढ़ तिरबेनी में न्हाय ॥ २३ ॥
भँवर में पहुँची लगन सुधार ।
सुनी धुन सोहँग बँसी धार ॥ २४ ॥
सत्तपुर दरशन सतपुर्ष पाय ।
अलख लख अगम में पहुँची धाय ॥२५॥
परे तिस निरखा राधास्वामी धाम ।
परम गुरु अकह अपार अनाम ॥ २६॥
किया मेरा राधास्वामी पूरन काम ।
रहूँ मैं छिन छिन उन गुन गाम ॥ २७॥

॥ शब्द ७९ ॥

चरन रा मी ध्याय रही ।
नि गुरू महिमाँ य रही ॥ १ ॥
देखूँ घट परताप ।
गु तीनों ताप ॥ २ ॥
ह गु धरे हुआ मन सूर ।
रम ौर भर हुए सब चूर ॥ ३ ॥
गुरू र हिरदे माहिँ ।
मिटाऊँ ोध की छाहिँ ॥ ४ ॥
हथियार ।
हटा करम दल झाड़ ॥ ५ ॥
मेहर रा मी बरनी न जाय ।
सुरत रहे चरन लौ लाय ॥ ६ ॥
रहूँ नित वन बिचार ।
मोह दीना सहज निकार ॥ ७ ॥
शब्द मारग ा सार ।
धुन नित्त पियार ॥ ८ ॥
सुरत मन तजत जगत की आस ।
चरन में गुरू के चाहत बास ॥ ९ ॥

जगत का थोथा है ब्योहार ।
फँसा जो इस में रह गया वार ॥ ४ ॥
खोज सतगुरु का जो जन कीन ।
चरन में भक्ती कर हुए ली ॥ ५ ॥
सोई जन उतरे भौजल पार ।
मेहर राधा   ो पाई सार ॥ ६ ॥
भाग मेरा   चरज उठ   गा ।
चरन गुरु धारा   नुरागा ॥ ७ ॥
पड़ी ी जग में हा   चेत ।
खैंच लिया चरनन में दे हेत ॥ ८ ॥
गुरू का जब से   तसँग ीन ।
बचन सुन हुई मैं दीन अधीन ॥ ९ ॥
भाव जग ि   से द ा   ा ेड़ ।
मोह माया का न   ा तोड़ ॥ १० ॥
काल और करम लगे दुख देन ।
देत नहिं   त ँग का सुख लेन ॥ ११ ॥
रोग और ोग भुमा   रहे ।
बिघन अ   मोहिं घु ाय रहे ॥ १२ ॥
भरम और संसय बहु भरमात ।
काल गत कुछ नहिं बरनी जात ॥ १३ ॥

सरन राधास्वामी दृढ़ करती।
भरो मन में दृढ़ धरती ॥ १४ ॥
मेहर बिन ब नहिं चाले मोर।
रहो मैं गुरु रनन चित जोड़ ॥१५॥
द ा कर टें राधा ामी जाल।
ाल मोहिं कीना ति बेहा ॥१६॥
परम गुरु हूजे ाज हा ।
दुखन से लीजे बेग बचाय ॥१७॥
बच और दरशन पाऊँ र।
गाऊँ गुन तुम्हरा बारम्बार ॥१८॥
चरन में लीना हिँ गा
बहुर ापहि रो हाय ॥१९॥
सुन मेरी बिनती दीन दयाल।
दरस दे झको रो निहाल ॥२०॥
ब्द की दीजे दृ परतीत।
चरन में दृढ़ कर जोडूँ चीत ॥ २१ ॥
ध्यान गुरु रूप हिये धारूँ।
रूप रस चाखत ि ा वारूँ ॥२२॥
सुरत सँग घट देख बहार।
जाऊँ तुम चर परनन बलिहार ॥२३॥

आरती हित से कर में धार।
प्रे सँग गाऊँ तन न वार ॥२४॥
परम गुरु राधास्वामी हुए दयार।
ज किया पूरन रपा धार ॥२५॥

॥ शब्द ८२ ॥

बचन गुरु नत हुआ । ।
१ । गुरु धरत टे न फंद ॥१॥
र ौर भरम दिये सब ड़।
चरन लाग रहा दिल मोर ॥ २ ॥
हुई रु चनन द परती ।
धार ई चित भक्ती री ॥ ३ ॥
भरोसा राधास्वामी मन में धार।
रहूँ ल राधा मी ना पु ॥४॥
भरे मेरे न बहुत बिकार।
दया कर राधा मी लेहैं सम्हार ॥५॥
करम मैं कीन्हे बहु भाँती।
मेहर बिन नहिं आई शांती ॥ ६ ॥
मान ब भूला बारम्बार।
गुरु बिन नहिं लखिया पद सार ॥७॥

मिला अब राधास्वामी पद का भेद ।
करम के मिट गए सारे खेद ॥ ८ ॥
बीनती गुरु चरनन में धार ।
गुरू से माँगूँ दया अपार ॥ ९ ॥
सरन दे मोहिं उतारो पार ।
नाम गुरु जपत रहूँ हर बार ॥ १० ॥
काल अब करे न कोई घात ।
दूर करो मन के सब उतपात ॥ ११ ॥
चलूँ अब चरन सम्हार २ ।
बचन पर निस दिन रहूँ हुशियार ॥ १२ ॥
सुरत मन निरमल होय चालें ।
प्रीत गुरु हिये छिन छिन पालें ॥ १३ ॥
रूप गुरु ध्यान धरूँ दिन रात ।
करम की बाज़ी होवे मात ॥ १४ ॥
गगन चढ़ सुनूँ शब्द घनघोर ।
छुटै तब मन का मोर और तोर ॥ १५ ॥
दसम दर निरखूँ पाट हटाय ।
सत्तपुर सुनूँ बीन धुन जाय ॥ १६ ॥
चरन में राधास्वामी के धाऊँ ।
प्रेम सँग वहाँ आरत गाऊँ ॥ १७ ॥

दीन दिल पकड़ूँ गुरु चरना ।
धार रहूँ हिये में गुरु सरना ॥ १८ ॥
दया राधास्वामी पाई सार ।
उतर गया जन्म जन्म का भार ॥१९॥
भाग बिन नहिँ पावे यह धाम ।
मेहर बिन नहिँ मिलि है निज नाम॥२०॥
करी मोपै राधास्वामी दया अपार ।
दिया मोहिँ यिज चरनन आधार ॥२१॥

॥ शब्द ८२ ॥

सुरत मेरी हुई चरन गुरु लीन ।
लखी घट मूरत मन हुआ दीन ॥ १ ॥
वारती तन मन गुरु चरना ।
धारती मन में गुरु सरना ॥ २ ॥
जगत का परमारथ छोड़ा ।
करम सँग अब नाता तोड़ा ॥ ३ ॥
भक्ति गुरु लागी अति प्यारी ।
संत मत हित चित से धारी ॥४॥
सुरत और शब्द जुगत अनमोल ।
धार हिये सुनती बाला बोल ॥५॥

नाम रस पियत रहूँ दिन रात ।
गुरू दम दम ब गुन गात ॥६॥
बहुत दिन तीर बर्त पचाय ।
रही मैं ठगियन संग ठगाय ॥७॥
सुफल ी नर देह ज भई ।
दीन दिल राधास्वामी सरन गही ॥८॥
मेहर हुई चित चरनन लागा ।
त ब दिन दिन नुरागा ॥९॥
बचन सतसँग के हिरदे धार ।
ँगमन त्यागत जगत नबार ॥१०॥
रन मैं गुरू के चाहत बास ।
हो जहाँ निस दिन परम बिला ॥११॥
रूप गुरू धारूँ हिरदे ध्यन ।
ँग प्रीत बढ़ाऊँ ना ॥१२॥
करूँ स नि दिन किरत सम्हार ।
रम और हूँ झार ॥१३॥
हौंय जब राधास्वामी गुरू पर ।
दूया र टैं ब बंधन ॥१४॥
ब सूरत शब्द सम्हार ।
लखै फिर सद्गु र ॥१५॥

गगन चढ़ तिरबेनी न्हावे ।
भँवर लख सतपुर दरसावे ॥१६॥
अलख लख अगम का निरखै रूप ।
मिले पिता राधास्वामी कुल भूप ॥१७॥
आरती सन्मुख धार रही ।
चरन पर तन मन वार रही ॥१८॥

॥ शब्द ८३ ॥

खिले मेरे घट में भक्ती फूल ।
नाम हिये धारा गया जग भूल ॥१॥
प्रेम की क्यारी सींचत मन ।
चरन गुरु वारत तन मन धन ॥ २ ॥
बिरह की अगनी नित भड़काय ।
मोह जग कूड़ा दीन जलाय ॥ ३ ॥
बाढ़ सतसँग की राख सम्हार ।
दिये मैं पाँचो चोर निकार ॥ ४ ॥
प्रीत गुरु खिला हिये गुलज़ार ।
चुनत रहूँ सेवा कलियाँ सार ॥ ५ ॥
दया गुरु फूल और फल लागे ।
भाग मेरे जुग जुग के जागे ॥ ६ ॥

शब्द धुन अमृत भर पीया ।
दरस गुरु अचरज स लीया ॥ ७ ॥
सुरत मन चढ़त गगन की ओर ।
संख और मिरदँग डाला शोर ॥ ८ ॥
ररँग धुन गाज रही सुन में ।
भीँज रही सुरत भँवर धुन में ॥ ९ ॥
बीन धुन मधुर लगी प्यारी ।
गुरू पर जाऊँ बलिहारी ॥ १० ॥
देख सत पुर की लीला सार ।
गुरू का गाऊँ गुन हर बार ॥ ११ ॥
गई फिर अलख लोक पग धार ।
अगम का खोला जाकर द्वार ॥ १२ ॥
कहूँ क्या महिमाँ अगम दरबार ।
हुई मैं दासी चरन निहार ॥ १३ ॥
परे तिस लखिया राधास्वामी धाम ।
चरन में राधास्वामी दिया बिसाम ॥ १४ ॥
रही मैं नित उन आरत गाय ।
मेहर राधास्वामी छिन छिन पाय ॥ १५ ॥

॥ शब्द ८४ ॥

गुरू पै वार रही तन मन ।
होय रही चरन धूर सतजन ॥ १ ॥
प्रीत मेरी बढ़त रही दिन दि ।
मेहर गुरु पाय रही छिन २ ॥ २ ॥
रूप गुरू ँ रही पुन २ ।
बचन हिये धार रही चुन चुन ॥ ३ ॥
ंग गुरु चाहूँ बार र ।
रत रहूँ सेवा धर धर प्यार ॥ ४ ॥
दर बिन ड़प रहा न ार ।
लखूँ राधास्वा ा ि ि चोर ॥५॥
रैन दि ि ता ाहिँ ता ।
रत से गहूँ चरन गुरू ा ॥ ६ ॥
मिलैं जब राधास्वामी दरशन सार ।
लिपट रहूँ चरनन र प्यार ॥ ७ ॥
मगन हो गुरू ागे ाचूँ ।
उमँग ँग गुरू चरनन राचूँ ॥ ८ ॥
निरख बि फूल रहूँ मन ँ ।
समावत नहीं हर तन ँ ॥ ९ ॥

कहूँ क्या महिमाँ सतसँग सार ।
पिरेमी बैठे सोभा धार ॥१० ॥
विरह की अगनी रहे सुलगाय ।
दरस गुरु मोह रहे अधिकाय ॥ ११ ॥
प्रेम ी क्यारी सीचेँ नित्त ।
रत मन धुन रस भीजेँ नित ॥ १२ ॥
भोग जग तज कर हुये न्यारे ।
वार तन मन हुये गुरु प्यारे ॥ १३ ॥
भाग बड़ उनका क्या गाऊँ ।
दया पर गुरु के बल जाऊँ ॥ १४ ॥
हूँ मैं अरज़ी दोउ कर जोड़ ।
रन मैं लीजे मेरा चित स जोड़ ॥ १५ ॥
दूर बसूँ छबि उर धार रहूँ ।
चरन मैं लित लौ लाय रहूँ ॥ १६ ॥
रत से सुनूँ शब्द धुन सार ।
दरस गुरु ता ूँ गगन मँझार ॥ १७ ॥
दसम दर झाँकूँ अति कर प्यार ।
भँवर चढ़ पकड़ूँ बंसी धार ॥ १८ ॥
अमर पुर पहुँचूँ सतगुरु पास ।
करूँ धुन बीना संग बिलास ॥ १९ ॥

पुरुष का दरस अलख पुर पाय ।
अगम पुर सूरत लेउँ सजाय ॥ २० ॥
चरन मैं राधास्वामी के धाऊँ
प्रेम भर आरत उन गाऊँ ॥ २१ ॥

॥ शब्द ८५ ॥

चरन मैं राधास्वामी जब आई ।
प्रीत मेरे हिये अंतर छाई ॥ १ ॥
बचन सुन चित मैं आया भाव ।
मिला अब नर देही मैं दाव ॥ २ ॥
चरन गुरु भक्ति करूँ पूरी ।
जीत कर जाउँ घर मूरी ॥ ३ ॥
दया बिन क्या मुझ से बन आय ।
करैं राधास्वामी मोर सहाय ॥ ४ ॥
भेद मोहिं दीना घट का सार ।
पकड़ धुन जाउँ भौ के पार ॥ ५ ॥
मेहर की दृष्टी मोपर कीन ।
हुई मैं राधास्वामी चरन अधीन ॥ ६ ॥
सुरत मन झाँक रहे नभ द्वार ।
शब्द धुन सुनत रहे धर प्यार ॥ ७ ॥

मगन हुई दरशन जोत निहार।
छूट गए काम और क्रोध लबार ॥ ८॥
झाँक गुरु दरशन गगन मँझार।
सुन्न चढ़ न्हाई बेनी धार ॥ ९ ॥
महासुन घाटी चढ़ गुरु लार।
लगा धुन मुरली से अब प्यार ॥ १० ॥
परे तिस दरशन पुरुष निहार।
सुनत रहूँ मधुर बीन धुन सार ॥ ११ ॥
अलख चढ़ गई अगम के पार।
मिले राधास्वामी पुरुष अपार ॥ १२ ॥
कहूँ क्या सोभा धाम निहार।
प्रेम का खुला जहाँ भंडार ॥ १३ ॥
वेद नहिं जाने यह मत सार।
ज्ञान और जोग रहे थक वार ॥ १४ ॥
संत बिन कोई न उतरे पार।
दया बिन मिले न निज घर बार ॥ १५ ॥
जगाया राधास्वामी मेरा भाग।
रही मैं उन के चरनन लाग ॥ १६ ॥
सरन दे पूरा कीना काम।
जपूँ मैं नित नित राधास्वामी नाम ॥ १७ ॥

॥ शब्द ८६ ॥

उमँग मन गुरु चरनन मैं धाय ।
दरस कर लीना भाग जगाय ॥ १ ॥
सुने सतसँग मैं गुरु बचना ।
भाव जग तज धुन मैं रचना ॥ २ ॥
खेल माया का देख असार ।
बढ़त चरनन मैं निस दिन प्यार ॥ ३ ॥
प्रेम गुरु महिमाँ अति भारी ।
मिला जिन भाग जगा सारी ॥ ४ ॥
शब्द सँग लागी घट तारी ।
काल और करम रहे हारी ॥ ५ ॥
मेहर बिन नहिँ पावे यह दात ।
दया बिन नहिँ माने गुरु बात ॥ ६ ॥
हुआ मेरे मन मैं अस बिस्वास ।
करैं गुरु पूरन मेरी आस ॥ ७ ॥
नाम का तिनका हिये बसाय ।
लेहैं मुझ को भी चरन लगाय ॥ ८ ॥
काल मोहिँ दीना बहु झकझोल ।
गुरू मोहिँ दीनो चरन अडोल ॥ ९ ॥

हुए राधास्वामी दयाल सहाय ।
लिया मोहिं छिन छिन आप बचाय ॥१०॥
धरी मेरे हिरदे मैं परतीत ।
सिखाई अचरज भक्ती रीत ॥११॥
शब्द सँग लागा घट मैं प्यार ।
नाम राधास्वामी मोर अधार ॥१२॥
लिए गुरु मन और सुरत सुधार ।
बिरोधी दीने घट से टार ॥ १३ ॥
गाऊँ कस महिमाँ राधास्वामी सार ।
लिया मोहिं जग से आप निकार ॥१४॥
प्रेम अँग आरत उन गा ँ ।
चरन राधास्वामी नित ध्या ँ ॥१५॥
हुआ मोहिं सतसँगियन से प्यार ।
संग उन गाऊँ गुरु गुन सार ॥१६॥
चरन राधास्वामी हिये ब ॥
रहूँ मैं नित गुरु प्रेम जगाय ॥ १७ ॥

॥ शब्द ८७ ॥

प्रेम गुरु मगन आ मन मोर ।
दिये सब धंधे जग के ोड़ ॥१॥

पीसती मन को कर बारीक।
छोड़ती छिन छिन घर तारीक ॥२॥
गुरू बल पल पल हिरदे धार।
कूटती काम क्रोध अहँकार॥ ३ ॥
पकाती घट में गुरु परतीत।
जगाती छिन छिन नई नई प्रीत ॥४॥
साफ़ कर माजूँ घट बासन।
दरस गुरु करती तिल आसन ॥५॥
शब्द की डोरी गह कर हाथ।
अमीं जल भरूँ उमँग अँग साथ ॥६॥
नाम रस करती घट में पान।
सुरत मन रचिये तामें आन ॥७॥
बिरह की अगनी घट सुलगाय।
दरस गुरु करती त्रिकुटी धाय ॥८॥
बाज रही जहाँ नित धुन मिरदंग।
चमक रहा सूरज लाली रंग ॥ ९ ॥
सुन्न में खिली चाँदनी सेत।
ररँग धुन सुनती कर कर हेत ॥ १० ॥
गुरू सँग गई महासुन पार।
भँवर चढ़ सुनी बाँसरी सार॥ ११ ॥

सत्तपुर दरस पुरुष का लीन ।
मगन होय सुनी मधुर धुनबीन ॥ १२॥
अलख और अगम का पाया ज्ञान ।
चरन राधास्वामी परसे आन ॥ १३ ॥
करी वहाँ आरत उमँग उमंग ।
प्रेम का जहाँ नित बरसत रंग ॥ १४ ॥
कौन यह पावे घट गुरु ज्ञान ।
मेहर कर राधास्वामी दीना दान ॥१५॥
प्रेम गुरु चरनन आधारी ।
हुई मैं राधास्वामी बलिहारी ॥ १६ ॥
करी अब यह आरत पूरन ।
सुरत लगी प्यारे राधास्वामी चरनन॥१७॥

॥ शब्द ८८ ॥

शब्द गुरु आई मन परतीत ।
धार लई मन में भक्ती रीत ॥ १ ॥
खोज बहु कीना पिया घर का ।
मिला नहिं भेद मोहिं धुर का ॥ २ ॥
भाग से आया गुरु दरबार ।
मिला मोहिं राधास्वामी भेद अपार ॥३॥

सुरत और शब्द जुगत सारा ।
दई मोहिं गुरु ने कर प्यारा ॥ ४ ॥
उमँग कर लागा मन धुन में ।
लखा घट उँजियारा सुन में ॥ ५ ॥
निरखता गुरु ी ेहर अपार ।
ुरत मन चढ़ते सु झनकार ॥ ६ ॥
मन सेवत गुरु चरना ।
बिमल चित धावत गुरु सर ा ॥ ७ ॥
भाग पना क्या गाऊँ ।
दई गुरु चरनन में ठाऊँ ॥ ८ ॥
लिया मोहिं जग से तुरत उबार ।
रम और भरम दिए सब टार ॥ ९ ॥
जगत का परमारथ झूँठा ।
बँधे ब ाल करम खूँटा ॥ १० ॥
सतपद भेद नहीं पावें ।
जुगन जुग चौरासी धावें ॥ ११ ॥
बचन सतगुरु ा नहिं मानें ।
काल बस होय मन मत ठानें ॥ १२ ॥
बहुत मैं समझाया उनको ।
अभागी गहें नहिं घट धुन को ॥ १३ ॥

भाग मेरा पूरन अब जागा ।
चरन गुरु चित मेरा लागा ॥ १४ ॥
सुनूँ मैं घट में धुन झनकार ।
गाऊँ नित राधास्वामी महिमाँ सार ॥१५॥
गगन चढ़ गुरु आरत गाऊँ ।
सत्त पुर सत्तपुरुष ध्याऊँ ॥ १६ ॥
अलख और अगम लोक के पार ।
चरन राधास्वामी परसे सार ॥ १७ ॥
मिला मोहिं आनँद अति भारी ।
सुफल हुई नर देही सारी ॥ १८ ॥

॥ शब्द ८८ ॥

आरती राधास्वामी गाऊँगी ।
दरस पर बल बल जाऊँगी ॥ १ ॥
उमँग का थाल सजाऊँगी ।
प्रेम की जोत जगाऊँगी ॥ २ ॥
दीन दिल सन्मुख आऊँगी ।
प्रीत हिये माहिँ बसाऊँगी ॥ ३ ॥
ध्यान गुरु चरनन लाऊँगी ।
शब्द में सुरत लगाऊँगी ॥ ४ ॥

गुरू की महिमाँ गाऊँगी ।
　भेंट तन मन चढ़ाऊँगी ॥ ५ ॥
दया गुरु पार जाऊँगी ।
　जोत का दरशन पाऊँगी ॥ ६ ॥
गगन चढ़ शब्द जगाऊँगी ।
　ओंग धुन गरज सुनाऊँगी ॥ ७ ॥
सुन्न चढ़ बेनी न्हाऊँगी ।
　राग हंसन सँग गाऊँगी ॥ ८ ॥
महासुन पार जाऊँगी ।
　सोहँग मुरली बजाऊँगी ॥ ९ ॥
सत्तपुर बीन सुनाऊँगी ।
　पुरुष का दरशन पाऊँगी ॥ १० ॥
परे तिस सुरत चढ़ाऊँगी ।
　अलख लख अगम धियाऊँगी ॥११॥
दरस राधास्वामी पाऊँगी ।
　चरन गह सरन समाऊँगी॥ १२ ॥

॥ शब्द ९० ॥

चरन गुरु नित्त बढ़ाऊँ लाग ।
चेत कर रहूँ नैन गुरु ताक ॥ १ ॥

बचन सुन भटक सब छोड़ ।
रहूँ नित चरनन चित जोड़ ॥ २ ॥
संत : भेद मिला अति गूढ़ ।
जगत के सब देखे कूड़ ॥ ३ ॥
रहे सब माया मन के धार ।
करम ब बहे ौरासी धार ॥ ४ ॥
भाग मेरा जागा ति गंभीर ।
चरन राधास्वामी पाई धीर ॥ ५ ॥
लखी मैं गुरू की चरज ।
पाई घट में पूरी शांत ॥ ६ ॥
चढ़ाया ोपे चरज रंग ।
छिया तज जग जीवन संग ॥ ७ ॥
हुई मोहिं गु की दृ. परतीत ।
चरन लागी अचरज ी ॥ ८ ॥
लगा मोहिं गुरु मारग प्यारा ।
सुरत और शब्द भेद सारा ॥ ९ ॥
रूप गुरु धरता हिये ध्यान ।
सुमिरता अमीं र खान ॥ १० ॥
सुरत लाग रहे द्वार ।
झड़ जहाँ छिन २ त धार ॥ ११ ॥

सुनत रही घंटा संख पुकार।
गगन चढ़ झाँकत गुरु दरबार ॥ १२ ॥
दसम दर सुनती साराँग सार।
भँवर चढ़ लखा सेत उजियार ॥ १३ ॥
सत्तपुर सुनी बीन धुन जाय।
अलख और अगम में पहुँची धाय ॥१४॥
निरख राधास्वामी धाम उजार।
सुरत मेरी हुई अजब सरशार ॥ १५ ॥
उमँग की थाली कर में धार।
प्रेम अँग आरत गाऊँ सार ॥ १६ ॥
मेहर राधास्वामी कीनी आज।
हु ा मेरा सब बिध पूरन काज ॥ १७ ॥

॥ शब्द ८१ ॥

बाल बुध अब तक रहा अजान।
करी नहिं सतगुरु की पहिचान ॥ १ ॥
खैंच मोहिं लीना किरपा धार।
चरन में दीना प्रेम पियार ॥ २ ॥
लगें मोहिं सतसंगी प्यारे।
रहूँ नित हाज़िर गुरु द्वारे ॥ ३ ॥

मगन होय दर्शन गुरु करता ।
निरख कर छबि हिये में धरता ॥ ४ ॥
हरखता गुरु का देख बिलास ।
निरखता घट में अजब उजास ॥ ५ ॥
प्रीत गुरु हिरदे धार रहा ।
दया पर तन मन वार रहा ॥ ६ ॥
बढ़त मम हिरदे गुरु परतीत ।
जगा मेरा अचरज भाग अजीत ॥ ७ ॥
नित्त मैं सुमिरूँ राधास्वामी नाम ।
भोग जग दीखैं मोहिं सब खाम ॥ ८ ॥
जगत का देखा रंग असार ।
चरन में गुरु के धारा प्यार ॥ ९ ॥
बचन गुरु अमृत रूप निहार ।
सुनूँ गुहित चित से उर धार ॥ १० ॥
करूँ मैं नित सुरत शब्द की तोल ।
मिला मोहिं घट भेद मोल ॥११॥
संत गत नहिं जाने कोइ जन ।
धार रहे माया संग लगन ॥ १२ ॥
भरम रहे सब जिव माया संग ।
कुमत बस हिँ धारें गुरु संग ॥ १३ ॥

सुमत का करैं न नेक बिचार।
कर्म बस बहैं चौरासी धार ॥ १४ ॥
जीव का अपने हित नहिं लाय।
भाव भय जग का रहा समाय ॥ १५ ॥
संत का सतसँग नहिं करते।
नहीं गुरु निंद्या से डरते ॥ १६ ॥
कौन कहे इन को अब समझाय।
बचन गुरु मन में नहीं समाय ॥ १७ ॥
हुई गुरु किरपा मोपर आज।
दया कर दीना भक्ती साज ॥ १८ ॥
प्रेम अँग आरत राधास्वामी गाय।
रहूँ नित राधास्वामी सरन समाय ॥१९॥

॥ शब्द ९२ ॥

मेरे मन छाय रहा गुरु प्रेम।
छोड़ दिये करम धरम और नेम ॥ १ ॥
निरख छबि अचरज हुआ भारी।
हुई गुरु दर्शन मतवारी ॥ २ ॥
मेहर की दृष्टी गुरु डारी।
सुद्ध बुध भूल गई सारी ॥ ३ ॥

चरन में उपजा गहिरा प्यार ।
दरस र रही मैं सन्मुख ठाड़ ॥४॥
करम का उतरा सगला भार ।
मोह और माया बैठे हार ॥५॥
भेद मोहिं दीना किरपा धार ।
हुआ मोहिं घट धुन संग पियार ॥६॥
सुरत रहे निस दिन रस पीती ।
गुरू ल काल कर्म जीती ॥७॥
ब्द की झड़ियाँ लाग रहीं ।
सुरत न भीँजत जाग रहीं ।८॥
दिखा । गुरु ने अचरज खेल ।
सुरत मन रहे शब्द रस झेल ॥९॥
चलाई सुरत शब्द की रेल ।
ाल ोर कर्म दिए सब पेल ॥१०॥
टाया जग का भाव असार ।
ि टा ि ज से हंकार ॥११॥
हूँ राधा मी हिमाँ ॥
गई ब मेरी दूर ॥१२॥
उमँग हू सन्मु ।
कहूँ उन रत ँ ॥१३॥

खड़ी हुई सन्मुख दृष्टी जोड़ ।
शब्द की बाजी धुन घन घोर ॥ १४ ॥
हुए परसन्न राधास्वामी दयाल ।
मेहर कर कीना मोहिं निहाल ॥ १५ ॥

॥ शब्द ६३ ॥

प्रीत मेरी लागी गुरु चरना ।
धार ई मन में गुरु सरना ॥ १ ॥
जगत का देख मलिन ब्योहार ।
हु मन मेरा अति बेज़ार ॥ २ ॥
शल कहिँ दीखे नहिँ जग माहिँ ।
धाय र पकड़े सतगुरु पायँ ॥ ३ ॥
बिना उन रक्ष नहिँ संसार ।
गहो उन चरनन ओट सम्हार ॥४॥
दया कर लीना मोहिँ अपनाय
दिया मेरा सोया भाग जगाय ॥ ५ ॥
चरन दीना गहिरा प्यार ।
उतारा कर्म भर्म । भार ॥६॥
सुनाए मुझको निज बचना ।
प्रेम रँग मन सूरत सजना ॥ ७ ॥

भेद मारग का दीन बताय।
शब्द सँग सूरत लीन जगाय ॥ ८ ॥
करूँ मैं नित अभ्यास सम्हार ।
गाऊँ गुन राधास्वामी बारम्बार ॥ ९ ॥
काल से लीना सहज छुड़ाय ।
दिया निज घर का भेद जनाय ॥ १० ॥
कौन यह जाने भेद अपार ।
फँसे सब ल के जाल ॥ ११ ॥
मेहर मोपै राधास्वामी की भारी ।
किया मेरा जम से टकारी ॥ १२ ॥
शब्द सँग करत रहूँ नित केल ।
रहूँ नित घट में आनँद झेल ॥ १३ ॥
प्रेम सँग आरत राधास्वामी धार ।
रहूँ मैं अचरज रूप निहार ॥ १४ ॥
चरन में जोड़ रहूँ नित चित्त ।
गाऊँ मैं राधास्वामी महिमाँ नित्त ॥ १५ ॥

॥ शब्द ६४ ॥

कहैं सब महिमाँ संत पुकार ।
बिना उन नहिं पावे सच यार ॥ १ ॥

सुरत सम्भ धुर घर से आवें ।
भेद कुल मालिक का गावें ॥ २ ॥
जुगत चलने की बतलावें ।
घाट और बाटी समझावें ॥ ३ ॥
जगा जिस जिव का गहिरा भाग ।
मिला वाहि संत चरन अनुराग ॥ ४ ॥
करी जिन संत बचन परतीत ।
गया वही निज घर भौजल जीत ॥ ५ ॥
मिले मोहिं सतगुरु संत दयाल ।
काट दिए फंदे जम और काल ॥ ६ ॥
टेक पिछलों की दीन मिटाय ।
सरन गुरु महिमाँ चित्त बसाय ॥ ७ ॥
मेहर से लीना मोहिं अपनाय ।
सुरत मन दोनों दीन जगाय ॥ ८ ॥
शब्द की बख्शी घट परतीत ।
चरन में दीनी अचरज प्रीत ॥ ९ ॥
रहूँ मैं नित गुरु चरन सम्हार ।
गाऊँ गुन राधास्वामी बारम्बार ॥ १० ॥
करूँ मैं आरत उनकी सार ।
धरूँ गुरु सन्मुख तन मन वार ॥ ११ ॥

दूत सब मारूँ घर   र सेल ।
धक्कड़ मन राखूँ बाँध नकेल ॥ ७ ॥
काल ने डाली बहुत झमेल ।
गुरू बल दीना वाहि ढकेल ॥ ८ ॥
चढ़त   व सुन में सूरत बेल ।
करत वहाँ हंसन संग कुलेल ॥ ९ ॥
सूँघती मलया इतर फुलेल ।
सत्तपद पहुँची होय अकेल ॥ १० ॥
चढ़ाई ऊँचे को फिर ठेल ।
चरन राधास्वामी परसे हेल ॥ ११ ॥

॥ शब्द ९६ ॥

आस गुरु चरनन धार रही ।
आरती अद्भुत साज लई ॥ १ ॥
चित्त में छाया निज बैराग ।
चरन गुरु बढ़ता नित अनुराग ॥ २ ॥
चाह सतसँग की मन में धार ।
बचन नित सुनती होय हुशियार ॥ ३ ॥
चित से घटती नित बिपरीत ।
चरन गुरु बढ़ती नित परतीत ॥ ४ ॥

शब्द की बढ़ती घट में साख।
चढ़ाती सूरत धुन में राख ॥ ५ ॥
सहसदल निरखा जोत उजार।
सुनत रही घंटा संख पुकार ॥ ६ ॥
गगन में बाजी धुन मिरदंग।
चरन गुरु हिरदे लागा रंग ॥ ७ ॥
सुन्न चढ़ सुनती सा रँग सार।
किया जाय हंसन संग पियार ॥ ८ ॥
भंवर चढ़ सुना शब्द सोहंग।
सत्तपुर पहुँची धार उमंग ॥ ९ ॥
अलखपुर गई हिये धर प्यार।
अगम गढ़ चढ़ती उमँग सम्हार ॥ १० ॥
दरस राधास्वामी पाया सार।
सरन गह बैठी काज सँवार ॥ ११ ॥

॥ शब्द ९७ ॥

करी राधास्वामी मेहर नई।
उमँग घट अंतर जाग रही ॥ १ ॥
उठत सेवा की नई तरंग।
चरन गुरु दिन दिन बाढ़त रंग ॥ २ ॥

बिबिध सब सामाँ लाई साज ।
करूँ गुरु रत दभुत ॥ ३ ॥
जुड़ा हंसन जहाँ समाज ।
होत ब व । पूरन ॥ ४ ॥
दया राधास्वामी हिये चीन्ह ।
गाव ी हिमाँ होय लौ ीन ॥ ५ ॥
देख सोभा हरख ।
कहत धन राधास्वामी ॥६॥
मेहर बि से ।
दिया मेरा राधास्वामी भाग गाय ॥७॥
याद गुरु कर रहूँ हरबार ।
ध्या उन धरत रहूँ र प्यार ॥ ८ ॥
प्रीत गुरु डोर बँधी ।
लाग रहा गुरु रनन से ॥ ९ ॥
देख मोहिं दीन ीन ।
रखा मेरे ि र पर गुरु ने हाथ ॥ १० ॥
हिये परतीत धरी ।
मान मद माया हरी ॥ ११ ॥
कहाँ राधास्वामी गाऊँ ।
दई मोहिं बरनन ॥१२॥

करूँ बिनती रनन ।
देव मोहि धुन रस तर में ॥ १३ ॥
सुनूँ घट अनहद घोर ।
शब्द रस पि सुरत जोड़ ॥ १४ ॥
खोल तिल पट ो दे बहार ।
सहसदल निर जोत उजार ॥ १५ ॥
बंक घ त्रिकुटी जा ।
दरस गुरु निर हरखाऊँ ॥ १६ ॥
सुन्न च तिरबेनी न्हा ।
दाग़ मल के धुलवाऊँ ॥ १७ ॥
महासुन घाटी च गुरु बल ।
भँवर का शब्द सुनूँ चढ़ चल ॥ १८ ॥
सत्तपुर सुनूँ बीन न त ।
पुर्ष के चरनन लाऊँ ध्यान ॥ १९ ॥
अल पहुँचूँ य ।
चरन राध वामी पर ज ॥ २० ॥
मेहर से पा यह निज धा ।
करै मेरी सूरत वहाँ बिस्राम ॥ २१ ॥

॥ शब्द ९८ ॥

प्रीत गुरु अब मन में जागी ।
सुरत हुई धुन रस अनुरागी ॥ १ ॥
बहुत दिन जग में रहा भरमान ।
न सूझी जीव की लाभ और हान ॥ २ ॥
सुना जब गुरु संगत का भेद ।
धरी मन दरशन ी उम्मेद ॥ ३ ॥
साध ँग ाया गुरु दरबार ।
होत जहाँ निस दिन जीव उबार ॥ ४ ॥
दरस गु जागा मन में प्यार ।
रहा गुरु चरनन निश्चय धार ॥ ५ ॥
शब्द गुरु धारा मन बिस्वास ।
त्याग दई जग भोगन की ास ॥ ६ ॥
करूँ गुरु सेवा सहित हुलास ।
दया गुरु पाऊँ चरन निवा ॥ ७ ॥
लगैं गुरु सतसंगी प्यारे ।
प्रीत उन रहूँ मन में धारे ॥ ८ ॥
बचन गुरु सुन हरखाता ।
हुआ मन चरन सरन राता ॥ ९ ॥

भूल और भरम नि ाल दिये ।
चरन गुरु दृढ़ र प लिये ॥ १० ॥
मौज पर दीन्हे कारज ोड़ ।
शब्द सँग रहूँ सुरत को जोड़ ॥ ११ ॥
दया राधा मी परख रही ।
ब्द धुन घट में नत रही ॥ १२ ॥
दया गुरु चढ़ूँ गगन ो धाय ।
धुन घंट मृदंग बजाय ॥ १३ ॥
सुन्न धुन कर चलूँ ागे ।
बाँ री बीन जहाँ ाजे ॥ १४ ॥
चरन फिर सत्तपुरुष के परस ।
ल और अगम पाऊँ दरस ॥१५॥
लिपट रहूँ राधास्वामी चरनन धाय
नाम राधास्वामी छिन २ गाय ॥ १६ ॥

॥ शब्द ९९ ॥

प्रीत गुरु धार रहा मन माहिँ ।
काल बल जार रहा तन माहिँ ॥ १ ॥
पकड़ता गुरु के चरन सम्हार ।
रगड़ता काम क्रोध मन मार ॥ २ ॥

शब्द धुन सुनता सूरत साथ ।
गगन पर चढ़ता गह गुरु हाथ ॥ ३ ॥
धुन नभ में बाज रही ।
सिरदँग गाज रही ॥ ४ ॥
दर गुरु पाय मगन होता ।
काल और करम रहा सोता ॥ ५ ॥
मल मल धोए भाड़ ।
नत रहा सारंगी धुन सार ॥ ६ ॥
खिर चढ़ गया महासुन पार ।
गुरु त महा काल रहा हार ॥ ७ ॥
भँवर चढ़ निरखा अजब बिलास ।
रत हुई सतगुरु चरनन दास ॥ ८ ॥
धाय र गई सतगुरु दरबार ।
किया धुन बीना संग पियार ॥ ९ ॥
हुए परसन सतपुरुष दयाल ।
भेद दे अधर चढ़ाया हाल ॥ १० ॥
पुर दरश पुरुष कीन्हा ।
धर चढ़ भेद अगम लीन्हा ॥ ११ ॥
ामी धाम निशाना देख ।
रही मैं राधास्वामी दरशन पेख ॥ १२ ॥

कहूँ क्या महिमाँ हैरत धाम ।
गाऊँ मैं फिर २ राधास्वामी नाम ॥१३॥
सँत गत ऊँचे से ऊँची ।
सुरत नहिँ कोई वहाँ पहुँची ॥ १४ ॥
गही जिन संत चरन की ओट ।
वही जन डार करम की पोट ॥ १५ ॥
मेहर से पहुँचे राधास्वामी धाम ।
किया जाय चरनन में बिस्राम ॥ १६ ॥
लिया मोहिँ सतगुरु चरन लगाय ।
भाग मेरा भी दिया जगाय ॥ १७ ॥
कराया सुरत शब्द अभ्यास ।
दिखाया घट में अजब बिलास ॥ १८ ॥
भजूँ नित राधास्वामी नाम अपार ।
मिला मोहिँ चरन अमीँ आधार ॥१९॥

॥ शब्द १०० ॥

देख गुरु सतसँग अजब बहार ।
खिला मेरे हिये भक्ती गुलज़ार ॥ १ ॥
दरस रस सींचूँ घट क्यारी ।
शब्द धुन फूली फुलवारी ॥ २ ॥

लाग रहा गुरु चरनन में चित्त ।
प्रेम गुरु पौद ढ़ा ँ नित्त ॥ ३ ॥
सुरत मन चढ़ते फोड़ ।
सहसदल कँवल निरख पर ाश ॥ ४ ॥
परे ति फूला सूरज ु ।
चरन गुरु परसे जा सन्मुख ॥ ५ ॥
चाँदनी फूल खिला ुन ँ ।
ुरत रही लिपट ररँग धुन में ॥ ६ ॥
महा ु सुनी गुप्त धुन चार ।
भँवर चढ़ मिली सोहँग धुन सार ॥ ७ ॥
बीन धुन पाई सतपुर जाय ।
पुरुष ा दरशान ि ा बना ॥ ८ ॥
लख ल म पुरुष को हेर ।
पाई राधा मी चरनन मेहर ॥ ९ ॥
करी वहाँ ारत बिबिध प्र ार ।
मिला राधा ामी चरन धर ॥ १० ॥

॥ शब्द १०१ ॥

जगत तज गुरु चरनन ँ भाज ।
दास अब लाया ारत सा ँ ॥ १ ॥

प्र.त की थाली साज सजाय।
जोत दृढ़ परतीत लीन जगाय॥ २॥
शब्द धुन घं ा संख बजाय।
हंस सब जुड़ मिल ारत गाय॥३॥
परम गुरु राधास्वामी हुए दयाल।
मेहर र लीना मोहिं सम्हाल॥ ४॥
सरन दे लीना मोहिं अपनाय।
भेद निज घर का दीन बताय॥५॥
धार रहूँ ि मन में निज नाम।
रैं मेरा एक दिन पूरा काम॥ ६॥
होयँ जो राधा ामी गुरू दयाल।
देयँ मोहिं भोग जोग रस सार॥ ७॥
रत रहे निरमल चरन सम्हार।
शब्द धुन सुनत रहे धर प्यार॥ ८॥
मोह जग नहिं ब्यापे मोहिं ाय।
रहूँ नित राधा ामी के गुन गाय॥ ९॥
दीन होय गुरु दर झाँक रहा।
मेहर की बख़्शिश माँग रहा॥ १०॥
बाल सम सरना लीनी आय।
देव राधास्वामी काज बनाय॥ ११॥

॥ शब्द १०२ ॥

चरन गुरु हिये में भक्ति जगाय।
शब्द गुरु सन्मुख आई धाय ॥ १ ॥
उठी धुन घट में घोरमघोर।
घटा अब काल करम का ज़ोर ॥ २ ॥
काम और लोभ रहे मुरझाय।
अहँग और क्रोध रहे शरमाय ॥ ३ ॥
दया गुरु हुआ काल बल छीन।
थाक रहे माया और गुन तीन ॥ ४ ॥
दीनता अब नित बढ़ती जाय।
मान और मोह नहीं ठहराय ॥ ५ ॥
ईरखा चित से डार दई।
ममत और माया बिसर गई ॥ ६ ॥
प्रेम गुरु हिरदे बढ़ता सार।
सरन दृढ़ करता तन मन वार ॥ ७ ॥
सुरत धुन संग अमीं रस लेत।
मेहर गुरु दाता छिन छिन देत ॥ ८ ॥
सुनत रही घंटा संख पुकार।
गगन में होती गरज अपार ॥ ९ ॥

मैं डारी सारँग धूम ।
भँवर धुन मुरली न भूम ॥ १० ॥
अमरपुर सूरत हो गई सार ।
किया फिर लख से प्यार ॥११॥
परे चढ़ दर राधास्वामी पाय ।
भाग जुग जुग के लीन जगाय ॥ १२ ॥
आरती द्रुत लीनी ज ।
किया राधा मी पूर ॥ १३ ॥
रहा जग में नीच नकार ।
मेहर से राधास्वामी कीन उधार ॥१४॥
प्रेम ग सेव करूँ दिन रात ।
दई राधा मी अचरज दात ॥ १५ ॥
नित्त गुरु महिमाँ गाय रहूँ ।
चरन राधास्वामी ध्या रहूँ ॥ १६ ॥

॥ शब्द १०३ ॥

रत प्यारी गुरु गा रही ।
चरन प्रीत ढ़ रही ॥ १ ॥
उमँग कर गुरु से करती ।
भाव ग हिये में धरती ॥ २ ॥

बचन गुरु सुनती चित्त म्हार।
दरश गुरु रती नैन निहार ॥ ३ ॥
रन गुरु देखत नि बिला ।
हिये में नित प्रति ब हुलास ॥ ४ ॥
उठावत मन ि उचंग।
हूँ गुरु ारत उमँग उमंग ॥ ५ ॥
भाव से ा ारती की ।
हुई गुरु रनन दीन धी ॥ ६ ॥
गावती ारत सन्मु ा ।
हुए रा ाि दयाल सहाय ॥ ७ ॥

— :o: —

॥ शब्द १०४ ॥

गुरू के सन् ड़ा ।
पिरेमी प्यारा उमँग भरा ॥ १ ॥
खेलता गुरु ागे र प्यार।
रूप गुरु धरता हिये मँझार ॥ २ ॥
गावता राधास्वा ाि ना हार।
धावता सेवा ाे हर बार ॥ ३ ॥
सरन गुरु हित कर धार लई।
चरन राधा ाि ज ड़ गही ॥ ४ ॥

संग गुरु चाहत चित से नित्त ।
भक्ति गुरु धारत हिये कर हित्त ॥ ५ ॥
दरश गुरू करता दृष्टी जोड़ ।
ब्द धुन सुनता घट में घोर ॥ ६ ॥
प्रेम अँग ारत गुरू गाता ।
रन राधास्वामी हिये ध्याता ॥ ७ ॥

॥ शब्द १०५ ॥

धरी हिये राधा ामी मत परतीत ।
पालती न न गुरु ी प्रीत ॥ १ ॥
बचन गुरु हिरदे में धारे ।
करम ौर धरम तजे सारे ॥ २ ॥
इष्ट राधास्वामी दृढ़ ीना ।
देव ौर देवी तज दीना ॥ ३ ॥
भाव सतसँग का बढ़ता नित्त ।
चरन में गुरु के रहता चित्त ॥ ४ ॥
सेव गुरु रती तन मन से ।
प्रीत नित बढ़ती सत जन से ॥ ५ ॥
लिया मैं गुरु उपदेश म्हार ।
नेम से करती भजन सुधार ॥ ६ ॥

शब्द सँग जोड़ूँ मन सूरत ।
निरखती नभ चढ़ गुरू मूरत ॥ ७ ॥
सुन्न चढ़ तिरबेनी न्हाती ।
रागनी हंस ँग गाती ॥ ८ ॥
गुरू सँग धरा ोहंग ६ ान ।
महासुन पार ि या मैदा ॥ ९ ॥
गुफ़ा में सूरत लाग रही ।
सरस धुन मुरली बाज रही ॥ १० ॥
अधर चढ़ दरशन सतपुर्ष लीन ।
बाज रही जहाँ मधुर धु बीन ॥ ११ ॥
अलख लख गम को ि रखा जाय ।
रही में राधा ामी चर स ाय ॥१२॥

॥ शब्द १०६ ॥

जगत में खोज किया बहु भाँत ।
न पाई मैंने घट में ांत ॥ १ ॥
ग़ौर र देखा जग का हाल ।
फँसे सब र भरम के जा ॥ २ ॥
फैल रहे जग में मते ने ।
धार रहे थो इष्ट ी टेक ॥ ३ ॥

भेद कोइ घर का नहिँ जाने ।
भरम बस सीख नहीं माने ॥ ४ ॥
मान में खप रहे पँडित भेख ।
मं में बँध रहे मुल्ला शेख़ ॥ ५ ॥
भाग मेरा जागा तब निदान ।
मिला मैं राधास्वामी संगत आन ॥ ६ ॥
सुनी मैं महिमाँ अचरज बोल ।
री मैं राधा मी मत की तोल ॥ ७ ॥
भरम और सय उठ भागे ।
विरह नुराग हिये जागे ॥ ८ ॥
पता निज मा का पाया ।
भेद निज घर दरसाया ॥ ९ ॥
म में ाई भ ी रीत ।
ब्द ी धारी न परतीत ॥ १० ॥
रत पाया लखाव ।
ि सुन गुरु की ा भाव ॥ ११ ॥
हूँ महिमाँ सतसँग सार ।
भरम ौर सय दीने र ॥ १२ ॥
ीत नित बढ़ती गुरु र ।
धार ई मन में गुरु रना ॥ १३ ॥

समझ मैं मन में अस धारी ।
संत बिन जाय न कोइ पारी ॥ १४ ॥
बिना उन सरन न उतरे पार ।
शब्द बिन होय न कभी उधार ॥ १५ ॥
सराहूँ दि न ि न भाग अपना ।
मिला मोहिं सुरत शब्द गहना ॥ १६ ॥
हुआ मेरे हिरदे में उजियार ।
दया राधास्वामी कीन्ह अपार ॥ १७ ॥
पकड़ धुन चढ़ता नभ की ओर ।
जोत लख सुनता अनहद घोर ॥ १८ ॥
धुन न र चढ़ी ागे ।
गुफा में जहाँ सोहँग जागे ॥ १९ ॥
त्तपुर दरश पुरुष कीन्हा ।
परे तिस अलख अगम चीन्हा ॥ २० ॥
वहाँ से लखिया राधास्वामी धाम ।
मिला ब निज घर ि या बिस्राम ॥२१॥

॥ शब्द १०७ ॥

बाँध राधास्वामी नाम हथियार ।
जूझता मन से बारम्बार ॥ १ ॥

सरन गुरु लीनी ढाल सम्हार ।
काल के दीने बिघन निकार ॥ २ ॥
प्रीत चरनन में बढ़ती नित्त ।
लगा गुरु सेवा में अब चित्त ॥ ३ ॥
बचन गुरु उमँग सहित सुनता ।
मनन कर हिरदे में गुनता ॥ ४ ॥
छाँट कर लिया निज नाम सम्हार ।
हिये में हुआ गुरु शब्द अधार ॥ ५ ॥
दया कर दीना गुरु उपदेश ।
दूर हुए घट से काल कलेश ॥ ६ ॥
सुरत मन धुन सँग प्रीत लगाय ।
रहे निज घट में नभ पर छाय ॥ ७ ॥
पकड़ धुन चढ़ते गगन मँझार ।
गुरू सँग कीना बहुत पियार ॥ ८ ॥
सुन्न में अक्षर पुरुष मिलाप ।
किया और पाया अपना आप ॥ ९ ॥
लगी फिर निहअक्षर से डोर ।
भँवर चढ़ सुना सोहंगम शोर ॥ १० ॥
अमरपुर बाज रही धुन बीन ।
पुरुष का दरशन अद्भुत कीन ॥ ११ ॥

गई फिर अलख अगम के पार ।
चरन राधास्वामी परसे सार ॥ १२ ॥
आरती अद्भुत साज लई ।
चरन राधास्वामी पकड़ रही ॥ १३ ॥

॥ शब्द १०७ ॥

जीव सब मोहे माया रंग ।
नहीं कोइ जाने सतसँग ढंग ॥ १ ॥
करम और धरम रहे लिपटाय ।
बुद्धि और विद्या संग खपाय ॥ २ ॥
ख़बर सत परमारथ नहिं पाय ।
भरम कर तीरथ बरत पचाय ॥ ३ ॥
मेरे मन बिरह उठी भारी ।
ाग जग लागे सब खारी ॥ ४ ॥
बि ल मन खोज रहा बन माहिं ।
पाऊँ कस दरशन सतपुर्ष पायँ ॥ ५ ॥
परम गुरु राधास्वामी दीन दयाल ।
दया कर लीना मोहिं सम्हाल ॥ ६ ॥
मेहर कर लिया सतसंग मिलाय ।
भाग मेरा सोता दीन जगाय ॥ ७ ॥

भेद निज मारग । मोहिं दीन ।
सुरत मन हुए चरन लौ लीन ॥ ८ ॥
हज मोहिं जग से न्यारा कीन ।
प्रीत मेरे हिरदे में धर दीन ॥ ९ ॥
ि खाई मुझको भक्ती रीत ।
शब्द ी धारी घट परतीत ॥ १० ॥
सुनूँ मैं घट में नहद घोर ।
रम के डाले बंधन तोड़ ॥ ११ ॥
सहसदल लखता जोत उजार ।
गगन धुन ी ँग ंग पियार ॥ १२ ॥
सुन्न धुन ारँग सार लई ।
गुफ़ा सुरली सु र ी ॥ १३ ॥
मरपुर दरश पुरुष पाया ।
बीन धुन सुन अति हरखाया ॥ १४ ॥
अलखपुर वहाँ से पहुँचा धाय ।
अगमपुर लीना पुर्ष रिझाय ॥ १५ ॥
आरती त अब ाजी ।
सुरत राधास्वामी चरनन राची ॥ १६ ॥
लिया मोहिं राधास्व ी चरन लगाय ।
हा हूँ महिमाँ बरनी न जाय ॥ १७ ॥

॥ शब्द १०९ ॥

प्रीत गुरु चरन लगी भारी ।
आस जग त्याग दई ारी ॥ १ ॥
बहुत दिन जग में भट ा खाय ।
रहा भरमन सँग अधि भुलाय ॥ २ ॥
मिला जब तसँग पाया भेद ।
मिटे तब काल करम के खेद ॥ ३ ॥
सुरत मन पकड़ ब्द की धार ।
देखते घट में नित्त बहार ॥ ४ ॥
मेहर राधास्वामी क्या बरनूँ ।
दई मोहिं चरनन में ठाऊँ ॥ ५ ॥
प्रीत नित बढ़ती गुरु के संग ।
सरन दृढ़ करती उमँग उमंग ॥ ६ ॥
शब्द की नित नई महिमाँ गाय ।
सुरत मन चढ़ते नभ पर धाय ॥ ७ ॥
जोत लख सुनता घंटा सार ।
 धर चढ़ निरखा ूर उजार ॥ ८ ॥
दसम दर खोला बजर कपाट ।
चन्द्र लख निरखा चौ सपाट ॥ ९ ॥

रीत जग अब मोहिँ नहिँ भावे।
नहीँ मन भोगन ँग धावे ॥५॥
करम और भरम उड़ा दिये।
बरत और तीरथ बहाय दिये ॥६॥
भेख ौर पंडित मा भरे।
जगत गुरू चित से दूर रे ॥७॥
था पंडौँ की क़िस्सा जान।
नूँ नहिँ कबहीँ दे र कान ॥८॥
देव ौर देवी नहिँ मा ूँ।
राम और कृष्ण तुच्छ जानूँ ॥९॥
मेरे घर लागा गुरू रंग।
तजूँ नहिँ कबहीँ उनका संग ॥१०॥
सुनूँ मैं चित से गुरू उपदे ।
गाऊँ नित महिमा राधास्वा ी दे ॥११॥
नाम राधास्वामी नित गाऊँ।
चरन राधास्वामी ि त ध्या ँ ॥१२॥
सुरत ौर शब्द जुगत नि सार।
कमाऊँ निस दिन हिये धर प्यार ॥१३॥
मेहर गुरु ुनती धुन धन ार।
निरखनी नभ चढ़ जोत उजार ॥१४॥

अधर चढ़ परसे गुरू चरना ।
सुन्न में जाय सुरत मरना ॥ १५ ॥
महासुन पार गई गुरू संग ।
भँवर चढ़ सुनती धुन सोहंग ॥ १६ ॥
अमरपुर दरशन सतपुर्ष कीन ।
बाज रही मधुर जहाँ धुन बीन ॥१७॥
अलख पुर जाकर खोला द्वार ।
अधर चढ़ देखा अगम पसार ॥ १८ ॥
परे तिस राधास्वामी धाम दिखाय ।
नहीं कु　　चरज कहा न जाय ॥१९॥
प्रेम अँग आरत यहाँ कीनी ।
सुरत हुई चरनन में लीनी ॥ २० ॥
मेहर राधास्वामी पाई आज ।
किया मेरा　　ब बिधि पूरन काज ॥२१॥

॥ शब्द १११ ॥

रहा मैं बहु दिन निपट अजान ।
　री नहिं सतगुरू की पहिचान ॥ १ ॥
लिया मोहिं आपहि खैंच बुलाय ।
दया　　र लीना चरन लगाय ॥ २ ॥

करी सोपै राधास्वामी द ा पार ।
सिखाया ुरत ब्द मत ार ॥ ३ ॥
बुलाया चरनन मैं हर ार ।
टिकाया सतसँग मैं कर ार ॥ ४ ॥
करम और भरम किए दूर ।
प्रीत दई चरनन में भरपूर ॥ ५ ॥
मेहर मोपै अन्तर मैं ीी ।
सुरत हुई शब्द रस भी ी ॥ ६ ॥
बढ़त मेरी चरनन मैं परती ।
जागती दिन दिन नई नई प्रीत ॥ ७ ॥
रत रहुँ बिनती राधा ा ी पा ।
दि ाओ घट मैं परम बिला ॥ ८ ॥
सुरत मन प ड़ ब्द की डोर ।
चढ़ँ ब घट मैं परदा फोड़ ॥ ९ ॥
हसदल लखँ जोत उजि ार ।
सुनँ जहँ घंटा ख पु ार ॥ १० ॥
निरख त्रिकुटी मैं गुरु मूरत ।
चढ़ाऊँ सुन मैं फिर सूरत ॥ ११ ॥
होय तन मन से ुरत ेल ।
करत जाय हंसन संग ुलेल ॥ १२ ॥

धार हिये सतगुरु चरनन आस ।
भँवर चढ़ पाय सपुर बास ॥ १३ ॥
लख और अगम का देख बिलास ।
करे राधास्वामी धाम निवास ॥ १४ ॥
दीन दिल आरत राधा ामी धार ।
ीँ र पीऊँ जाऊँ बलिहार ॥ १५ ॥

॥ शब्द ११२ ॥

दरस गुरु तडप रहा मन मोर ।
करूँ कस आरत सन्मुख जोड़ ॥ १ ॥
सुनत गुरु महिमाँ उपजा भाव ।
देख गुरु लीला बाढ़ा चाव ॥ २ ॥
पिरेमी जन ी हालत देख ।
हिये ँ उपजा सहज बिबे ॥ ३ ॥
बचन उन ुन ुन मोहित मन ।
प्रीत ब बाढ़त गुरु चरनन ॥ ४ ॥
काल बहु अट लगाय रहा ।
रम जग माहिँ भुलाय रहा ॥ ५ ॥
भाव जग हिये में बसाय रही ।
ाज जग परदा लाय रही ॥ ६ ॥

जतन .छु मोर पेश नहिं जाय।
मेहर बिन क्या मुझ से बन आय॥ ७॥
रन में बिन ढूँ हर बार।
लेव मुझको भी बेग सम्हार॥ ८॥
द । ब तर कीजे।
चरन र मोहिं घट में दीजे॥ ९॥
सुरत मन निरमल होय चालें।
प्रीत राधास्वामी ि न छिन पालें॥ १०॥
बड़ाई पर ।रूथ दिखलाय।
दास को ली रन लगाय॥ ११॥
ट रहा इन्द्री भोगन ।
भट रही हाँ तहाँ भरम में॥ १२॥
लेव ब ोज ोड़।
ीत करे रन चि जो ॥ १३॥
सब विध पूरा का ।
गाऊँ ि महि ाँ राधास्वामी ना ॥ १४॥
हत ेरी नइया भौ की र।
पर गुरु खे लगावो पार॥ १५॥
सुनो ेरी बिनती गुरु दातार।
लेव .ब आपने ीव सम्हार॥ १६॥

होत अब देरहि देर ज ।
राखिये सरन पड़े ी लाज ॥ १७ ॥
प्रेम का किनका बख़्शिश देव ।
सुरत मन चरनन में हर लेव ॥ १८ ॥
उमँग कर रत चरनन धार ।
जाऊँ राधास्वामी पै बलिहार ॥ १९ ॥

॥ शब्द ११३ ॥

लगी मेरी गुरु गत प्रीती ।
त्याग दई मन से जग रीती ॥ १ ॥
सुने सतसँग बच मो ।
चरन गुरु पकड़े सहज डोल ॥ २ ॥
त मत पाया गहिर गँभीर ।
दया कर गुरू बँधाई धीर ॥ ३ ॥
देव और देवी रहे नीचे ।
ब्रह्म ैर ाया रहे बीचे ॥ ४ ॥
देस संत अति ।
मेहर बिन कोई न वहाँ पहुँचा ॥ ५ ॥
शब्द ी डोरी लौ लावे ।
ोई जन निज घर को धावे ॥ ६ ॥

जगाया गुरु ने मेरा भाग ।
चरन दीना मोहिँ नुराग ॥ ७ ॥
रत और ब्द दिया उपदे ।
चलो घर तज र जग लेश ॥ ८ ॥
बचन गुरु धार लिया मनमें ।
करूँ नित यही जतन त ॥ ९ ॥
दया से निरमलता आवे ।
चित्त ी चंचलता जावे ॥ १० ॥
सुरत धारेँ गुरु रंग ।
चढ़ें घट होय ि ॥ ११ ॥
गुरू मो पे ापहि किरपा की ।
रत में प्रीत शब्द धर दीन ॥ १२ ॥
ोट मु उन गुन गा ।
रन में हित चित से धा ॥ १३ ॥
रूप राधास्वामी ि त्त ब ा ।
गा रत उ ग ॥ १४ ॥
लेव राधास्वामी मोहिँ पना ।
दा यह बिनय रे सिर ना ॥ १५ ॥

॥ शब्द ११४ ॥

राधास्वामी चित धरता ।
प्रे की ी नित पढ़ता ॥ १ ॥
चित्त से सतसँग नित रता ।
ध्यान गुरु दरशन धरता ॥ २ ॥
बचन गुरु समझ मझ गुनता ।
शब्द उमंग उमंग सुनता ॥ ३ ॥
कर और भरम ले गनी ।
हार कर बैठ रही ठगनी ॥ ४ ॥
छोड़ रहा ठाड़ा ।
करम डाल दि या झाड़ा ॥ ५ ॥
नाम राधास्वामी हिये धारा ।
दूत घर पड़ गया ब धाड़ा ॥ ६ ॥
रत ौर ब्द लिया मत सार ।
धुनन ँग रता नित्त बिहार ॥ ७ ॥
सरन गुरु हिरदे धार लई ।
सुरत मन नि र शब्द गही ॥ ८ ॥
चरन गुरु गुन गाऊँ दम दम ।
सीँ रस ि त रहूँ हर दम ॥ ९ ॥

दया गुरू क्या महिमा हना।
रन गह वि र ना ॥ १० ॥
उमंग न गुरू र गाता।
रन रा स्वामी हिये ध्याता ॥ ११ ॥

॥ ब्द ११५ ॥

बढ़ी मेरी गुरू रनन परतीत।
गा निस दि राधास्वा ी गी ॥१॥
ीत ी धारा रहे जारी।
लगी गुरू ी अ प्यारी ॥ २ ॥
ब नित त गियन से हेत।
करत रहूँ सेवा भाव मेत ॥ ३ ॥
जगत जिव बहु बिध मझाता।
भक्ति गुरू हिमा जतलाता ॥ ४ ॥
शब्द बि होय न पूरा ा।
धार लो मन में राधा ामी ना ॥ ५ ॥
ाल ने बहु चक्कर घाले।
बिघन मेरी भक्ती में डाले ॥ ६ ॥
सरन राधा ी हियरे धार।
बिघन ब उसके दीने टार ॥ ७ ॥

भरोसा राधास्वामी चित में र ।
 नाऊँ राधास्वामी महिमा भाख ॥ ८ ॥
लिया मोहिं राधास्वामी ाप म्हाल ।
सरन दे कीन मोर प्रतिपाल ॥ ९ ॥
मेरे मन स निश्चय होई ।
गुरू बिन नहिं दूसर ोई ॥ १० ॥
रैं जो दु मैं ान सहाय ।
कलह से लेवें तुरत बचाय ॥ ११ ॥
मेरे मन गुरू परतीत ब ी ।
रन गुरू सूरत आन रसी ॥ १२ ॥
लिया सतसँग में आप मिलाय ।
बचन गुरू त चित्त माय ॥ १३ ॥
मेहर ई जागा ोता भाग ।
रत न तर में रहे लाग ॥ १४ ॥
ँग ँग आरत धारूँ नित्त ।
रन में राधास्वामी रा ूँ चित्त ॥ १५ ॥

॥ शब्द ११६ ॥

त महिमाँ सुनत अपार ।
ला रहा चरनन में निज ार ॥ १ ॥

गम न जाने कोय ।
गए सब रमन संग ि ोय ॥ २ ॥
भरम में भूल रहा ार ।
भेद नहीं पावे सत रतार ॥ ३ ॥
पता मोहिं मिलिया राधास्वामी धा ।
भाव सँग ड़ा राधा ा ीना ॥४॥
पढ़त गुरु बानी जागी प्री ।
बिरह दरशन ी ली ी ॥ ५॥
मेहर हुइ चरनन या ।
हजही गुरु दरशन पा ा ॥ ६ ॥
देख गुरु संगत हुलसा ा ।
बचन गुरु मृत बर ाया ॥ ७ ॥
सुरत मन भीज रहे गुरु रंग ।
हूँ क्या गत मत र संग ॥ ८ ॥
प्रेम की धारा उमँ रही ।
चरन गुरु दृढ़ कर पकड़ लई ॥ ९ ॥
बचन सुन अस निश्चय धारा ।
संत बिन नहिं जिव निस्तारा ॥ १० ॥
सुरत और ब्द ारा ।
मलाई गुरु मोहिं कर प्यारा ॥ ११ ॥

भेद निज घर का समझाया ।
देस संतन का लखवाया ॥१२॥
जगत का कारज थोथा जान ।
भोग सब इंद्री रोग समान ॥१३॥
समझ गुरु बचन धार बैराग ।
बढ़ावो चरनन में अनुराग ॥ १४ ॥
चलो घर पकड़ शब्द की धार ।
अमरपुर तीन लोक के पार ॥ १५ ॥
मेहर हुई बिरह शब्द जागी ।
सुरत मन धुन रस में पागी ॥ १६ ॥
करूँ मैं नित अभ्यास सम्हार ।
चढ़ाऊँ सूरत उलटी धार ॥ १७ ॥
होंय जब राधास्वामी गुरू दयाल ।
तोड़ तिल देखूँ जोत जमाल ॥ १८ ॥
बंक धस त्रिकुटी चढ़ जाऊँ ।
शब्द गुरु दरशन वहाँ पाऊँ ॥ १९ ॥
सुन्न चढ़ मानसरोवर न्हाय ।
देऊँ सब कल मल दूर बहाय ॥ २० ॥
महासुन घाटी चढ़ भागूँ ।
भँवर धुन मुरली सँग पागूँ ॥ २१ ॥

अमर पुर दरशन सत पुरुष पाय ।
अलख और अगम में पहुँची धाय ॥ २२ ॥
चरन राधास्वामी निरखूँ सार ।
करूँ वहाँ आरत उमँग सम्हार ॥ २३ ॥
कौन यह पावे धुर पद सार ।
करी मोपै राधास्वामी दया अपार ॥ २४ ॥
रहे थक सब मत रसते माहिं ।
पाई मैं राधास्वामी चरनन छाँह ॥ २५ ॥
करे कोइ जतन अनेक सम्हार ।
न पावे संतन का पद सार ॥ २६ ॥
बनाया राधास्वामी मेरा काज ।
दया मोपै कीनी पूरन आज ॥ २७ ॥

॥ शब्द ११७ ॥

करूँ क्या गुरु महिमाँ बरनन ।
सुरत मेरी लाग रही चरनन ॥ १ ॥
दूर मैं रहती सतसँग से ।
सुरत मेरी रँग रही गुरु रँग से ॥ २ ॥
नाम गुरु मन में जपत रहूँ ।
दरश गुरु घट में चहत रहूँ ॥ ३ ॥

मेहर बिन क्या मोसे बन आय।
रहूँ ‍ ‍ ि राधास्वामी गुन गाय॥ ४॥
जीव सब भूल रहे मैं।
ट रहे कर भरमन मैं॥ ५॥
क़दर परमारथ नहिं जानैं।
प्रीत मन माया सँग ठानैं॥ ६॥
काल ने पनी छाया डाल।
फाँस लिया इन को माया जाल॥ ७॥
गुरू ब मृत बचन सुनाय।
ल से लीजे बेग बचाय॥ ८॥
संग से उनके होवत हान।
दीजिये उन ो भी कु ान॥ ९॥
चरन मैं गुरु के लागैं आय।
भाव भय परमारथ का लाय॥ १०॥
सुनो मेरी बिनती गुरू दातार।
लीजिये जग जीव बेग म्हार॥ ११॥
प्रेम की मु को दीजे दात।
रहूँ मैं नि दिन चरन समात॥ १२॥
चरन गुरु धार रहूँ उर ।
ब्द धुन नत रहूँ सुर मैं॥ १३॥

चरन में होवे दृढ़ परतीत ।
बढ़त रहे निस दिन हिरदे प्रीत ॥ १४ ॥
मगन रहूँ जब तब दरशन पाय ।
उमँग मेरे हिरदे रही समाय ॥ १५ ॥
प्रेम सँग आरत राधास्वामी धार ।
चरन पर डालूँ तन मन वार ॥ १६ ॥
दया मोपै राधास्वामी करी बनाय ।
मेहर से लीना मोहिँ अपनाय ॥ १७ ॥

॥ शब्द ११८ ॥

ख़बर मैं गुरु संगत की पाय ।
मगन हुआ आनंद उर न समाय ॥ १ ॥
भेद गुरु मत का वोहीं लीन ।
हुआ मन चरन सरन आधीन ॥ २ ॥
करत निस दिन अभ्यास सम्हार ।
दया राधास्वामी परखी सार ॥ ३ ॥
देख निज घट मैं परम बिलास ।
हिये मैं बढ़ता अजब हुलास ॥ ४ ॥
तड़प गुरु दरशन की उठती ।
सुरत गुरु चरनन मैं बसती ॥ ५ ॥

मौज से अस औसर पाया ।
धावता गुरु चरनन आया ॥ ६ ॥
देख गुरु संगत बाढ़ा प्यार ।
सुनत गुरु बचन तजा हंकार ॥ ७ ॥
दीन होय कीना गुरु सँग मेल्ल ।
काल के बिघन निकारे पेल ॥ ८ ॥
सुरत मन निस दिन रस पीते ।
करम और भरम रहे रीते ॥ ९ ॥
भोग सब हो गए अब बेकार ।
हुआ मन चरनन पर बलिहार ॥ १० ॥
समझ में आई भक्ती रीत ।
बढ़ी अब मन में गुरु की प्रीत ॥ ११ ॥
हुई चरनन में दृढ़ परतीत ।
जाऊँ अब निज घर भौजल जीत ॥१२॥
शब्द की महिमाँ जानी सार ।
लगा अब फीका जग ब्योहार ॥ १३ ॥
हुआ अब मन में स बिस्वास ।
शब्द बिन होय न घट उजियास ॥१४॥
समझ अस धार रहूँ मन में ।
शब्द रस पियत रहूँ तन में ॥ १५ ॥

चढ़ाऊँ सूरत उलटी धार ।
फोड़ नभ निरखूँ जोत उजार ॥ १६ ॥
दया गुरु चढ़ूँ गगन को धाय ।
सगम रहुँ गुरु पद दरशन पाय ॥ १७ ॥
वहाँ से पहुँचूँ दसवें द्वार ।
सुनूँ धुन किंगरी सारँग सार ॥ १८ ॥
गुफा चढ़ पहुँचूँ सतगुरु धाम ।
बीन जहाँ बजती आठौं जाम ॥ १९ ॥
निरख फिर अलख पुरुष का रूप ।
परसती अगम पुरुष कुल भूप ॥ २० ॥
चरन राधास्वामी परसूँ धाय ।
आरती गाऊँ प्रेम जगाय ॥ २१ ॥
दिया राधास्वामी यह सब साज ।
किया मेरा राधास्वामी पूरन काज ॥२२॥

॥ शब्द ११९ ॥

सुना मैं जब से गुरु संदेस ।
तजा मन करम धरम का लेस ॥ १ ॥
बचन मोहिं लागे अति प्यारे ।
मनन कर उनको चित धारे ॥ २ ॥

भरम और संसय हो गए दूर ।
परखिया जग परमारथ कूड़ ॥ ३ ॥
उमँग मन गुरु जुगती धारी ।
सुरत और शब्द भेद भारी ॥ ४ ॥
बहत रहा काम लोभ की धार ।
तजे अब मन ने सभी बिकार ॥ ५ ॥
सुनत राधास्वामी महिमाँ सार ।
लगा उन चरनन से अति प्यार ॥ ६ ॥
दीन दिल गुरुमत को धारा ।
नाम गुरु कीना आधारा ॥ ७ ॥
रहूँ नित गुरु की जुगत कमाय ।
चरन गुरु दिन दिन प्रीत बढ़ाय ॥ ८ ॥
निरख रहा निस दिन राधास्वामी मेहर ।
मिटा अब काल करम का क़हर ॥ ९ ॥
प्रेम मेरे हिरदे जाग रहा ।
चरन में मनुआँ लाग रहा ॥ १० ॥
सुनत रहा घट में धुन झनकार ।
दरश गुरु झाँक रहा नभ द्वार ॥ ११ ॥
जगत का फीका लागा रंग
हुए मन माया दोनों तंग ॥ १२ ॥

लगा दुख दाई जग व्योहार ।
दरश गुरू चहत रहूँ हर बार ॥ १३ ॥
सेव गुरू मन में अति भाई ।
जगत की किरत तजन चाही ।
चहत रहूँ निस दिन गुरु का संग ॥ १४ ॥
करूँ गुरू आरत उमँग उमंग ।
सरन राधास्वामी हिरदे धार ॥ १५ ॥
भजत रहुँ निस दिन नाम अपार ।
गुरू मोपे अस किरपा कीजे ॥ १६ ॥
दरश मोहिँ घट में नित दीजे ।
प्रेम मेरे हिरदे बाढ़े नित्त ॥ १७ ॥
चरन में लाग रहे मम चित्त ।
मेहर से तुम ही जगाया भाग ॥ १८ ॥
देवो मोहिँ हित कर दृढ़ अनुराग ।
गाऊँ नित राधास्वामी महिमाँ सार ॥ १९ ॥
जाऊँ नित राधास्वामी के बलिहार ॥ २० ॥

॥ शब्द १२० ॥

सुनी मैं जब से गुरू महिमाँ ।
धार लई मन में गुरू सरना ॥ १ ॥

नाम गुरु सुमिरूँ मैं निस बा ।
धार ब चरनन मैं बिस्वा ॥ २ ॥
रूप गुरु ध्यान लगाय रहूँ ।
चरन गुरु चित से सेव रहूँ ॥ ३ ॥
बढ़त मन दरशन ी भिला ।
दया गुरु रहूँ भरो ा राख ॥ ४ ॥
मेहर से सन्मुख ाई धाय ।
हिये में अति ानंद समाय ॥ ५ ॥
निरख बि मनुआँ मोह रहा ।
काल भी झुर र सोय रहा ॥ ६ ॥
नैन दोउ लागे दृष्टी जोड़ ।
सुनत रही सूरत घट मैं शोर ॥ ७ ॥
सुद्ध बुध तन ी दई बिसार ।
लगा गुरु चरनन से ति प्यार ॥ ८ ॥
मेहर से गुरु ने दीना भेद ।
सुरत अब निज पद धरी उमेद ॥ ९ ॥
रत नित सत ग ाटे भर्म ।
ोड़ दिये मन ने कर्म और धर्म ॥ १० ॥
बचन सुन लई परतीत सम्हार ।
प्रेम का खुला नया भंडार ॥ ११ ॥

नित्त रहूँ गावत गुरु गुन सार ।
करी उन मुझ पर दया अपार ॥ १२ ॥
रही मैं जग में नीच निकाम ।
मेहर से दीना गुरु निज नाम ॥ १३ ॥
उमँग अँग आरत लई सम्हार ।
मेहर की दई गुरु दृष्टी डार ॥ १४ ॥
हुआ मोहिं राधास्वामी नाम अधार ।
अमी रस पीती रहूँ हर बार ॥ १५ ॥

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	८	रा	री
१६	८	माहिँ	माहीँ
२०	१८	हेराई	हिराई
२२	१३	ने	नैक
२६	१५	राधा ामी	राधास्वामी
३७	१६	ख़ोफ़	ख़ौफ़
३८	२	गोते	ग़ोते
३८	६	हिय	हिये
३९	१०	बन	बिन
३९	१०	२२	२१
४०	२	नरबल	निरबल
४०	३	भक्त	भ
४०	५	नत	नित
४०	१०	हय	हिय
४८	१२	ओर	ौर
५२	१७व१८	ोइ	कोई
६८	१७	उजीयारा	उजियारा
७१	४	नए	नए २
७६	४	पाऊँ	पीऊँ

पृष्ट	पंक्ति	शुद्ध	शुद्ध
७७	१५	सम्हारसम्हार	सम्हार सम्हार
७९	१०	रत	करे
७९	११	सम्हार	सम्हार
७९	१४	प्रीत	प्रति
८५	१	दए	दीए
८७	१२	रो	करी
८९	१३	४	५
९१	७	रूँ	करूँ
९१	९	जिन	जिया
९६	१४	दरश	दरशन
९७	६	ब	अस
११२	१२	तुम्हारा	तुम्हारा
१२६	१	तुम्हारी	तुम्हारी
१३५	१९	७	६
१५९	६	जगाया	गजाया
१७५	२	पाए	पाए
१९३	९	राधास्वामी	राधास्वामी
२०४	१०	ज्ञा	अज्ञा
२०४	१२	लगैं	लागैं

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०६	१९	आलंबा	आलंभा
२४०	३	जब	ब
२४५	१०	निखा	निरखा
२५२	१४	दीमा	दीना
२५४	२	मैं	मैं
२५६	१	अरात	रत
२५९	८	हुई	हुइ
२६१	१९	का जबनाया	ज बनाया
२६८	४	ससारी	संसारी
२७०	१६	राधस्वामी	राधा मी
२७१	२	विघन	बिघन
२७७	१८	चौरसी	चौरासी
२७९	१	संग	संग
२८५	१२	दातारा	दातार
२८६	२	सतपुर	सत्तपुर
२८८	८	जाल	का जाल
२८८	१८	ससारी	संसारी
२९२	९	को	की
२९४	२	पहुँवी	पहुँची

पृष्ट	पंक्ति	शुद्ध	शुद्ध
३००	२	साधु	साध
३०१	७	नूय	अनूप
३०२	१४	सग	संग
३०९	६	भठका	भटका
३०९	१३	सतगरू	सतगुरू
३१०	१७	सुरत	सुरत
३१२	४	प्रात	प्रीत
३१२	९	जब	जग
३२८	१३	धावता	धावत ।
३२९	११	छड़	छोड़
३३०	१०	स्वामो	स्वामी
३३०	१६	लगतो	लगती
३३०	१७	मं	मैं
३३१	११	भैं	मैं
३३३	१४	च न	चरन
३३५	१८	छित्त	छिन्न
३३६	२	खिला	खिली
३३६	१६	चाँदनो	चाँदनी
३४७	३	घटा	घंटा

पृष्ट	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३५०	१८	बार	वार
३५९	९	प	प हूँ
३६०	१२	पुरष	पुरुष
३६०	२०	५	२५
३६९	२०	चर परनन	चरनन पर
३७२	८	यिज	निज
३७३	१३	ध्यन	ध्यान
३७३	१४	ाना	ान
३७५	२	चरज	चरज रस
३७६	६	छाँ	झाँ
३८०	१९	दीनो	दीनी
३८८	१	घटा	घंटा
३८९	१४	गु	मैं
३८९	१५	रूँ मैं	करूँ
३९१	१४	मं	
३९२	१	दृष्ी	दृष्टी
३९९	१३	नूँ	नो
४०४	१६	ाधर	धार
४०६	९	ध्या.	

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४१५	१२	रखी	रही
४१५	१७	अब	अब
४१८	१६	भनकार	घनकार
४२२	१२	रह्मी	रहा
४२५	११	ढिया	ढिया
४२५	१६	दम	दस
४२६	२	सगस	सगत
४२८	११	सगत	संगत
४३१	५	जासें	जालें

शुद्धाशुद्ध पत्र सूचीपत्र का

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	२	घठी	छठी
४	६	३४१	३४६
४	१२	२६६	२६६